

संधान

षष्ठम् अंक : वर्ष 2025-26



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-द्वितीय)
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

उत्तर प्रदेश राज्य का राजकीय पक्षी 'सारस'

‘सारस’ का सामान्य नाम इस प्रजाति के हिंदी नाम से लिया गया है। यह हिंदी शब्द संस्कृत शब्द ‘सारस’ से लिया गया है, जिसका अर्थ ‘झील पक्षी’ होता है। जहाँ भारतीय इस प्रजाति का सम्मान करते थे, वहीं औपनिवेशिक भारत में ब्रिटिश सैनिक इस पक्षी का शिकार करते थे और इसे ‘सीरियस’ या ‘साइरस’ भी कहते थे। यह उत्तर प्रदेश राज्य का राजकीय पक्षी है। सारस क्रेन (ग्रस एंटिगोनी) दुनिया का सबसे ऊँचा उड़ने वाला पक्षी है और उत्तर प्रदेश सहित भारत के विभिन्न हिस्सों में आर्द्रभूमि और कृषि क्षेत्रों में पाया जाता है। ये क्षेत्र उनके लिए भोजन की तलाश, बसेरा बनाने और घोंसला बनाने के लिए उपयुक्त हैं। भारतीय सारस एक बड़ा गैर-प्रवासी सारस है, जो भारतीय उपमहाद्वीप, दक्षिण पूर्व एशिया और ऑस्ट्रेलिया के कुछ हिस्सों में पाया जाता है। ये पक्षी जंगली कंद, कीड़े, क्रस्टेशियंस और छोटे कशेरुकी शिकार के लिए दलदल और उथले आर्द्रभूमि पर चारे के लिए खोज करते हैं। इन्हें प्रणय निष्ठा का प्रतीक माना जाता है, ऐसा माना जाता है कि ये जीवन भर के लिए अपने एक साथी के संग ही रहते हैं। किसी कारणवश यदि इनके जोड़े में से किसी एक की मृत्यु हो जाती है तो वियोग में यह शोक मनाते हैं।

यह पक्षी उत्तरी और मध्य भारत, नेपाल और पाकिस्तान के तराई क्षेत्रों में पाया जाता है। कभी यह उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, पश्चिम बंगाल, गुजरात, मध्य प्रदेश और असम के धान के खेतों में आम था। अब इनकी संख्या निरंतर घट रही है और भारत में केवल 15,000-20,000 ही बचे हैं, जिनमें से अधिकांश उत्तर प्रदेश में हैं। सारस क्रेन मनुष्यों के साथ रहने की अपनी क्षमता के लिए जाना जाता है, और खुले, खेती योग्य, अच्छी तरह से पानी वाले मैदानों, दलदली भूमि और झीलों में निवास करता है। कृषि पद्धतियों के मशीनीकरण से कृषि भूमि पर पक्षियों के प्रजनन को खतरा हो रहा है। आर्द्रभूमियों के अत्यधिक मानवीय उपयोग के परिणामस्वरूप सारसों में पारिस्थितिकी व्यवधान की दर उच्च है और इनकी प्रजनन को काफी हद तक सीमित कर रही है। वास्तविक अवलोकनों से पता चलता है कि भारतीय उपमहाद्वीप में गिद्धों की संख्या में कमी के बाद कुत्तों द्वारा चूजों का शिकार और कौवों द्वारा अंडों का शिकार बढ़ रहा है।



संधान

षष्ठम् अंक : वर्ष 2025-26



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-द्वितीय)
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

संधान परिवार

प्रकाशन
विभागीय राजभाषा हिन्दी
गृह-पत्रिका
'संधान' (अर्द्धवार्षिक)

प्रकाशक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II),
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

मूल्य
राजभाषा के प्रति निष्ठा

मुख्य संरक्षक
(पदेन-वरिष्ठता के आधार पर)
श्री राजीव कुमार पाण्डेय
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II),
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

संरक्षक
श्री संजय कुमार
प्रधान निदेशक, लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ
कार्यकारी संपादक
श्री ऊदल सिंह सोलंकी,
सहायक निदेशक, (राजभाषा),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II), उत्तर प्रदेश, लखनऊ

संपादक मण्डल
श्री ऊदल सिंह सोलंकी, सहायक निदेशक (रा.भा.)
श्री सुनील कुमार पाण्डेय, व. लेखापरीक्षा अधिकारी
श्रीमती ज्योति दीक्षित, सहायक निदेशक (रा.भा.),
श्री ई.ए.पी.एस. शास्त्री, व. लेखापरीक्षा अधिकारी
श्रीमती वासवी मिश्रा, कनिष्ठ अनुवादक
श्रीमती रुचि जायसवाल, कनिष्ठ अनुवादक
श्री शशांक गौरव, कनिष्ठ अनुवादक

संधान का अर्थ - “लक्ष्य भेदन हेतु धनुष पर बाण चढ़ाना” अथवा “लक्ष्य भेदन हेतु निशाना लगाना”
है विभागीय पत्रिका का ये नाम हमारे विभाग के मुख्य कर्तव्य/लक्ष्य/उद्देश्य अर्थात् किसी तंत्र
(सिस्टम) की कमियों के अनुसंधान करने/उनको इंगित करने के अनुरूप भी है।

आवरण चित्र स्रोत - सारस-पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार की वेबसाइट

“ऑडिट भवन” लखनऊ स्थित कार्यालयों का विवरण

कार्यालय	अधीनस्थ शाखा कार्यालय	कार्य-क्षेत्र
कार्यालय प्रधान महालेखाकार, (लेखापरीक्षा- II), उत्तर प्रदेश, लखनऊ	पुनर्गठन के पश्चात् कार्यालय को चार समूहों में विभक्त किया गया है, ए .एम. जी.-I, II, III एवं IV	ए.एम.जी.-II, III एवं IV जिसके अन्तर्गत उत्तर प्रदेश सरकार के विभिन्न विभागों एवं उनके अधीनस्थ सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों तथा स्वायत्त निकायों की लेखापरीक्षा तथा उत्तरप्रदेश सरकार की राजस्व प्राप्तियों की लेखापरीक्षा।
	शाखा कार्यालय प्रयागराज	ए.एम.जी.-I जिसके द्वारा लोक निर्माण विभाग, वन विभाग तथा इसके अधीनस्थ सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों की लेखापरीक्षा।
कार्यालय प्रधान निदेशक, लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ, उत्तरप्रदेश	अप्रत्यक्ष कर शाखा कार्यालय लखनऊ	उत्तरप्रदेश एवं उत्तराखण्ड में वस्तु एवं सेवा कर (केन्द्रीय सरकार) की लेखापरीक्षा।
	प्रत्यक्ष कर शाखा कार्यालय प्रयागराज	उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड में प्रत्यक्ष कर (केन्द्रीय) की लेखापरीक्षा।
	केन्द्रीय व्यय शाखा कार्यालय प्रयागराज	उत्तरप्रदेश एवं उत्तराखण्ड स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों एवं स्वायत्त निकायों के व्ययों की लेखापरीक्षा।
	शाखा कार्यालय, बिहार, पटना	बिहार राज्य में वस्तु एवं सेवा कर (केन्द्रीय कार्यालय), प्रत्यक्ष कर (केन्द्रीय) एवं केंद्र सरकार के कार्यालयों एवं स्वायत्त निकायों के व्ययों की लेखापरीक्षा।
	शाखा कार्यालय- राँची (झारखंड)	झारखंड राज्य में वस्तु एवं सेवा कर (केन्द्रीय कार्यालय), प्रत्यक्ष कर (केन्द्रीय) एवं केंद्र सरकार के कार्यालयों एवं स्वायत्त निकायों के व्ययों की लेखापरीक्षा।
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित्त एवं संचार), दिल्ली शाखा कार्यालय लखनऊ	इसका मुख्य कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, (वित्त एवं संचार), दिल्ली है।	उत्तरप्रदेश और उत्तराखण्ड में स्थित मुख्यतः वित्त एवं संचार विभाग के राजस्व एवं प्राप्तियों, एन.आई.सी. व यू.आई.डी.ए.आई. के लेखाओं की लेखापरीक्षा।
वरिष्ठ लेखा अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी- II), उत्तर प्रदेश, शाखा कार्यालय लखनऊ	इसका मुख्य कार्यालय महालेखाकार (लेखा हकदारी- II), उत्तर प्रदेश, प्रयागराज है।	लेखा निर्माण के लेखाओं का संकलन और विशेष मुद्रा प्राधिकार-पत्र को निर्गत करने का एवं सम्बन्धित कार्य।

अस्वीकरण (डिसक्लेमर)

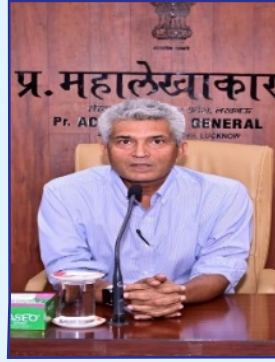
इस अंक में लेखकों/रचनाकारों द्वारा व्यक्त किंउ गउ विचार उनके अपने हैं। संपादक मण्डल का उनसे सहमत होना या असहमत होना आवश्यक नहीं है। विचारों एवं लेखन की मौलिकता संबंधी जिम्मेदारी स्वयं रचनाकार की है। रचना/आलेखों के सम्पादन एवं प्रकाशन संबंधी सर्वाधिकार सम्पादक मण्डल में निहित होंगे।

अनुक्रमणिका

शीर्षक	रचना का शीर्षक	पृष्ठ संख्या
<ul style="list-style-type: none"> शुभकामना संदेश सम्पादकीय 		
सनातन हिन्दू धर्म में प्रयुक्त पंच (पाँच) की अवधारणा	ऊदल सिंह सोलंकी, सहायक निदेशक (राजभाषा)	1-3
प्राचीन लेखापरीक्षकों की झाँकी	प्रशांत कुमार श्रेष्ठ, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	4-5
घुमक्कड़ी यात्रा	सुनील कुमार पाण्डेय,	
लखनऊ-झाँसी-ओरछा-दतिया	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	6-11
मेरी बीकानेर और जैसलमेर की सुनहरी यादें	अरविंद कुमार जायसवाल,	
	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	12-13
जंगल सफारी की रोमांचक यात्रा	दीपक श्रीवास्तव, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	14-15
शिव के चरणों में चार दिन: उज्जैन एवं		
ओंकारेश्वर यात्रा की आत्मिक अनुभूति	आशीष कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	16-17
कुम्भ मेला	अवधेश कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	18
ऑफिसनामा	प्रशांत कुमार श्रेष्ठ, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	19-20
बच्चों का सकारात्मक पालन-पोषण	रुचि जायसवाल, कनिष्ठ अनुवादक	21-22
सिंगापुर: एक नवोन्मेषी देश	शशांक गौरव, कनिष्ठ अनुवादक	23-24
आर्टिफिशियल इंटेलिजेन्स	रेनू श्रीवास्तव, वैयक्तिक सहायक	25
दिल्ली की भूली हुई धरोहर	रेनू श्रीवास्तव, वैयक्तिक सहायक	26
बेटियाँ तो बेटियाँ होती हैं	प्रभाकर श्रीवास्तव, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	27
चाय की चुस्की	मोहम्मद इमरान खान, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	28
तलाश	पंकज मोहन जायसवाल, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	29
ट्रेन का जनरल डिब्बा नंबर: 1	शोएब अहमद, लेखापरीक्षक	30
मोबाइल नोटिफिकेशन और पढ़ाई	शोएब अहमद, लेखापरीक्षक	31
देश सेवा	अनामिका गुप्ता सुपुत्री श्री गोविन्द लाल,	
	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	32
खिलाड़ी पापा	अरविन्द कुमार श्रीवास्तव, लेखापरीक्षक	33
वृक्षारोपण: आवश्यकता या मजबूरी	मोहित सेठ, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	34-35
समय: वर्तमान या भविष्य	अभिषेक मीणा, लेखापरीक्षक	36-37
कार्यालयीन विशिष्ट उपलब्धियाँ		38
मुश्किल होता है	ज्योति दीक्षित, सहायक निदेशक (राजभाषा)	39

मुक्तक	लीना दरियाल, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	40
हाँ, मैं बिहारी हूँ	राम जनम राय, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	41
श्रद्धांजलि	राम जनम राय, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	41
जिंदगी	दीपक कुमार तिवारी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	42
चाहत	जितेन्द्र कुमार गंगवार (जय), वरिष्ठ लेखापरीक्षक	42
प्रेरणा	प्रीति श्रीवास्तवा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	43
गज़ल	आशीष कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	43
प्रहरी कैग (राष्ट्रधर्म के रक्षक को समर्पित)	प्रशांत कुमार श्रेष्ठ, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	44
दुनिया की भलाई की खातिर, सब तुमको गँवारा बापू था	संकलनकर्ता: विजय श्रीवास्तव, लेखापरीक्षक	45
मेरी प्यारी हिन्दी	मोहित सेठ, लेखापरीक्षक	45
सपने	अनामिका गुप्ता सुपुत्री श्री गोविन्द लाल, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	46
गुरु	समृद्धि कानोडिया सुपुत्री श्री प्रवीन कानोडिया, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	46
राजभाषा संबंधी प्रमुख प्रावधान		47-48
कार्यालयीन गतिविधियों की झलकियाँ		49-55

मुख्य संरक्षक के आशीर्वचन



यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि ऑडिट भवन में स्थित हमारे समस्त कार्यालयों की संयुक्त हिंदी गृह पत्रिका “संधान” के षष्ठम् अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। वस्तुतः, हिन्दी पत्रिकाओं के प्रकाशन का प्रयोजन न केवल कार्यालय के कार्मिकों के साहित्यिक एवं लेखन कौशल को अभिव्यक्त एवं विकसित करना है, अपितु उन्हें इसके लिए एक सशक्त और उत्कृष्ट मंच भी प्रदान करना है।

हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार और भारत सरकार की राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन को प्रोत्साहित करने में हिन्दी पत्रिकाओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है।

कार्यालयीन कार्यों और निजी जीवन के व्यस्ततम क्षणों में से कुछ समय निकालकर पदाधिकारियों ने जिस श्रम और उत्साह से अपनी रचनात्मक प्रतिभा का परिचय दिया है, वह अति उत्तम है।

इस पत्रिका में सम्मिलित रचनाओं की विधाओं में विविधता की छटा भी अद्भुत बन पड़ी है। संपादक मंडल ने भी अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन बड़ी सजगता से किया है जोकि प्रशंसनीय है। आपके सुझावों और प्रतिक्रियाओं की अपेक्षाओं के साथ यह अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत है। अग्रेतर, आशा है कि कार्यालय के सुधी कार्मिक आगे भी इसी प्रकार नवीन लेखों के माध्यम से पत्रिका में अपना अप्रतिम योगदान प्रदान करते रहेंगे और पत्रिका को और अधिक सामयिक, उत्कृष्ट और ज्ञानवर्धक बनाने हेतु सदैव तत्पर रहेंगे।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य एवं शुभकामनाओं सहित।

(राजीव कुमार पाण्डेय)

प्रधान महालेखाकार

(लेखापरीक्षा-II), उत्तर प्रदेश, लखनऊ

संदेश



मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि हमारे कार्यालय की विभागीय राजभाषा पत्रिका “संधान” का छठवां संयुक्तांक प्रकाशित होने जा रहा है। वास्तव में कार्यालय-पत्रिकाओं का प्रमुख उद्देश्य कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के साथ ही राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को प्रोत्साहित करना है। हमारे कार्यालय की पत्रिका का सफल प्रकाशन इसी दिशा में समर्पित एवं लक्ष्यनिष्ठ प्रयास है।

यह पत्रिका मात्र एक प्रकाशन नहीं, बल्कि हमारे भीतर छिपी रचनात्मक ऊर्जा और राजभाषा हिंदी के प्रति हमारे गहन समर्पण का प्रतीक है। पत्रिकाएं भाषा को सशक्त बनाने का एक अनूठा माध्यम हैं। वे विचारों की अभिव्यक्ति का मंच बनकर हमें एक सूत्र में पिरोती हैं और हमारी सांस्कृतिक पहचान को और भी प्रगाढ़ बनाती हैं।

हमारा यह सामूहिक प्रयास है कि हम राजभाषा हिंदी को न केवल एक भाषा के रूप में, बल्कि अपने दैनिक व्यवहार का अभिन्न अंग बना सकें। यह हमारा कर्तव्य है कि हम कार्यालय द्वारा निर्धारित राजभाषा लक्ष्यों को पूर्ण निष्ठा और तत्परता के साथ प्राप्त करें।

“संधान” पत्रिका के सफल प्रकाशन पर पत्रिका-परिवार को हृदय से बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति तथा स्वर्णिम भविष्य हेतु शुभकामना देता हूँ।

संजय कुमार

प्रधान निदेशक
लेखापरीक्षा (केन्द्रीय),
लखनऊ

संदेश



यह अति प्रसन्नता का विषय है कि हम हमारी विभागीय संयुक्त हिंदी गृह पत्रिका “संधान” का छठवां अंक प्रकाशित कर रहे हैं। मनुष्य के विचारों और अनुभवों का बोध कराने में मातृभाषा की महती भूमिका होती है, क्योंकि इसके द्वारा हम अपने भावों को प्राकृतिक रूप से अभिव्यक्त कर पाने में सक्षम हो पाते हैं।

इस प्रकार के प्रकाशनों से कार्यालय के कार्मिकों को अपने विचारों की रचनात्मक अभिव्यक्ति हेतु एक प्रभावशाली मंच मिलता है। मैं पत्रिका के सफल संपादन हेतु सभी रचनाकारों एवं संपादन मण्डल को बधाई देता हूँ।

अग्रेतर, आप सभी से यह आग्रह भी करता हूँ कि आप इसी प्रकार हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार एवं प्रयोग में अपना बहुमूल्य योगदान प्रदान करते रहेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपके अथक प्रयासों एवं उत्साह से यह पत्रिका आगे भी इसी प्रकार प्रकाशित की जाती रहेगी एवं हर बार नवीन विषयों पर लेखों सहित अपने नये एवं उत्कृष्ट कलेवर में विकसित होगी।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

(पंकज वर्मा)
वरिष्ठ उप महालेखाकार
(प्रशासन)

संदेश



संयुक्त हिंदी गृह पत्रिका “संधान” के 6वें अंक के सफल प्रकाशन पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। इस पत्रिका ने निरंतर उत्कृष्ट सामग्री प्रस्तुत कर हिंदी भाषा के विकास, ज्ञान और सामाजिक-सांस्कृतिक विस्तार में अपना योगदान दिया है।

हमें आशा ही नहीं, अपितु पूर्ण विश्वास है कि इस पत्रिका का षष्ठम अंक भी हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में नये आयाम स्थापित करेगा और पाठकों को प्रेरणा एवं ज्ञान से समृद्ध करेगा। रचनाओं का यह उत्कृष्ट संकलन ऑडिट भवन में स्थित सभी कार्यालयों की रचनात्मक प्रतिभा का दर्पण एवं उनके अथक प्रयासों का सार्थक परिणाम है।

कार्यालय की ओर से पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु सम्पादक मण्डल को बधाई व पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

(विभा सिंह)

उपनिदेशक

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(वित्त एवं संचार), दिल्ली
शाखा कार्यालय लखनऊ,
उत्तर प्रदेश

संपादकीय



राजभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना न केवल हम सभी का परम कर्तव्य है, अपितु संवैधानिक उत्तरदायित्व भी है। इसी अनुक्रम में, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-द्वितीय), लखनऊ, उत्तर प्रदेश तथा कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ तथा कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (वित्त एवं संचार), दिल्ली शाखा कार्यालय लखनऊ की संयुक्त हिन्दी गृह-पत्रिका ‘संधान’ का षष्ठम् अंक (सितंबर 2025) आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष और प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

‘संधान’ पत्रिका का आवरण पृष्ठ राज्य की सांस्कृतिक विरासत, प्राकृतिक सौन्दर्य की झलकियाँ प्रदर्शित करता है। पत्रिका के इस अंक में कार्यालय के सदस्यों ने उत्साहपूर्वक अपने स्वरचित व मौलिक अनुभवों, संस्मरणों, यात्रावृत्तांतों, विभिन्न ज्ञानवर्धक लेखों एवं कविताओं के माध्यम से प्रशंसनीय और उल्लेखनीय योगदान प्रदान किया है जिससे उनके लेखन कौशल की सार्थक अभिव्यक्ति हो पायी है।

पत्रिका में एक ओर जहाँ विचारों की सहज और सुन्दर अभिव्यक्तियों से युक्त रचनायें हैं तो वहीं दूसरी ओर मुश्किल होता है, मुक्तक, हाँ, मैं बिहारी हूँ, गजल, प्रहरी इत्यादि पद्यखण्ड में भावों का निश्छल एवं सजीव चित्रण दृष्टव्य है जोकि अतीव श्लाघ्य है। जहाँ ‘ऑफिसनामा’ कल्पना के धरातल पर उकेरी गयी कार्यालय की वास्तविकता को प्रकट करने वाली हास्य व्यंग्य युक्त कहानी अति सुन्दर बन पड़ी है, वहीं ‘प्राचीन लेखापरीक्षकों की झाँकी’ नामक लेख लेखापरीक्षा के क्रमिक इतिवृत्त का चित्रण है। पत्रिका के इस अंक में सम्मिलित घुमक्कड़ी यात्रा नामक यात्रावृत्तांत लखनऊ से झाँसी और ओरछा होते हुए दतिया की यात्रा के मोहक क्षण प्रस्तुत करता है, वहीं शिवजी की पावन नगरी उज्जैन और ओंकारेश्वर का वृत्तांत धार्मिक भावनाओं से ओतप्रोत है जोकि हृदय को आह्लादित करने वाला तथा भक्ति भावना से परिपूर्ण है।

इसके अतिरिक्त, सिंगापुर के नवोन्मेषी चित्रण की सुन्दर छटा सहित कई तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी से संबंधित लेखों ने पत्रिका को सुशोभित करने का कार्य किया है। देश सेवा, खिलाड़ी पापा जैसे लेख अनायास ही कुछ अच्छा करने के लिए मन को प्रेरित करते हैं।

कार्यकारी संपादक सहित, संपादक मण्डल तीनों ही कार्यालयों के सदस्यों का आह्वान करते हैं कि वे भविष्य में पत्रिका हेतु अधिकाधिक मौलिक रचनायें अनवरत् रूप से प्रदान करते रहें और आशा करते हैं कि आगामी ‘संधान’ पत्रिका के अंकों में विभिन्न नये-नये रचनाकार अपनी रचनाओं के माध्यम से इस पत्रिका को और अधिक ज्ञानवर्धक तथा प्रासंगिक एवं समकालीन बनाने हेतु अपनी भूमिका का निर्वहन करके राजभाषा के विकास में अपना अप्रतिम सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं सहित।

ऊदल सिंह सोलंकी,
सहायक निदेशक (राजभाषा)

सनातन हिन्दू धर्म में प्रयुक्त पंच (पाँच) की अवधारणा

भारतीय संस्कृति धर्म, विश्वास, आस्था और श्रद्धा का विश्व में सर्वश्रेष्ठ तथा अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करती है जो अन्यत्र अति दुर्लभ है। यहाँ प्रत्येक वस्तु, स्थान, भाव, जीव एवं निर्जीव इत्यादि सभी को आध्यात्मिक दृष्टिकोण से देखने का दर्शन विकसित हुआ है। हमारी संस्कृति में नदी, वन, पर्वत, ग्रह, नक्षत्र, पशु, पक्षी व अन्य सभी जीव-निर्जीव इत्यादि सभी पूज्य माने जाते हैं जोकि भारतीय अध्यात्म का मूल तत्त्व है। हिन्दू धार्मिक प्रथाओं के भक्ति, पूजा, यज्ञ, ध्यान और योग, ये पाँच आधार स्तंभ सुप्रसिद्ध हैं। पंच परमेश्वर से तो हम सभी पूर्व से ही भली-भाँति परिचित हैं।

भारतीय ज्योतिष और अध्यात्म में अंक पाँच मनुष्य या जीव के निर्माण, कल्याण, उसके कर्म और धर्म इत्यादि में पूर्णतः अंतर्विष्ट है जिसका अत्यधिक महत्त्व है। ज्योतिष में अंक पाँच बुध ग्रह का प्रतिनिधित्व करता है जोकि बुद्धि एवं धन का प्रतीक है। इसके जातक प्रखर बुद्धि के स्वामी, अत्यंत निर्भीक और नवोन्मेषी विचारों से युक्त होते हैं।

पंचानन एवं पंचाक्षर महामंत्र: भगवान शिवजी को पंचानन के रूप में जाना जाता है अर्थात् पाँच मुख वाला। उनके ही पाँच मुख हैं, यथा: अघोर, सद्योजात, तत्पुरुष, वामदेव तथा ईशान। भगवान त्रिपुरारि का ही पंचाक्षर महामंत्र है, नमः शिवाय। यह मंत्र भगवान शिवजी को समर्पित है और उनका अतीव प्रिय मंत्र है। इसमें पाँच अक्षर हैं- न, मः, शि, वा, य। इसका अर्थ है कि हे शिवजी! मैं आपको नमस्कार करता हूँ।

पंचदेव: हिन्दू धार्मिक कर्मकाण्ड में किसी भी शुभ कार्य का आरंभ करने से पूर्व पंचदेवों की पूजा-अर्चना करने का विधान है। इन पाँच देवों में श्रीगणेश, सूर्य, विष्णु, शिव, दुर्गा सम्मिलित हैं। परंतु कुछ शास्त्रों में श्रीगणेश, सूर्य, विष्णु, शिव, ब्रह्मा को पंचदेव माना गया है। इन पंचदेवों को जल, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य (भोग) इत्यादि अर्पित करके इनका पूजन विधि-विधान से किया जाता है। पंचदेव ही पंचतत्त्वों के अधिष्ठाता के रूप में विद्यमान हैं। इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है- भगवान सूर्य- सूर्य को वायु तत्व का अधिष्ठाता माना जाता है। श्रीगणेश जी: ये प्रथम पूज्य देव हैं। जल तत्व के अधिष्ठाता हैं। दुर्गा माता- माँ आदिशक्ति, महिषासुर मर्दिनी दुर्गा माता अग्नि तत्व की अधिष्ठात्री देवी हैं। भगवान विष्णुजी- श्री हरि आकाश तत्व के अधिष्ठाता देव हैं और भगवान शिवजी- भोलेबाबा पृथ्वी तत्व के अधिष्ठाता देव हैं।

पंचतत्व- आकाश, वायु, तेज (अग्नि), जल और पृथिवी ये पंचभूत कहे गये हैं। इन्हीं पंच भूतों से जीव का निर्माण हुआ है। ये



ऊदल सिंह सोलंकी

सहायक निदेशक (राजभाषा),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II),
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

पाँच भूत क्रमशः शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध- इन गुणों से उत्तरोत्तर युक्त होते हैं। ये सभी गुण भिन्न-भिन्न प्रकार की शक्तियों से युक्त हैं, अतएव परस्पर पूर्णतया मिले बिना ये सृष्टि या रचना नहीं कर सकते।

पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ- कान, नेत्र, जिह्वा, नाक और त्वचा ये पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं। इनसे ही हमें शब्द, रूप, रस, गंध, स्पर्श आदि विषयों का ज्ञान होता है।

पाँच कर्मेन्द्रियाँ- पायु (गुदा), उपस्थ (लिङ्ग), हाथ, पाँव एवं वाक्-इन्द्रिय ये ही कर्मेन्द्रियाँ कहलाती हैं। विसर्ग (मल त्याग), आनंद (मैथुनजनित सुख), शिल्प (हाथ की कला), गमन तथा बोलना ये ही क्रमशः इन कर्मेन्द्रियों के पाँच कर्म कहे गये हैं।

पंचमकार- मुख्यतः साधना दो प्रकार की होती है- सात्विक और तामसिक। सात्विक साधना शुद्ध, शांत तथा ज्ञानवर्धक होती है जबकि तामसिक साधना अशुद्ध, आलस्य युक्त और अज्ञानता से भरी होती है। सात्विक साधना अति श्रेष्ठ है, क्योंकि यह व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास और मुक्ति में सहायक होती है। तामसिक साधना त्याज्य है, क्योंकि यह व्यक्ति को अज्ञानता और बंधनों में आबद्ध करती है। तामसिक या तांत्रिक साधना में 'पंचमकार' शब्द का प्रयोग होता है। यह पाँच पदार्थों को व्यक्त करता है। ये पाँच पदार्थ हैं- मद्य (शराब), मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन। कुछ वामाचार तांत्रिक इन पदार्थों का शाब्दिक अर्थों में ही प्रयोग करते हैं, वहीं दक्षिणाचार तांत्रिक इनका प्रतीकात्मक अर्थ ही ग्रहण करते हैं। इसके अतिरिक्त, अघोर पंथ में भी इस शब्द का प्रतीकात्मक अर्थों में प्रयोग प्ष्टव्य है।

पंचामृत- ठाकुरजी की सेवा में पंचामृत का अत्यधिक महत्त्व है। पंचामृत के बिना ठाकुर जी की सेवा अधूरी ही मानी जाती है। पंचामृत में दूध, दही, घृत, शहद, शक्कर आते हैं।

पंचगव्य- यह गाय के दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र से बना एक मिश्रण होता है।

पाँच चित्तावस्था- मनुष्य के चित्त की पाँच अवस्था मानी जाती हैं। ये हैं- क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र एवं निरुद्ध।

पंचक्लेश- अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश पंचक्लेश कहे गये हैं।

वर्ष के पाँच भेद- संवत्सर, परिवत्सर, इद्वत्सर, अनुवत्सर, युगवत्सर ये वर्ष के पाँच भेद होते हैं।

पाँचकाल- प्रातःकाल, संगवकाल, मध्याह्न काल, अपराह्न काल और सायंकाल।

कामदेव के पाँच बाण- मारण, स्तम्भन, जृम्भन, शोषण, उन्मादन (मन्मथ)।

पाँच अंगुलियाँ- व्यक्ति के हाथ और पांव भी पाँच अंगुलियों अँगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका से निर्मित हैं।

पंच पूजोपचार- ईश्वर की पूजा में गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य के प्रयोग से कौन परिचित नहीं है।

पंचकन्या- पंचकन्याओं का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है:

माता सीता: जनक की पुत्री माता सीता लक्ष्मी का साक्षात् अवतार एवं भगवान श्रीरामचन्द्र जी की पत्नी हैं। हिन्दू धर्म संस्कृति में त्याग, धैर्य, शील और पवित्रता की मूर्ति हैं।

अहिल्या: अहिल्या महान् ऋषि गौतम की पत्नी थी, जिन्हें श्राप एवं भगवान राम द्वारा मुक्ति की कथा से जाना जाता है।

द्रौपदी: महाभारत की प्रमुख पात्र तथा पाँच पाण्डवों की पत्नी थी। अत्यंत साहसी और नारी सम्मान की प्रतीक हैं तथा वासुदेव श्रीकृष्ण की परम भक्त थी।

तारा: वानरराज बाली की पत्नी थी, जिन्हें उनके विवेक एवं समर्पण हेतु जाना जाता है।

मंदोदरी: दशानन रावण की पत्नी जो अपने ज्ञान, समझदारी और पतिव्रता धर्म हेतु विख्यात हैं।

पाँच पाण्डव- हिन्दू महाकाव्य महाभारत के प्रमुख पात्र तथा राजा पाण्डु के पुत्र थे। पाँच पाण्डवों के नाम हैं- युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव।

पंच यज्ञ- श्री महर्षि वेदव्यास कृत “श्रीमद्भगवद्गीता” के अध्याय 18 के अनुसार पाँच यज्ञ बताये गये हैं- 1. देवयज्ञ (देवों के प्रति श्रद्धा) 2. मनुष्य यज्ञ (आथित्य-सत्कार) 3. भूत यज्ञ (जीवमात्र के प्रति श्रद्धा) 4. पितृ यज्ञ (पूर्वजों के प्रति श्रद्धा) 5. ब्रह्म यज्ञ (वेदों और ऋषियों के प्रति श्रद्धा)।

पंच पवित्र वृक्ष: पीपल, वट, बिल्व, कुश और अशोक वृक्षों को पंच पवित्र वृक्षों की संज्ञा दी गयी है। इन वृक्षों की लकड़ी, छाल एवं पत्तियों का पूजन सामग्री के रूप में प्रयोग किया जाता है।

हिन्दू धर्म के पाँच शुभ प्रतीक- ऊँ, स्वस्तिक, दीपक, माला और कमल हिन्दू धर्म के पंच शुभ संप्रतीक हैं। ये सभी हिन्दू परिवारों के घरों में प्रायः अत्यंत सुन्दर रूप में सदैव दर्शनीय हैं।

पंच प्राण: प्राण की पाँच गतियाँ हैं, जिन्हें पंच प्राण कहते हैं। ये योग और आयुर्वेद में ऊर्जा के प्रवाह को दर्शाती हैं। ये पाँच गतियाँ हैं- प्राणवायु, अपान वायु, समान वायु, उदान वायु और व्यान वायु। ये समस्त शरीर और मन के कार्यों का नियंत्रण करती हैं।

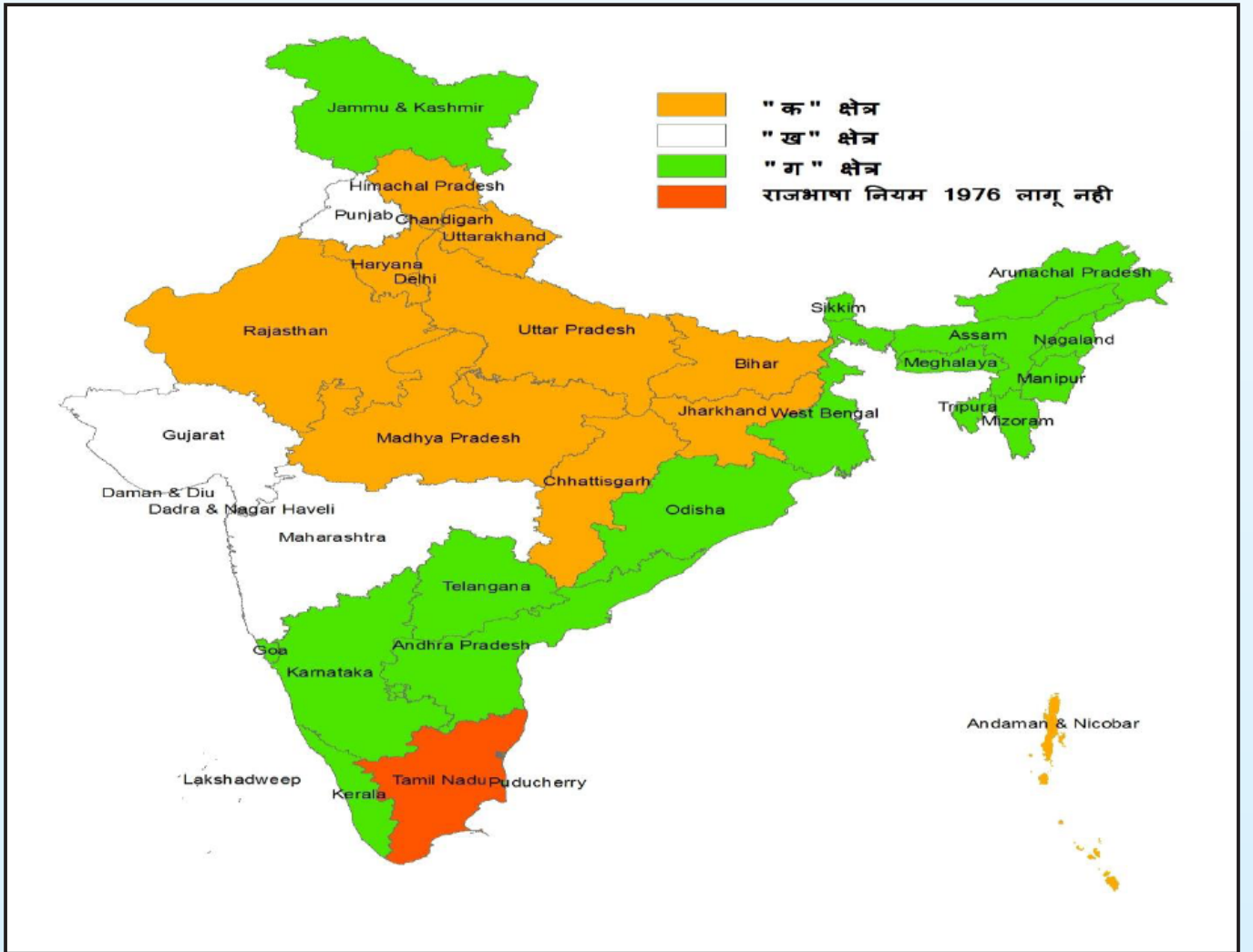
पंचकर्म: भारतीय आयुर्वेद में प्रयुक्त शुद्धिकरण की एक अत्यंत सुप्रसिद्ध चिकित्सा प्रक्रिया है। इसका प्रयोग शरीर से विषाक्त पदार्थों के निष्कर्षण और स्वास्थ्य के पुनर्स्थापन में किया जाता है। पंचकर्म के अंतर्गत मूल रूप से पाँच उपचार आते हैं-

1. **वमन:** उल्टी के माध्यम से शरीर से कफ दोष को बाहर निकालना।
2. **विरेचन:** पित्त दोष का दस्त के माध्यम से शमन करना।
3. **बस्ती:** गुदा मार्ग से औषधीय तेल का प्रयोग करके वात दोष को समाप्त करना।
4. **नस्य:** सिर और गर्दन संबंधी रोगों के निवारण हेतु नाक के माध्यम से औषधीय तेल का उपयोग करना।
5. **रक्तमोक्षण:** शरीर को शुद्ध करने के लिए शरीर से अशुद्ध रक्त का निष्कर्षण।

पंचमुख हनुमान- श्रीहनुमान जी शिवजी के ही अवतार हैं और श्रीरामजी के परम प्रिय भक्त हैं। श्रीराम-रावण युद्ध के दौरान जब श्रीराम की सेना को हराना असंभव लग रहा था, तब पाताललोक का राजा और रावण का भाई अहिरावण अपनी मायावी शक्तियों का प्रयोग करके श्रीराम जी और लक्ष्मण जी को बंदी बनाकर पाताल लोक ले गया तथा अपनी आराध्या देवी महामाया के समक्ष प्रभु की बलि देकर अमरत्व प्राप्त करना चाहता था। श्री हनुमान जी को जब इस बात का भान हुआ तो वे तुरंत पाताललोक गये और उन्होंने पंचमुख हनुमान का रूप धारणा करके पाँचों दिशाओं में प्रज्वलित अहिरावण के मायावी दीपों को एकसाथ बुझाकर उसका वध कर दिया और श्रीराम-लक्ष्मणजी को सकुशल वापस लेकर आये। श्री हनुमान के पंचमुखों में निम्नलिखित स्वरूप सम्मिलित हैं-

1. श्री हनुमान (कपि) मुख (पूर्व दिशा)- भक्तों के समस्त संकटों का हरण करने वाला स्वरूप है।
2. श्री नरसिंह मुख (दक्षिण दिशा)- यह स्वरूप हर प्रकार के शत्रुओं का नाश करता है एवं भक्तों को भयमुक्त करता है।
3. श्री गरुड़ मुख (पश्चिम दिशा)- यह स्वरूप नागदोष, विष एवं कालसर्प दोष निवारक है।
4. श्री वराह मुख (उत्तर दिशा)- यह स्वरूप समस्त भौतिक सुखों एवं लौकिक संपन्नता प्रदायक है।
5. श्री हयग्रीव मुख (ऊर्ध्व दिशा)- यह स्वरूप सर्व प्रकार का ज्ञान एवं बुद्धि प्रदायक है।

राजभाषा नियम, 1976



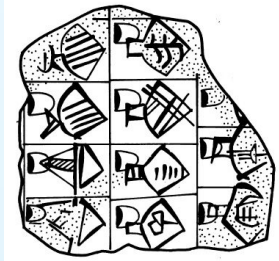
प्राचीन लेखापरीक्षकों की झाँकी

कल्पना कीजिए कि आप समय की एक ऐसी सुरंग से गुजर रहे हैं, जहाँ प्राचीन सभ्यताएँ अपनी कहानियाँ जीवंत रूप में प्रस्तुत कर रही हैं। यह यात्रा हमें उन लोगों के करीब ले जाएगी, जिन्हें आज हम 'लेखापरीक्षक' कहते हैं, लेकिन जिन्हें प्राचीन काल में समाज का आधारस्तंभ माना जाता था। ये लोग केवल हिसाब-किताब के रखवाले नहीं थे, बल्कि सत्य, पारदर्शिता और व्यवस्था के प्रतीक थे। आइए, इस रोमांचक यात्रा में हम विभिन्न सभ्यताओं के लेखापरीक्षकों की कहानी को और गहराई से जानें।



मेसोपोटामिया: मिट्टी की तख्तियों का जादू

मेसोपोटामिया की धरती, जहाँ सभ्यता का पहला सूरज उगा, वहाँ लेखांकन की कला ने भी जन्म लिया। यूफ्रेट्स और टिगरिस नदियों के किनारे बसे बाजारों में, व्यापारी अनाज, कपड़े और मवेशियों का लेन-देन करते थे। इन लेन-देन को दर्ज करने की जिम्मेदारी थी क्यूनिफॉर्म लिपि में माहिर लेखाकारों की। ये लेखाकार अपनी नुकीली रीढ़ की कलम से गीली मिट्टी की तख्तियों पर हर लेन-देन को अंकित करते थे। उनकी सटीकता की कहानियाँ आज भी पुरातत्वविदों को आश्चर्यचकित करती हैं।



उदाहरण हेतु, उर शहर में मिली तख्तियों से पता चलता है कि लेखाकार न केवल व्यापारिक लेन-देन, बल्कि मंदिरों के दान, कर और श्रमिकों के वेतन तक का हिसाब रखते थे। उनकी तख्तियाँ न केवल आर्थिक रिकॉर्ड थीं, बल्कि सामाजिक व्यवस्था का दर्पण भी थीं। एक गलती भी साम्राज्य की विश्वसनीयता को ठेस पहुँचा सकती थी अतः इन लेखाकारों को प्रशिक्षण में वर्षों लगते थे। उनकी नजर इतनी पैनी थी कि कहा जाता था कि वे एक बोरी अनाज में से एक गायब दाने को भी ढूँढ सकते थे।

मेसोपोटामिया के लेखाकारों की एक और खासियत थी



प्रशांत कुमार श्रेष्ठ

वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II),
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

उनकी सामाजिक स्थिति। वे केवल लेखक नहीं, बल्कि समाज के सम्मानित सदस्य थे। मंदिरों और राजदरबारों में उनकी सलाह को सर्वोच्च महत्व दिया जाता था। उनकी बनाई तख्तियाँ आज भी संग्रहालयों में सुरक्षित हैं, जो हमें उस दौर की आर्थिक और सामाजिक जटिलताओं की कहानी सुनाती हैं।

मिस्र: नील नदी के किनारे हिसाब की कला

मिस्र की सभ्यता में लेखांकन का महत्व और भी गहरा था। नील नदी के किनारे बसे इस साम्राज्य में, स्क्राइब (लेखक) समाज के सबसे शिक्षित और सम्मानित वर्गों में से एक थे। वे 'पपाइरस'¹ पर हाइरोग्लिफिक्स² और हिराटिक³ लिपि में हिसाब-किताब दर्ज करते थे। उनका काम केवल व्यापार तक सीमित नहीं था, वे फराओ के खजाने, पिरामिड निर्माण के खर्च, और यहाँ तक कि नील की बाढ़ के आधार पर कर निर्धारण का हिसाब भी रखते थे।

स्क्राइब की ट्रेनिंग एक लंबी और कठिन प्रक्रिया थी। वे बचपन से ही मंदिरों और स्कूलों में गणित, लेखन और प्रशासनिक ज्ञान सीखते थे। उनकी लिखावट इतनी सुंदर थी कि इसे 'देवताओं का लेखन' कहा जाता था। फराओ के दरबार में उनकी उपस्थिति अनिवार्य थी, क्योंकि वे न केवल आर्थिक रिकॉर्ड रखते थे, बल्कि राजनैतिक और धार्मिक निर्णयों में भी सलाह देते थे।

उदाहरण के लिए, रामेसेस द्वितीय के शासनकाल में, स्क्राइब ने अबू सिम्बल मंदिर के निर्माण का हिसाब रखा। उन्होंने श्रमिकों की संख्या, सामग्री की मात्रा, और लागत का हिसाब इतनी बारीकी से दर्ज किया कि आज भी पुरातत्वविद उस दौर की अर्थव्यवस्था को समझ सकते हैं। उनकी लिखी पपाइरस की किताबें आज भी मिस्र के संग्रहालयों में संरक्षित हैं, जो हमें उस समय की समृद्धि और संगठन की कहानी बताती हैं।

¹मिस्र के एक खास पौधे से बनाया जाने वाला कागज।

²प्राचीन मिस्र वासियों द्वारा अपना इतिहास दर्ज करने के लिए प्रयोग की गयी चित्रात्मक लिपि।

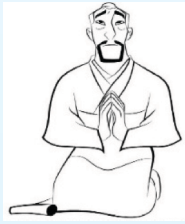
³यह एक विशिष्ट लिपि थी जो मिस्र में प्राचीन काल में इस्तेमाल होती थी।

प्राचीन भारत: नैतिकता और हिसाब का संगम

भारत की प्राचीन सभ्यता में लेखांकन केवल गणित का विषय नहीं था, बल्कि यह एक नैतिक और आध्यात्मिक कर्तव्य भी माना जाता था। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में लेखा परीक्षण के नियमों का विस्तृत वर्णन मिलता है। इस ग्रंथ के अनुसार, लेखापरीक्षक को न केवल राजकोष का हिसाब रखना था, बल्कि यह भी सुनिश्चित करना था कि राजा और उसके अधिकारी नैतिकता के मार्ग पर चलें।



प्राचीन भारत में लेखापरीक्षकों को 'लेखक' या 'लिपिक' कहा जाता था। वे ताड़पत्रों और भोजपत्रों पर हिसाब दर्ज करते थे। उनकी लिखावट इतनी साफ और व्यवस्थित होती थी कि इसे पढ़ना एक कला माना जाता था। मौर्य साम्राज्य के दौरान, लेखापरीक्षक राजकोष की देखरेख करते थे और कर संग्रहण में पारदर्शिता सुनिश्चित करते थे। उनकी ईमानदारी की कहानियाँ आज भी प्रेरणा देती हैं। उदाहरण के लिए, एक कथा के अनुसार, चंद्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में एक लेखापरीक्षक ने राजकोष के दुरुपयोग की सूचना दी। उनकी साहसिकता और निष्पक्षता के कारण, सम्राट ने न केवल उनकी बात मानी, बल्कि उन्हें पुरस्कृत भी किया। पौराणिक कथाओं में चित्रगुप्त को सभी मनुष्यों के कर्मों का लेखा-जोखा रखने वाला माना गया है, जो इस बात का प्रतीक है कि भारत में लेखांकन को कितना पवित्र कार्य माना जाता था।



चीन: बाँस की पट्टियों पर साम्राज्य का इतिहास

चीन की प्राचीन सभ्यता में लेखांकन की कला ने बाँस की पट्टियों को एक अनमोल दस्तावेज में बदल दिया। हान और किन राजवंशों के दौरान, लेखाकार बाँस की पतली पट्टियों पर स्याही से हिसाब लिखते थे। ये पट्टियाँ इतनी महत्वपूर्ण थीं कि इन्हें विशेष बक्सों में संरक्षित किया जाता था। लेखाकारों का काम साम्राज्य के कर, व्यापार, और सैन्य खर्चों का हिसाब रखना था।

चीन के लेखाकारों की गणना की सटीकता की कहानियाँ प्रसिद्ध थीं। कहा जाता था कि वे हजारों सिक्कों के ढेर में से एक गायब सिक्का भी ढूँढ़ सकते थे। उनकी लिखावट इतनी साफ और व्यवस्थित थी कि इसे पढ़ना एक कला माना जाता था। राजदरबार में उनकी उपस्थिति का अर्थ था कि कोई भी गलती या भ्रष्टाचार छिप नहीं सकता।

उदाहरण के लिए, किन शिहुआंग के शासनकाल में, लेखाकारों ने ग्रेट वॉल के निर्माण का हिसाब रखा। उन्होंने सामग्री,

श्रमिकों, और लागत का हिसाब इतनी बारीकी से दर्ज किया कि आज भी इतिहासकार उस दौर की अर्थव्यवस्था को समझ सकते हैं। बाँस की पट्टियाँ न केवल आर्थिक रिकॉर्ड थीं, बल्कि साम्राज्य के गौरव की कहानी भी थीं।

रोमन साम्राज्य: संगठन और पारदर्शिता का प्रतीक

रोमन साम्राज्य में लेखा परीक्षण एक संगठित और प्रभावी प्रणाली थी। 'सेंसर' नामक अधिकारी सार्वजनिक धन का हिसाब रखते थे और भ्रष्टाचार पर नजर रखते थे। वे अपनी सफेद टोगा में रोम की सड़कों पर चलते, हर खर्च की जाँच करते, और अपनी मोम की टैबलेट पर नोट्स बनाते। उनकी कार्यप्रणाली इतनी प्रभावी थी कि आज भी कई देशों के लेखा परीक्षण में उनके सिद्धांतों का प्रभाव देखा जा सकता है।



रोमन लेखा परीक्षकों की एक खासियत थी उनकी स्वतंत्रता। वे सेनेट के प्रति जवाबदेह थे, न कि किसी सम्राट के। उनकी रिपोर्ट सेनेट में प्रस्तुत की जाती थी, और यह किसी भी भ्रष्ट अधिकारी के करियर का अंत कर सकती थी। उदाहरण के लिए, जूलियस सीजर के समय में, सेंसर ने सार्वजनिक निर्माण परियोजनाओं के खर्चों की जाँच की और कई अनियमितताओं को उजागर किया।

रोमन लेखा परीक्षक न केवल आर्थिक रिकॉर्ड रखते थे, बल्कि जनगणना और कर निर्धारण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। उनकी बनाई टैबलेट और दस्तावेज आज भी इतिहासकारों के लिए अनमोल हैं।

समय के पन्नों से सीख

आज जब हम डिजिटल युग में लेखांकन और लेखा परीक्षण करते हैं, तो हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि यह कला हजारों साल पुरानी है। हमारे पूर्वजों ने मिट्टी की तख्तियों, पपाइरस, ताड़पत्रों, बाँस की पट्टियों, और मोम की टैबलेट पर हिसाब-किताब दर्ज करके इस कला को जीवित रखा। आज के लेखा परीक्षक उस प्राचीन परंपरा के वाहक हैं, जो सभ्यता के साथ-साथ विकसित हुई है।

तो अगली बार जब आप किसी लेखापरीक्षक को देखें, तो याद रखिए कि वे केवल अंकों के साथ काम नहीं करते। वे एक ऐसी परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं, जो समाज को व्यवस्थित और पारदर्शी बनाती है। यह परंपरा प्राचीन मेसोपोटामिया की मिट्टी की तख्तियों से शुरू हुई और आज के क्लाउड-बेस्ड सॉफ्टवेयर तक पहुँची है। लेखापरीक्षक न केवल हिसाब-किताब के रखवाले हैं, बल्कि सभ्यता के गार्जियन भी हैं।

घुमक्कड़ी यात्रा: लखनऊ झाँसी-ओरछा-दतिया

परिवार के साथ रामराजा सरकार ओरछा धाम के दर्शन की लंबे समय से इच्छा थी। हमारे अभिन्न कथा व्यास आदरणीय अतुल कृष्ण भारद्वाज जी का ओरछा धाम में सात दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा के दिनांक 21.12.23 से दिनांक 27.12.23 के मध्य आयोजन की सूचना और आमंत्रण दिसंबर के आरंभ में प्राप्त हुआ। परिवार भी शीत अवकाश में कहीं भी चलने को तैयार था। तो रामराजा सरकार के दर्शन की भावना लिए परिवार के साथ 24 दिसंबर को दोपहर 11 बजे अपनी कार से लखनऊ छोड़ा गया। लखनऊ से कानपुर के रास्ते में एलिवेटेड रोड का काम हो रहा था और दोपहर का समय था, जिसके कारण ट्रैफिक बहुत था और गाड़ी धीमी चली। बंधरा बाजार में कार की छत पर ऊपर से एक बड़ा कंकड़-पत्थर भी गिर गया। जोर की आवाज सुनाई दी पर सड़क पर भीड़ के कारण कार रोकने की गुंजाइश नहीं थी। हम लोग चलते रहे। उन्नाव पार करते हुए अचलगंज मोड़ से जाजमऊ पुल के बीच में भीषण जाम का सामना करना पड़ा। धीरे-धीरे राम का नाम लेते हुये गंगा पुल पार हुआ। जाजमऊ पुल के बाद ही फ्लाई ओवर ब्रिज है, जो आपको ऊपर ही ऊपर कानपुर शहर से बाहर निकाल देता है। कानपुर से कालपी रोड पर आते ही महसूस हुआ कि यात्रा का एक हिस्सा पूरा हो गया।

आगे चलते हुए यमुना नदी के पुल को पार किया गया। यमुना पुल पर भी नेशनल हाईवे अथॉरिटी द्वारा रख-रखाव का काम हो रहा था, जिसके कारण ट्रैफिक धीमा था। इसके साथ ही हम लोगों ने बुंदेलखंड के प्रवेश द्वार कालपी, जनपद जालौन में प्रवेश किया। कालपी का स्वतंत्रता के प्रथम समर में झाँसी की रानी के युद्ध कौशल से जुड़ाव के नाते एक विशेष स्थान है। महान कवयित्री सुश्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने लिखा है:-

“रानी बड़ी कालपी आई, कर सौ मील निरंतर पार।

घोड़ा थक कर गिरा जमीन पर, गया स्वर्ग तत्काल सिधार।।”

कालपी से उरई पहुँचने के बाद खिली-खिली धूप में ढाबे के बाहर खुले में बैठकर भोजन किया गया। स्टेट हाइवे की सड़कों पर एक्सप्रेसवे की तुलना में अधिक भीड़ रहती है, इसलिए कार की रफ्तार थोड़ी धीमी रहती है। भोजन के बाद आटा, ऐट, चिरगांव, पारिछा होते हुए करीब शाम छः बजे हम झाँसी पहुँचे। चूँकि देर हो चुकी थी और शाम ढल चुकी थी, इसलिए यह तय हुआ कि आज रात झाँसी में ही विश्राम किया जाए। हमारे पास अब शाम का समय था और बस इतना ही समय था कि झाँसी के किले में होने



सुनील कुमार पाण्डेय
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II),
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

वाले लाइट एंड साउंड शो को देख सकें। सामान्यतः किले में दो शो होते हैं, सवा-छह से सवा-सात बजे तक और साढ़े-सात बजे से साढ़े-आठ बजे तक। हम लोग सात बजे किले पर पहुँच गए थे। किले में प्रवेश टिकट प्रति व्यक्ति पच्चीस रुपये है और लेजर लाइट एंड साउंड शो का टिकट प्रति व्यक्ति दो सौ पचास रुपये है। साढ़े-सात बजे से शो शुरू होना था, उससे पहले रोशनी में नहाया हुआ किला भी थोड़ा घूम लिया गया। साढ़े-सात बजे शो शुरू हुआ। यह सामान्य लाइट एंड साउंड शो न होकर एक लेजर शो है। पहले किले में रानी झाँसी के किले से छलांग लगाने वाले स्थान के पास बाग में यह शो होता था। अब नीचे फाँसी घर के पास आमोद बाग में लेजर शो होता है, जिसमें लेजर के माध्यम से आकृतियाँ भी दिखती हैं और प्रभावशाली ढंग से दिखाया जाता है। इस शो में किला अपनी कहानी बताता है। बहुत ही दमदार और मार्मिक चित्रण किया गया है। प्रत्येक भारतीय को झाँसी के किले में होने वाले इस शो को कम से कम एक बार अवश्य देखना चाहिए, जिससे कि सूक्ष्म रूप में पूरी गाथा समझी जा सके। आज जिस स्वतंत्रता का आनंद हम ले रहे हैं, उसके लिए कैसे-कैसे संघर्ष किए गए हैं। रात में भोजन कर झाँसी में ही विश्राम किया गया। झाँसी एक बड़ा शहर है और हर बजट के होटल उपलब्ध हैं।

दिनांक 25.12.2023

सुबह परांठा सब्जी का नाश्ता किया गया। आज झाँसी छोड़ कर ओरछा जाना था। सबसे पहले आज झाँसी का किला घूमना था। हम लोग झाँसी के किले को दिन के उजाले में देखने निकल पड़े। किले पर पहुँच कर प्रति व्यक्ति पच्चीस रुपये के हिसाब से प्रवेश टिकट लिया गया। बाहर उपलब्ध फोटोग्राफर के कहने पर अच्छी फोटो के लालच में पाँच सौ रुपये में तीन फोटो खिंचवाई गईं, जिसमें उसने हमें सौ रुपये की छूट दी और वादे के मुताबिक जब एक घंटे बाद हम किला घूमकर लौट कर आए तो हमें फोटो प्राप्त हो गई। हमने किले को समझने के लिए एक गाइड भी कर लिया, जिसने चार सौ रुपये लिए। गाइड के मुताबिक पहले किले की दशा ठीक नहीं थी, परंतु पिछले कुछ वर्षों में प्रधानमंत्री,

राज्यपाल जैसे बड़े लोगों के आने के बाद से किले में बहुत सुधार हुआ है। गाइड ने किले की कहानी विस्तार से सुनाई। उसने बताया कि झाँसी का नाम पहले बलवंतनगर था। झाँसी किले को वीर बुंदेला राजा श्रीमान वीर सिंह बुंदेला ने बनवाया था। जब राजा ने अपने साथियों को ओरछा के किले से इस किले को दिखाया तो सबने कहा कि यह तो ओरछा के किले की झाँई सा (परछाई सा) लगता है, इसलिए राजा ने इस जगह का नाम बलवंतनगर से बदल कर झाँसी रख दिया था। कालांतर में वीर बुंदेला राजा छत्रसाल जब बूढ़े हो चले तो अलाउद्दीन खिलजी ने उन पर आक्रमण कर दिया था और उन्होंने मदद के लिए मराठा सरदार पेशवा बाजीराव को संदेशा कहलवाया था।

पेशवा की मदद से राजा छत्रसाल जीत गए थे तब राजा छत्रसाल ने मराठों को जागीरें इनाम में भेंट कर दीं, जिसमें झाँसी भी थी। बाद में झाँसी के राजा गंगाधर राव थे, जिनका ब्याह मनु से हुआ और मनु को नया नाम मिला लक्ष्मीबाई। उनके एक पुत्र हुआ जिसे पारिवारिक साजिश में जहर दिया गया जिससे वह बीमार हुआ और छोटी सी उम्र में ही उसका देहांत हो गया। बाद में जब गोद ली गई संतान दामोदर राव को मान्यता न देकर अंग्रेजों ने झाँसी पर कब्जा कर लिया, तो रानी ने 1857 की क्रांति में झाँसी पर दोबारा कब्जा कर लिया। युद्ध चलता रहा और परिवार के सदस्यों ने ही दगाबाजी करते हुए किले का दरवाजा खोला जिससे अंग्रेज फौज किले में आ गई। रानी लक्ष्मीबाई किले से अपने घोड़े पर सवार होकर किले से कूद गईं। घोड़ा कालपी पहुँच कर शहीद हो गया। उसके बाद रानी ने कालपी और ग्वालियर में अंग्रेजों को शिकस्त दी, पर ग्वालियर में दोबारा युद्ध में रानी का नया घोड़ा नाले को पार करते समय अड़ गया और अंग्रेजों ने रानी को घेर लिया। लड़ते हुए रानी जख्मी हो गई और बाबा गंगादास की कुटिया पहुँची। उन्होंने बाबा से अपने शरीर को अंग्रेजों से बचाने और अपने गोद लिए बेटे दामोदर राव को सुरक्षित रखने का अनुरोध किया और अपने प्राण त्याग दिए। झाँसी का किला घूमने में करीब दो घंटे लग गये।



झाँसी के पास 20 किलोमीटर और आधे घण्टे की दूरी पर बरुआ सागर झील और किला देखने निकल पड़े। वहाँ पर एक झरना भी है जोकि इस समय शांत था। झील बहुत विशाल है। बरुआ सागर किला भी ठीक-ठाक ऊँचाई पर है। यहाँ कोई टिकट नहीं है। यह किला एक गिरि दुर्ग है, जिसे बुंदेला राजा उदित सिंह ने 18वीं शताब्दी में बनवाया था। यह एक सुंदर और रमणीय स्थल है जहाँ वन विहार के लिए राज परिवार आता था। दुर्ग के ऊपर से विशाल झील और खुला आसमान बहुत सुकून देता है। सरकार इस स्थान को अधिक मनोरम पर्यटक स्थल बनाने के लिए काम कर रही है।

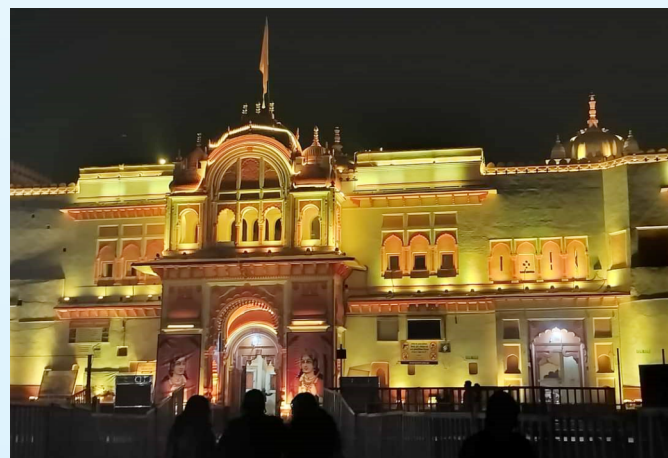
बरुआसागर से ओरछा धाम 20 किलोमीटर और आधे घण्टे की दूरी पर है। ओरछा धाम में तय अनुसार हम लोग तीन बजे के करीब होटल राजमहल पैलेस पहुँचे। कथा व्यास आदरणीय अतुल कृष्ण भारद्वाज जी के सहयोगी श्रीमान राजन जी से मुलाकात हुई और कमरा लिया गया। बहुत सुन्दर होटल था। ओरछा शहर की शुरुआत में ही सातार नदी के किनारे बना होटल जिसमें खुला-खुला विशाल प्रांगण, पार्किंग के लिए पर्याप्त स्थान, स्विमिंग पूल, बड़े गलियारे, बड़े कमरे हैं। भोजन की व्यवस्था श्रीमान गणेश जी ने बड़े प्रेम से करवाई। महाराज जी की कथा का समय हो गया था। बच्चे कमरे में आराम करने चले गए और हम लोग कथा श्रवण करने के लिए कथा कक्ष में प्रवेश कर गए। आज कथा दो सत्रों में थी। प्रथम सत्र का विश्राम छह बजे हुआ। बच्चे भी आराम कर कथा कक्ष में आ गए थे। झाँसी के भक्तों द्वारा आज कथा के मध्याह्न में झाँसी के मशहूर नारायण चाट भंडार के चाट की व्यवस्था थी। स्वादिष्ट चाट, गोलगप्पे, टिक्की, दहीबड़े, करेले, आदि का आनंद लिया गया। दूसरा सत्र प्रारंभ हुआ। हमने भी महाराज जी को शॉल और फल भेंट किए। आज की कथा में श्री कृष्ण के बाल स्वरूप और लीलाओं का अद्भुत वर्णन महाराज जी द्वारा किया गया। हम लोग आठ बजे के बाद श्री रामराजा सरकार के दर्शनों के लिए निकल पड़े। आज के दिन को रोहिणी नक्षत्र की विशिष्टता के कारण दिन में बहुत भीड़ थी और गाड़ियों का प्रवेश बंद था। शाम को गाड़ियों को शहर में प्रवेश करने दे रहे थे। परंतु मंदिर के आस-पास पार्किंग का स्थान बहुत मुश्किल से मिल पाया।

हम लोग नौ बजे के करीब मंदिर के पास पहुँचे। मंदिर बंद हो चुका था। अब 9.30 बजे रात्रि शयन से पूर्व की आरती के लिए खुलना था। हम लोगों ने फूल माला और प्रसाद ले लिया था और मंदिर के बाहर खड़े थे। तभी मंदिर के बाहर रामजी का बायरा बँट रहा था। यह जो भोग प्रभु रामराजा सरकार को लगाया गया होता है, उसे आम जनता को बाँट दिया जाता है। कुछ लोगों ने हमसे भी कहा कि आप लोग भी पाइए, यह बड़े सौभाग्य से मिलता है। भीड़ बहुत ज्यादा थी। तभी एक सज्जन ने हम लोगों को चार पूड़ी और सब्जी ला कर दे दी। हमने सौ रुपये उन्हें दक्षिणा स्वरूप दे दिया।

तब तक मंदिर के दरवाजे खुल गए। हम लोग भी अंदर प्रांगण में प्रवेश कर गए। हमारे पहुँचने से पहले भगवान के सामने कम से कम सौ लोग खड़े हो चुके थे। हम लोग प्रांगण में पीछे की ओर खड़े हो गए। 9.30 बजने वाले थे। कुछ लोग मोबाइल से फोटो ले रहे थे और कुछ लोग वीडियो बना रहे थे। मंदिर परिसर में इस बात को लेकर माइक पर घोषणा करते हुए मोबाइल के प्रयोग के लिए मना किया गया। हम लोगों ने देखा कि मध्य प्रदेश पुलिस का एक सिपाही हाथ में संगीन लिए मंदिर के सामने खड़ा हो गया और घंट-घड़ियाल बजने लगे। इसी के साथ मंदिर के पट खुले और सिपाही ने बन्दूक के साथ श्री रामराजा सरकार को सलामी दी। मंदिर के पुजारी ने पूजा संपन्न की। इसके बाद सभी लोग पंक्तिबद्ध होकर श्री रामराजा सरकार और उनके दरबार का दर्शन करते हुए आगे बढ़ने लगे। प्रभु रामराजा सरकार मंदिर की एक अतिरिक्त विशेषता है। इसे जानने से पहले इसका इतिहास जानना अति आवश्यक है। ओरछा के राजा मधुकर शाह कृष्ण भक्त थे और उनकी रानी गणेश कुमारी प्रभु राम की भक्त थीं। इस कारण से उनके मध्य थोड़ा मनमुटाव भी रहता था। एक बार राजा मधुकर शाह ने रानी से मथुरा चलने के लिए कहा, परंतु रानी का मन अयोध्या जाने का था। तब राजा क्रोधित हो उठे और रानी से कहा कि अयोध्या जाओ और तब आना जब राजा राम साथ में आयें। रानी भी अयोध्या के लिए निकल पड़ीं। रानी ने अयोध्या के सरयू के तट पर कई महीने पूजा अर्चना की। ज्ञात हो कि जब अयोध्या पर बाबर के सेनापति मीर बाकी ने आक्रमण कर मंदिर तोड़ा था तो मंदिर के पुजारियों ने प्रभु और समस्त आराध्यों की प्रतिमाओं को सरयू नदी में प्रवाहित कर दिया था। कई महीने पूजा-अर्चना के बाद भी जब प्रभु के दर्शन नहीं हुए तो रानी ने जल समाधि लेने के लिए सरयू नदी में छलांग लगा दी। नदी में छलांग लगाने पर रानी की गोद में प्रभु श्री राम की प्रतिमा आ गई और आसपास के नागरिकों ने रानी को बाहर निकाला। रानी ने प्रभु की आराधना-पूजन किया और अपने साथ ओरछा चलने के लिए कहा। प्रभु ने रानी से तीन बातें कहीं, पहली कि रानी अपनी गोद में पैदल चलकर अयोध्या से ओरछा ले जाएंगी, दूसरी कि ओरछा में प्रभु राजा होंगे, और तीसरी कि रानी अपनी गोद से जहाँ भी प्रभु को एक बार बैठा देंगी प्रभु वहीं विराजमान हो जायेंगे। उधर ओरछा में प्रभु श्री राम के लिए भव्य मंदिर का निर्माण कराया जा रहा था। रानी प्रभु राम की प्रतिमा के साथ ओरछा पहुँची और राजा को पूरी गाथा सुनाई। राजा ने रानी से अपनी कही बातों के लिए माफी माँगी। प्रभु का मंदिर पूरा तैयार नहीं हो पाया था, इसलिए रानी ने अपनी रसोई में ही प्रभु से प्रार्थना कर उनकी प्रतिमा को रख दिया कि मंदिर का कार्य पूर्ण होते ही मंदिर में पूजा अर्चना के साथ स्थापित किया जाएगा। परंतु मंदिर पूर्ण होने पर प्रभु की प्रतिमा टस से मस नहीं हुई। रानी ने मंदिर इस प्रकार बनवाया था कि वह चाहती थी कि जब प्रातः काल वह उठें और अपने झरोखे से बाहर देखें तो प्रभु राम के दर्शन हों। रानी को रात में प्रभु स्वप्न में दर्शन

देकर कहते हैं कि मैंने तो कहा था कि जहाँ बैठा दोगी वहीं स्थापित हो जाऊंगा और क्या मुझसे मिलने महल से मंदिर नहीं आ सकती हो। फिर प्रभु वहाँ से नहीं हिले और रानी महल ही उनका मंदिर हो गया। बगल में बनने वाला चतुर्भुज मंदिर विष्णु भगवान का मंदिर है। एक और कहानी जुड़ी है इस मंदिर से। कालांतर में जब औरंगजेब भारत में मंदिरों को ध्वस्त कर रहा था तब ओरछा के मन्दिर को तोड़ने के लिए भी सेना ओरछा आ गई थी। कहते हैं कि औरंगजेब की एक बेटी जैबुनिसा ओरछा के राजकुमार से प्रेम करती थी और जब मुगलिया सेना ओरछा के द्वार पर आई तो उसने ही सामना किया और उसी के प्रतिरोध के कारण ओरछा का मंदिर ध्वस्त होने से बचा।

ओरछा में प्रभु श्री राम को महाराज का दर्जा प्राप्त हुआ और ओरछा के बुंदेला राजा ने अपनी राजधानी टीकम गढ़ बना ली। तब से ओरछा में श्री राम राजा सरकार को महाराज माना गया और साक्षात् प्रकट स्वरूप मानते हुए पूजा अर्चना की जाती है। आज करीब 450 वर्षों से निरंतर प्रत्येक आरती के समय श्री रामराजा सरकार को सरकारी गारद की सलामी दी जा रही है। ऐसा विश्व की किसी भी व्यवस्था में नहीं होता है। मंदिर के व्यवस्थापक जिला कलेक्टर, जनपद निवाड़ी, मध्य प्रदेश हैं। श्री राम राजा सरकार के गत 18 दिसंबर को संपन्न विवाह उत्सव में निमंत्रण पत्र भी जिला कलेक्टर निवाड़ी की ओर से जारी हुआ था।



वैसे तो बहुत अधिक भीड़ आमतौर पर नहीं होती है, परंतु यदि आप अधिक आराम से दर्शन लाभ प्राप्त करना चाहते हैं तो 250 रुपये मात्र प्रति व्यक्ति दान करके पर्ची प्राप्त कर सकते हैं और आपको सुलभ दर्शन प्राप्त हो जायेंगे। हम लोगों को बहुत ही सुन्दर और अद्भुत दर्शन प्राप्त हुए। एक और अद्भुत बात है यहाँ पर। ऐसी मान्यता है कि प्रभु श्री राम दिन में ओरछा धाम में रहते हैं और रात्रि में शयन के लिए श्री अयोध्या धाम को श्री हनुमान जी के साथ प्रस्थान करते हैं और फिर सुबह लौटते हैं। इस रात्रि की आरती के पश्चात् प्रभु श्री राम राजा शयन के लिए मंदिर से पालकी पर राम दरबार और ज्योत के साथ निकलते हैं।

उनके ऊपर छत्र-धरे, ढोल बाजे के साथ भक्त, श्री राम - जय राम जय जय राम का गान करते हुए मंदिर परिसर के बाहर एक हनुमान मंदिर तक आते हैं, जहाँ पुजारी जी श्री हनुमान जी महाराज की पूजा करते हैं और ज्योत रूप में श्री हनुमान जी को सौंप देते हैं। ऐसी मान्यता है कि श्री हनुमान जी महाराज श्री राम राजा सरकार को ज्योत रूप में श्री ओरछा धाम से श्री अयोध्या धाम में कनक भवन शयन के लिए ले जाते हैं और प्रत्येक सुबह लौटते हैं। जानकारी हेतु बताते चलें कि श्री अयोध्या धाम में कनक भवन का निर्माण कार्य बुंदेला राजाओं द्वारा किया गया था। आज की शाम का उद्देश्य श्री राम राजा सरकार के दर्शन मात्र थे परन्तु उनके शयन कार्यक्रम की भी जानकारी मिल गई और उस गतिविधि में शामिल होने के कारण हम लोगों के मन में प्रसन्नता बहुत अधिक थी। हमने दर्शन करने के बाद पास ही बाजार का भ्रमण किया और चाट, आदि का आनंद लिया। उसके बाद हम वापस होटल आ गए।

दिनांक 26.12.2023

26 दिसंबर को सुबह नाश्ते के पश्चात् स्थानीय भ्रमण के लिए निकल पड़े। कार मंदिर के पास पार्किंग में ही खड़ी कर दी गई। ओरछा एक छोटा-सा शहर है। मंदिर के पास ही किला भी है। दूसरे दिन जहाँगीर महल, ओरछा का किला, शीश महल, रानी परवीन का महल, लक्ष्मी मंदिर, कल्पवृक्ष, बुंदेला राजाओं की छतरियाँ, बेतवा नदी का किनारा, लाला हरदौल की बाड़ी आदि प्रमुख स्थान घूमने गये। जहाँगीर महल राजा वीर सिंह बुंदेला ने जहाँगीर के गद्दी संभालने के बाद भारत भ्रमण के दौरान बुंदेलखंड में स्वागत के लिए बनवाया था। उन्होंने अकबर की फौजों को कई

बार युद्ध में हराया। जब शहजादे सलीम ने बादशाह अकबर से विद्रोह किया तो राजा वीर सिंह बुंदेला ने सलीम से दोस्ती कर ली क्योंकि वह जानते थे कि सलीम ही आगे चलकर बादशाह बनेगा। इस दोस्ती को उन्होंने सिद्ध भी किया जब अकबर ने अबुल फजल के नेतृत्व में सलीम को गिरफ्तार करने के लिए सेना भेजी तो उसका मुकाबला बुंदेल सेना ने किया और अबुल फजल का सिर कलम कर राजा वीर सिंह बुंदेला ने सलीम को पेश किया। बाद में जब सलीम ने गद्दी संभाली तो ओरछा आगमन पर राजा वीर सिंह बुंदेला ने उनके स्वागत में जहाँगीर महल बनवाया। जहाँगीर इस महल में एक दिन के लिए रुका था और इसीलिए इस महल को जहाँगीर महल कहते हैं। बेतवा नदी के किनारे पर बुंदेला राजाओं की छतरियाँ अपनी भव्यता की पहचान लिए खड़ी हैं, जहाँ बहुत सुन्दर और मोहक गुलाब-बाड़ी भी है। लक्ष्मी मंदिर की भव्यता देखने के लायक है। ऊँचे स्थान पर बना यह मंदिर अपनी कला और स्थापत्य का एक अद्भुत नमूना है और ओरछा जाने वालों को यहाँ भी जरूर जाना चाहिये। बेतवा नदी के किनारे कुछ देर बैठ कर नदी की जलधारा और सूर्योदय तथा सूर्यास्त का सुख उठाया जा सकता है।



श्री राम राजा सरकार के मंदिर के बगल में लाला हरदौल की बाड़ी है। ओरछा के राजा जुझार सिंह के छोटे भाई थे लाला हरदौल। यह मुगल बादशाह शाहजहाँ का दौर था। चूंकि बुंदेलखंड क्षेत्र पर मुगल कभी कब्जा नहीं कर पाए तो उन्होंने दोस्ती करना उचित समझा था। यह स्थिति वीर सिंह बुंदेला राजा के समय से थी। इसी क्रम में जहाँगीर के बेटे शाहजहाँ से राजा जुझार सिंह की मित्रता थी। परन्तु मुगलिया सेना जब-तब इधर-उधर आक्रमण कर बुंदेला साम्राज्य में उत्पात मचाया करती थी। लाला हरदौल ने मगर इधर सर्वजातीय एक अघोषित सेना का गठन कर लिया था जिसमें सभी जाति वर्ग के लोग थे जो कुश्ती, व्यायाम आदि के नाम पर एकत्रित होकर रहते थे और समय-समय पर होने वाली मुगलों के लूटपाट को रोकते थे। शाहजहाँ ने जुझार सिंह के मन में हरदौल

के प्रति नफरत भरनी शुरू कर दी। समानांतर सेना और जन-जन में लोकप्रियता को लेकर संदेह उत्पन्न किया। हरदौल अपनी भाभी को माँ समान मानते थे और उनकी किसी भी बात को नहीं काटते थे। शाहजहाँ ने इस रिश्ते पर भी सवाल उठाए और राजा के मन में शंका पैदा कर दी। एक दिन राजा ने रानी को अपनी कसम देकर कहा कि यदि उनका और हरदौल का रिश्ता पवित्र है तो रानी हरदौल को जहर का प्याला पीने को कहे। रानी बहुत रोई, गिड़गिड़ाई, मिन्नतें की मगर राजा नहीं माने। इधर हरदौल को भी इसकी खबर मिल गई थी। एक दिन रानी ने हरदौल के लिए खीर बनाई और उसमें जहर मिलाकर हरदौल से खीर खाने को कहा। राजा जुझार सिंह दरवाजे की ओट से सब देख-सुन रहे थे। हरदौल ने यह जानते हुए भी कि खीर में जहर है खुशी-खुशी खीर रानी के हाथों से ले ली और कहा कि आज मेरा खीर खाने का बहुत मन था भाभी माँ। रानी रो पड़ी। रानी ने हरदौल को मना किया कि लाला इसमें जहर है इसे मत पी, तेरे भैया ने कसम दी थी कि यदि रिश्ता पवित्र है तो जहर पिला कर दिखा। हरदौल ने रानी से कहा कि भाभी माँ मुझे पता है कि इस खीर में जहर है, और मैं इसे पियूँगा जिससे रिश्ते की लाज रख सकूँ। फिर हरदौल ने राजा जुझार सिंह को आवाज लगाई कि भईया ओट से निकल आओ, देखो मैं जहर पी रहा हूँ, तुमने बादशाह के कहने पर मुझ पर शक किया, भाभी माँ पर शक किया तो मैं इसे पियूँगा जिससे कि रिश्ते की पवित्रता पर कोई शक नहीं करे। इतना कहकर हरदौल ने वो खीर एक बार में पी डाली और अगले ही पल वह स्वर्ग सिंघार गए। बाद में शाहजहाँ ने राजा जुझार सिंह को धोखे से मार दिया और उसके चचेरे भाई को राजगद्दी पर बैठा दिया, जिसके बाद बुंदेल साम्राज्य कमजोर हो गया। कुछ समय बाद हरदौल की बहन की बेटी कुलजावती की शादी थी जो इस बात पर अड़ गई कि मामा हरदौल भात लायेंगे, तो ही ब्याह रचाऊँगी। ऐसा कहा जाता है कि भांजी की शादी में लाला हरदौल शरीर भात लेकर उपस्थित थे। तबसे आज तक पूरे बुंदेलखंड क्षेत्र में लोग अपनी बेटियों की शादी में पहला निमंत्रण पत्र लाला हरदौल की ड्योढ़ी पर रखते हैं।

सारे प्रमुख स्थान घूमकर हम लोग तीन बजे के करीब होटल लौट आए। हालांकि देर हो चुकी थी मगर गणेशजी भाई साहब ने भोजन करवाया। उसके बाद बच्चे कमरे में आराम करने चले गए और हम लोग मुँह हाथ धोकर कपड़े बदल कर कथा श्रवण करने बैठ गए। आज कथा में भगवान् ण का मथुरा से द्वारका प्रस्थान का चित्रण था। कथा के साथ-साथ भजन का आनंद लिया गया।

शाम को 7.15 बजे हम लोग ओरछा के किले में लाइट एंड साउंड शो देखने के लिए चल पड़े। किले में जब हम लोग पहुँचे तो शो शुरू होने वाला था। प्रति व्यक्ति सौ रुपये टिकट था। किले के बड़े से मैदान में दीवारों पर रोशनी, लेसर किरणों, रंगीन फोकस

लाइटों और ध्वनि के प्रयोग से दो घंटे का एक खूबसूरत शो प्रस्तुत किया गया जिसमें ओरछा के किले के निर्माण से लेकर तमाम युद्धों, लाला हरदौल की कहानी और सभी प्रमुख बातों को प्रगट करने का प्रयास किया गया जोकि अत्यंत सुन्दर और मनमोहक था। वहाँ उपस्थित सभी लोगों ने शो की समाप्ति पर इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। इसके तुरंत बाद हम लोग श्री राम राजा सरकार के दर्शन के लिए मंदिर परिसर में चले आये। आज हम लोगों ने वी.आई.पी. टिकट खरीद लिए और मंदिर खुलने, सलामी और पूजा के पश्चात् बहुत सुन्दर दर्शन लाभ लिये जोकि एक अद्भुत अनुभूति थी। फिर पिछले दिन की तरह हम लोग हनुमान मंदिर तक गए और प्रसाद लाभ प्राप्त किया। जब हनुमान मंदिर से निकल रहे थे तो हमने देखा कि हमारे महाराज जी भी अन्य भक्तों के साथ आये हुए थे। थोड़ी देर हम सभी लोग ओरछा के छोटे से बाजार में भ्रमण करते रहे। उसके पश्चात् एक हलवाई की दुकान पर अधिकांश लोगों ने महाराज जी के साथ मिठाई खाई और गरमा गरम दूध का सेवन किया। इसके बाद सब लोग होटल चले आये और विश्राम किया गया।

दिनांक 27.12.2023

आज कथा का समापन दिवस था और हमारी यात्रा का भी। सुबह सवेरे निकलने की तैयारी कर ली गई। शानदार नाश्ते के बाद सुबह 8 बजे से दोपहर 11 बजे तक कथा का श्रवण किया गया। आज ही अधिकांश भक्तों को भी निकलना था। इसलिए कथा का समय सुबह रखा गया था। कथा समापन के पश्चात चाय और सूक्ष्म जलपान का कार्यक्रम संपन्न हुआ। फिर महाराज जी से



विदाई ली गई। गणेशजी भाई साहब ने रास्ते के लिए भोजन आदि पैक करके दे दिया था। हम लोग 12 बजे के करीब होटल से निकल गए। ओरछा से बाहर आते ही एक स्थान है जहाँ शहीद चंद्रशेखर आजाद जी ने अपने क्रांतिकारी जीवन के कुछ वर्ष बिताये थे। उस स्थान को प्रणाम कर आगे बढ़े। पत्नी का मन दतिया जिले के माँ पीताम्बरा पीठ में बगुलामुखी माता के स्थान के दर्शन करने का था, तो कार दतिया की ओर मुड़ गई। बगुलामुखी माता को ही माँ पीताम्बरा भी कहते हैं जिन्हें पीले रंग से विशेष लगाव है। यह एक सिद्ध पीठ मानी जाती है। यह तांत्रिक पीठ भी है। माता का आशीर्वाद राज योग प्रदान करता है। ओरछा से दतिया करीब 50 किलोमीटर का रास्ता है जिसे हमने लगभग दो घंटों में तय किया। मंदिर के सामने सड़क के पार ही कार पार्किंग मिल गई। दोपहर का समय था, भीड़ नहीं के बराबर थी। हम लोगों ने प्रसाद लिया और बगुलामुखी माता के प्रेम से दर्शन किये। दर्शन करते करते दोपहर के तीन बज गए थे।

रास्ते में एक रेस्टोरेंट में रुककर खाना खाया गया, सफर के लिए कुरकुरे, नमकीन, बिस्किट, पानी, कोल्ड ड्रिंक आदि लेकर आगे बढ़ लिए। उरई पहुँचते-पहुँचते शाम हो गई थी। उरई के

बाद यह सोचकर कि सफर में भीड़-भाड़ नहीं मिलेगी तो आराम रहेगा, हम लोग बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे पर मुड़ गए। थोड़ी देर बाद ही अँधेरा हो गया। कोहरा भयंकर छाने लगा। कार से दस कदम आगे का दिखना बंद हो गया। तब लगा कि शायद बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे पर आने का निर्णय गलत हो गया था। हमने एक ट्रक के पीछे अपनी कार लगा दी। ईश्वर का नाम लेकर बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे का सफर तय किया गया। जब आगरा एक्सप्रेसवे पर आ गए तो तसल्ली हो गई। मगर कोहरा बढ़ता ही जा रहा था। आगरा एक्सप्रेसवे पर भी ट्रक के पीछे सुरक्षित दूरी बनाकर अपनी कार चलाते हुए रात के 1 बजे हम अपने घर लखनऊ पहुँचे। इस प्रकार इस यात्रा का विश्राम हुआ।

इस पूरी यात्रा के अंत में यह आभास हुआ कि झाँसी और ओरछा की एक छोटी-सी यात्रा कोई भी व्यक्ति तीन से चार दिन में कर सकता है। झाँसी रेल मार्ग और सड़क मार्ग दोनों मार्गों से पहुँचने के लिए सुगम है। रहने के लिए झाँसी और ओरछा दोनों स्थानों पर अच्छे और बजट वाले होटल बहुतायत में हैं। ऐतिहासिक महत्व, धार्मिक आस्था और प्राकृतिक छटा तीनों विशेषताओं के लिए यह यात्रा एक सही विकल्प सिद्ध होती है।

राजभाषा नियम, 1976

हिंदी के अनुमानित ज्ञान के आधार पर देश के राज्यों/संघ शासित प्रदेशों को तीन क्षेत्रों, यथा - क, ख, ग में परिभाषित किया गया है।

भाषा क्षेत्र	राज्य/संघ राज्य
‘क’	बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, उत्तराखंड राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य हैं।
‘ख’	गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य
‘ग’	उपरोक्त निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य

मेरी बीकानेर और जैसलमेर की सुनहरी यादें

यात्रा एक ऐसा शब्द जो हम सभी को रोमांच से भर देता है क्योंकि हम अपनी एक जैसी दिनचर्या से ऊबने लगते हैं और कुछ समय शहर के कोलाहल से दूर प्रकृति के निकट व्यतीत करना चाहते हैं, विशेषतः किसी नए स्थान पर जहाँ पहले कभी न गए हों। उस नई जगह जाने का उत्साह अलग ही होता है क्योंकि हम अपने मन में उस जगह को लेकर अनेक चित्रों की कल्पना कर रहे होते हैं। वहाँ पहुँचते की उत्सुकता अलग ही होती है। उस नये स्थान का वातावरण एवं भूदृश्य हमें बिल्कुल ताजी अनुभूति प्रदान करता है। इस आनंद की अनुभूति प्रत्येक मनुष्य में भिन्न होती है जैसे किसी को समुद्र तट पर अच्छा लगता है तो किसी को पहाड़ियाँ लुभाती हैं, कोई जंगलों में विचरण करने में रोमांचित होता है तो किसी को धरोहर स्थलों में वह अनुभव प्राप्त होता है। सभी को अपनी-अपनी प्रसन्नता का स्रोत मालूम होता है। प्रत्येक स्थान की अपनी विशेषता होती है जो उसे अन्य जगह से विशिष्ट बनाती है। ऐसा ही एक अति विशिष्ट स्थान है- राजस्थान, जहाँ की आतिथ्यशीलता सबसे भिन्न है जो मुझे हमेशा रोमांचित करती है। “पधारो म्हारे देश” उसी गुण की एक संकेतात्मक पंक्ति है।

मेरी सपरिवार यात्रा की शुरुआत पिछले वर्ष कानपुर से प्रयागराज बीकानेर सुपरफास्ट एक्सप्रेस में रात्रि 01:30 बजे बैठने से प्रारंभ हुई जिसने लगभग 20 घण्टे से अधिक यात्रा के बाद मुझे बीकानेर 10:30 बजे रात्रि में पहुँचाया। रेलगाड़ी से उतरते ही सबसे पहले हम होटल गए और यात्रा के दौरान हुई थकावट को एक अच्छी नींद से दूर किया। अगली सुबह हमने पूरी तरह से तरोताजा होकर नए शहर का भ्रमण प्रारंभ किया। परिवार साथ होने पर उनकी सुविधा एवं सुरक्षा की चिंता सदैव मन में रहती है इसलिए मेरी अधिकांश बुकिंग जैसे रेल, होटल, कैब आदि पहले से ही आरक्षित थी। बीकानेर, जैसलमेर के बाद राजस्थान का दूसरा सबसे बड़ा जिला है इसलिए सीमित समय होने के कारण हमने केवल प्रमुख पर्यटन स्थानों में ही घूमने के लिए योजना बनायी।

सर्वप्रथम हम लोग बीकानेर शहर में ही स्थित विश्व प्रसिद्ध करणी माता मन्दिर में दर्शन हेतु गए। यह मन्दिर अत्यंत अद्भुत है क्योंकि यहाँ हजारों की संख्या में चूहों का होना और उनका पूरे मन्दिर प्रांगण में स्वच्छंदता के साथ विचरण करना यहाँ की विशेषता है, जो विचित्र तो है ही परंतु विस्मृत करने वाला भी था। यहाँ लोग अपनी आस्था अनुसार करणी माता को प्रसाद चढ़ाते और चूहों को भी कुछ न कुछ खिलाते हैं। हम लोगों ने भी मन्दिर में नमन करके हाथ जोड़ते हुए करणी माँ से आशीर्वाद प्राप्त किया और अपने दूसरे गंतव्य जूनागढ़ किला की ओर बढ़ गए। यह

अरविंद कुमार जायसवाल
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II), उत्तर प्रदेश, लखनऊ



बीकानेर में ही स्थित एक दुर्ग है जिसे चिंतामणि के नाम से भी जाना जाता है। बीकानेर का आधुनिक शहर इसी किले के आस-पास बसा हुआ है। इसके बाद हम लोग लालगढ़ महल और संग्रहालय गए, यह महलनुमा संरचना भी काफी बड़ी है और उस काल की राजशाही को बखूबी प्रदर्शित करती है। विभिन्न प्रकार की कलाकृतियों और पुरावशेषों को देखकर मेरा मन और मस्तिष्क पुरातन समय में कल्पना के माध्यम से पहुँच गया और सोचने लगा कि 550 वर्ष पूर्व राजा-महाराजा की जीवनशैली कैसी होती थी! पहला दिन इन्हीं तीन जगहों पर ही व्यतीत हो गया और हम वापस अपने होटल लौट आये।

अगले दिन हमारी योजना जैसलमेर जाने की थी, जो बीकानेर से 332 कि.मी. दूर स्थित था। प्रातः 6 बजे होटल छोड़ने के बाद 11:30 बजे के आस-पास हम लोग जैसलमेर पहुँचे। यहाँ पहुँचते ही थोड़ा आराम करने के पश्चात हम लोग ‘जैसलमेर दुर्ग’ देखने गए। यह दुर्ग विश्व के गिने-चुने “जीवित दुर्गों” में से एक है। जीवित दुर्ग वे होते हैं जिनकी चार दीवारी के अन्दर ही लोग निवास करते हैं। आधुनिक जैसलमेर शहर भी इसी दुर्ग के आस-पास बसा हुआ है। यह दुर्ग पीले बलुआ पथर से निर्मित है जो सूर्यास्त के समय सुनहरी भंगिमा को चित्रित करता है जो सोने की भाँति प्रतीत होता है, इसीलिए इस दुर्ग को स्वर्ण दुर्ग या सोनार किला के नाम से भी जाना जाता है। इसके बाद हम लोगों ने जैसलमेर के स्थानीय बाज़ार का भ्रमण किया और थोड़ी बहुत खरीददारी भी की।

अगले दिन हम लोग जैसलमेर से 120 कि.मी. दूर स्थित तनोट माता मन्दिर गए। इस मंदिर की अपनी एक अलग मान्यता है। 1965 में हुए भारत-पाक युद्ध में पाकिस्तानी सेना द्वारा इस मन्दिर पर कई बार बमबारी की गयी किन्तु कोई भी बम इस मंदिर को क्षति नहीं पहुँचा सका। मंदिर के अन्दर पाकिस्तान द्वारा गिराए गए बमों को दर्शनार्थियों को दिखाने हेतु रखा भी गया है। यह सब देखकर मुझे मंदिर के भीतर एक अलौकिक शक्ति की अनुभूति

हुई। इसके बाद हम लोग यहाँ से 38 कि.मी. दूर स्थित लोंगेवाला युद्ध स्मारक स्थल गए। यह स्मारक भारतीय सैनिकों की वीरता की याद दिलाता है क्योंकि यहाँ 1971 में हुए लोंगेवाला युद्ध में 2000-3000 पाकिस्तानी सेना के हमले के विरुद्ध मात्र 200 भारतीय सैनिकों ने विजय प्राप्त की थी। यहाँ आकर मेरा मन गौरवान्वित हो गया। यहाँ विभिन्न प्रकार के टैंक, लड़ाकू विमान, युद्ध में प्रयुक्त होने वाले उपकरण देखे जा सकते हैं। सीमा के पास होने के कारण यह दोनों ही अत्यंत संवेदनशील क्षेत्र हैं। हमारा पूरा दिन इन्हीं जगहों पर बीत गया।

इसके पश्चात हम लोग सैम सैंड ड्यून्स में कैम्पिंग हेतु गए। इसको लेकर मैं अति उत्साहित था क्योंकि शहरी भीड़-भाड़ और प्रदूषण से दूर स्वच्छ आकाश में चंद्रमा और लाखों सितारों के नीचे कैम्पिंग का यह मेरा पहला अनुभव था। हमारी कॉटेज पहले से ही आरक्षित थी और खाने-पीने का प्रबंध भी वहीं था। कॉटेज की चाबियाँ मिलते ही थोड़ा आराम किया। अँधेरा होने के बाद जब हम लोग कॉटेज से निकले तो देखा कैम्प के बाहर बॉन फायर (लकड़ियाँ) जल रही थी और पारम्परिक लोक नृत्य का संगीत भी सुनाई दे रहा था, जिसमें मुझे समझ आये तीन शब्द थे- पधारो म्हारे देश। अब वाकई लग रहा था कि हम ठेठ राजस्थान में हैं। कैम्प में खाने-पीने के लिए स्थानीय व्यंजनों की व्यवस्था वास्तव में बहुत अच्छी थी।

रात काफी हो चुकी थी और थकान से नींद भी भारी पड़ रही थी और बिस्तर पर जाते ही आँख लग गई। सुबह जब हम उठे तो

हम बिल्कुल तरोताजा अनुभव कर रहे थे। कैम्प से बाहर निकलते ही नजारा अत्यंत मनमोहक था क्योंकि जहाँ देखो वही रेतीला मैदान दिखाई दिया, जैसी हमने कल्पना की थी। अब बारी थी ऊँट की सवारी की, यह काफी आसान लग रहा था पर था उतना ही मुश्किल। ऊँट पर बैठने के दौरान आगे गिरने की काफी सम्भावना होती है पर सवारी में आनन्द भी बहुत आया। इसके बाद हम लोग डेजर्ट सफारी पर गए। रेत के टीलों पर 4x4 एसयूवी पर सवारी करते हुए कभी ऊपर जाना, कभी नीचे आना बड़ा ही रोमांचकारी था। यह अनुभव भी अविस्मरणीय रहा। रात्रि होते ही हम लोग जैसलमेर स्थित अपने होटल में वापस लौट गए।

अगले दिन हम लोगों ने जैसलमेर स्थित पटवों की हवेली, जैन मंदिर, बड़ा बाग, गडीसर झील, सदर बाजार जैसे स्थानीय आकर्षण देखे। शाम को हम लोग जैसलमेर वॉर म्यूजियम देखने गए, यहाँ का लेजर शो अत्यंत आकर्षक था, जिसमें भारतीय सैनिकों की वीरता को दिखाया गया था। जैसलमेर में वैसे तो घूमने लायक बहुत सी जगहें हैं किंतु समय की कमी के कारण हमें वापसी भी करनी थी। वापसी में हम लोग जयपुर भी गए जहाँ हमने बाजार घूमने के साथ कुछ खरीददारी भी की। जयपुर से वातानुकूलित स्लीपर बस द्वारा हम लोग सोते-सोते ही अपने गंतव्य लखनऊ पहुँच गए। इस यात्रा के दौरान मुझे कुछ अलग ही अनुभव प्राप्त हुए, जो बेहद सुखद यादों से परिपूर्ण और अविस्मरणीय हैं।

क्या आप जानते हैं?

ऐसे देश जहाँ हिन्दी को विश्व की आधुनिक भाषा के रूप में पढ़ाया जाता है।

- अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा और यूरोप के देश

जंगल सफारी की रोमांचक यात्रा

2 जून 2023 की सुबह हमारे बैच के 13 सदस्य इंजीनियरिंग क लेज चौराहे पर मिले। सभी दोस्त बहुत खुश थे क्योंकि वे एक यादगार यात्रा पर निकलने जा रहे थे। यह यादगार यात्रा पूरे बैच के शासकीय सेवा में 25 वर्ष पूर्ण करने के उपलक्ष्य में आयोजित की जा रही थी। यह यात्रा लखनऊ से ‘चूका इको टूरिज्म स्पॉट’ पीलीभीत टाइगर रिजर्व, पीलीभीत तक तय की जानी थी।

हम सभी दोस्त एक साथ टैम्पो ट्रेवलर से लखनऊ से ‘चूका इको टूरिज्म स्पॉट’ तक की 274 कि. मी. की दूरी 07 घंटों में पूरी करके शाम को 04:00 बजे ‘चूका इको टूरिज्म स्पॉट’ पहुँचे, वहाँ पर पहले से बुक किये ‘थारु हट’ में हम लोग ठहरे।

पीलीभीत टाइगर रिजर्व उत्तर प्रदेश के पीलीभीत जिले और शाहजहाँपुर जिले में स्थित है। रिजर्व से कुछ नदियाँ जैसे शारदा, चूका और माला, खाननोट होकर निकलती हैं। साल वृक्ष के जंगलों, लंबी घास के मैदानों और नदियों से समय-समय पर बाढ़ द्वारा बनाए गये दलदल यहाँ की विशेषता हैं। रिजर्व का कुल क्षेत्रफल 603 वर्ग कि.मी. है। रिजर्व की सीमा पर शारदा सागर बाँध है जो 22 कि.मी. की लंबाई तक फैला है। यह भारत के 51 प्रोजेक्ट टाइगर रिजर्व में से एक है।

पीलीभीत टाइगर रिजर्व तराई क्षेत्र का एक बेहद खूबसूरत जंगल है। तराई का प्रमुख क्षेत्र होने के चलते यहाँ के जंगल में नदियों व नहरों का एक विस्तृत जाल बिछा है। साथ ही पीलीभीत टाइगर रिजर्व के कोर व बफर जंगलों में पानी के तमाम प्राकृतिक स्रोत मौजूद हैं। ऐसे में यह जंगल वन्यजीवों के लिहाज से काफी अनुकूल माना जाता है एवं टाइगर को सरवाइव करने के लिये जिस तरह के लैंडस्केप की आवश्यकता होती है पीलीभीत टाइगर रिजर्व ठीक वैसा ही जंगल है।

02 जून 2023 की शाम को हम सभी दोस्तों ने शारदा सागर चूका जलाशय में मोटर बोट से घूमने का आनन्द लिया साथ ही साथ जलाशय में उपस्थित जलीय जानवरों जैसे मछलियाँ, केकड़े, मगरमच्छ और घड़ियाल को स्पष्ट रूप से देखा। इसके साथ ही कुछ जंगली जानवर, जो कि शाम के समय सरोवर में पानी पीने आये थे वो भी दिखाई दिये।

दिनांक 03 जून 2023 की सुबह सभी दोस्त तैयार होकर जंगल सफारी के लिये खुली टाटा सफारी एवं जिप्सी सफारी से निकले, खुली गाड़ी से जंगल सफारी का आनन्द बहुत ही अद्भुत और प्रसन्नचित कर देने वाला था, सूरज का मध्यम प्रकाश, ठण्डी-ठण्डी हवा का स्पर्श, जंगली-फूलों की खुशबू एवं

दीपक श्रीवास्तव

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II), उत्तर प्रदेश, लखनऊ



चिड़ियों-पक्षियों के चहचहाने के माहौल ने सभी दोस्तों को रोमांचित कर दिया था। हम लोग प्रकृति की सुन्दरता को इतने करीब से देख रहे थे जिसका अन्दाजा हम लोगों को नहीं था।

आठ-दस फुट की कच्ची-पक्की सड़कों एवं छोटे-छोटे सरोवरों के पुलों पर हम लोगों की सफारी गाड़ी 20-30 प्रति कि. मी. की स्पीड से जंगलों के बीच होकर जा रही थी। यात्रा के प्रारम्भ में हम लोगों को जंगली मुर्गे, तीतर, बटेर, गिलहरी, उल्लू, बंदर, लंगूर इत्यादि दिखायी दिये तभी अचानक ड्राइवर ने गाड़ी में ब्रेक लगाई और हम लोगों को इशारों में ही चुप रहने के लिये कहा हम लोगों ने देखा की सामने एक मोर अपना पूरा पंख फैलाकर सड़क पर बीचों-बीच खड़ा था एवं कुछ सेकंडों में मोर वैसे ही पंख फैलाये 360° कोण पर घूम गया, जंगल सफारी में ‘मोर के नाचने’ का बहुत ही सुन्दर नजारा हम लोगों ने देखा। आगे बढ़ने पर हम लोगों को हिरण, भालू, बारहसिंघा, चीतल, सांभर, नील गाय, जंगली सुअर इत्यादि जानवर दिखाई दिये।

‘थारुहट’ से प्रारम्भ हुयी 15-20 कि.मी. की यात्रा अपने अंतिम पड़ाव पर पहुँच चुकी थी, जहाँ पर हम लोगों ने 10-15 मिनट में जलपान इत्यादि किया इसके पश्चात् हम लोग वापस ‘थारु हट’ के लिये निकले। अभी तक हम लोगों को जंगल के प्रमुख जानवर तेंदुआ एवं बाघ के दर्शन नहीं हुए थे।

हम लोग अभी पाँच कि.मी. ही वापस (पुरैना पुल) पर आये होंगे कि हमसे 100 मीटर आगे चल रही जिप्सी सफारी में बैठे दोस्तों ने इशारों में हम लोगों को रुकने के लिये कहा तभी हमारे ड्राइवर ने बताया कि सर ऊपर देखिये तेंदुआ, हम लोगों ने ऊपर की तरफ साल के लगभग 100 फीट ऊँचे वृक्ष के ऊपर तेंदुए को देखा, वो साल के दूसरे व तीसरे वृक्षों पर कूदता हुआ जमीन पर आकर जंगलों में ओझल हो गया।

हम लोग पुनः अपनी गाड़ी के 100 मीटर आगे खड़ी गाड़ी में बैठे लोगों के संकेतों का इंतजार करने लगे वो गाड़ी बांयी तरफ

सकरी कच्ची रोड पर मुड़ कर खड़ी हो गयी तभी हम लोगों को आगे जाने का इशारा किया हम लोग भी आगे बढ़े व उनकी जिप्सी के पीछे अपनी गाड़ी लगा लिये तभी दायीं तरफ के वृक्ष से बायें तरफ के वृक्ष की ओर हमारे सिर के ऊपर से होते हुए दूसरे तेंदुए ने छलांग लगायी। जंगल सफारी का यह अचंभित और भयभीत कर देने वाला क्षण था।

तभी हम लोगों के ड्राइवर ने इसी सकरी रोड पर 500 मीटर दूर हो रही हलचल को संज्ञान में लिया और हम लोगों को आगाह किया कि बाघ आ रहा है हम लोगों को दूर से बाघ दिखाई दिया लेकिन वो कुछ दूर हम लोग की तरफ आने के बाद बैठ गया 10 मिनट पश्चात् वो फिर हम लोगों की तरफ धीरे-धीरे आने लगा व 100 मीटर चलने के बाद हमारे दायीं तरफ बह रहे सरोवर की ओर मुड़ गया। हमारे ड्राइवर ने बताया कि सर वो पानी पीने सरोवर चला गया है। ड्राइवर ने अपनी गाड़ी वापस पीछे की ओर सरोवर के दूसरी तरफ पुल से होते हुये चलायी कि शायद बाघ दिख जाये लेकिन सरोवर के दूसरी तरफ आने पर न हम लोगों ने और न ही ड्राइवर ने बाघ की कोई हलचल नोटिस की।

हम लोग करीब 10 मिनट इस प्वाइन्ट पर खड़े रहे तभी हमारे ड्राइवर ने देखा कि बाघ, हम लोग जिस सकरी सड़क पर खड़े थे उस ओर आ रहा है। हमारे गाड़ी के ड्राइवर ने गाड़ी को बैक किया और वापस पुरैना पुल पर गाड़ी लगा ली। अब तक दो-तीन सफारी गाड़ी और हमारे आस-पास आ चुकी थी अब बाघ अपनी धीरे-धीरे चाल से, हम लोगों की उपस्थिति से अनजान हमारे 15 फीट की दूरी पर 10 फीट की कच्ची सड़क को पार करने वाला था, कुछ क्षणों के इंतजार के पश्चात् विशाल बाघ हम लोगों के सामने से गुजर गया यह जंगल सफारी का अविस्मणीय

क्षण था। इस पल को सभी साथियों ने अपने-अपने मोबाइल फोन पर रिकॉर्ड किया सभी साथी एक दूसरे को बधाई देने लगे।

तत्पश्चात् हम लोग वापस अपने क टेज में आ गये तथा नाश्ता करने के बाद खटीमा बाजार की ओर निकल गये और लौटते समय दूसरे रास्ते से वापस आये जिससे शारदा बांध की कुल 45 किलोमीटर की परिधि का पूरा चक्कर पूर्ण हुआ। लौटते समय हम लोगों ने शारदा जलाशय में कई वर्ग कि.मी. में कमल के फूल के आच्छादित क्षेत्र का भी अवलोकन किया जो कि मनमोहक था। दोपहर के बाद हम लोग वापस आये तथा दो घण्टे आराम करने के पश्चात् शारदा सरोवर पर पुनः कुछ देर सैर-सपाटा किये, यहीं पर हम लोगों ने फोटो भी खिंचवाये।

शाम को चाय पीने के बाद, 7:00 बजे से 10:30 बजे तक सभी ने गाना गाया और सम्भवतः दो-तीन लोगों ने जिन्दगी में पहली बार दोस्तों के सम्मुख गाना गाया। यह तीन-घंटे का पल एक दम रोमांच भरा तथा भाव विभोर कर देने वाला था। उसी में साथ-साथ आपस में हँसी-मजाक तथा एक-दूसरे की टांग खिंचाई भी चलती रही। रात्रि में भोजन के बाद फिर बातचीत का दौर जारी रहा और करीब 12:30-1:00 बजे सभी लोग सोने के लिए अपने-अपने कमरे में चले गये।

सुबह काफी लेट उठने के बाद नहा धोकर नाश्ते के बाद करीब 10:00 बजे हम लोगों ने लखनऊ के लिए प्रस्थान किया और गोला गोकर्णनाथ में महादेव का दर्शन करते हुए शाम 5:00 बजे लखनऊ पहुँच गये। रास्ते में आते समय अंताक्षरी के कई दौर चले तथा कुछ नाश्ता-पानी भी हुआ।

अतः इस यादगार यात्रा का अंत बहुत ही शानदार रहा।

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।

वह नर नहीं, नर-पशु निरा है और मृतक समान है।।

-राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त

शिव के चरणों में चार दिन: उज्जैन एवं ओंकारेश्वर यात्रा की आत्मिक अनुभूति

यात्रा की योजना व शुरुआत

जनवरी 2025 का पहला सप्ताह एक विशेष उत्साह लेकर आया। वर्ष के आरंभ को एक आध्यात्मिक रंग देने की भावना से प्रेरित होकर मैंने अपने परिवारक-पत्नी, बेटी और बेटे के साथ उज्जैन व ओंकारेश्वर की यात्रा की योजना बनाई। चार दिनों की इस यात्रा में दो दिन उज्जैन में और दो दिन नर्मदा के तट पर स्थित ममलेश्वर और ओंकारेश्वर में व्यतीत करने का निश्चय किया गया।

रेलयात्रा का अपना ही आकर्षण होता है। जैसे-जैसे रेल मध्य प्रदेश की धरती पर आगे बढ़ती, मन में एक अनुपम शांति का संचार होता गया। खेतों की हरियाली, छोटे-छोटे स्टेशन, और बदलते मौसम के साथ-साथ मन भी शिवमय होता गया।

उज्जैन का अनुभव: महाकाल की नगरी में

उज्जैन पहुँचते ही एक विशेष आध्यात्मिक वातावरण का अनुभव हुआ। स्टेशन पर उतरते ही महाकालेश्वर के जयघोष सुनाई देने लगे। शहर के कण-कण में भक्ति की महक थी।

महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन हेतु जैसे ही हम मंदिर पहुँचे, श्रद्धा और आस्था का सागर उमड़ पड़ा। भस्म आरती के लिए प्रातः तीन बजे मंदिर पहुँचना एक अलग ही अनुभव रहा। शिव के नीलवर्ण स्वरूप को भस्म से अलंकृत देखना जैसे आत्मा को परमशांति से भर देना था। मंदिर की प्राचीनता और उसकी ऊर्जा दोनों ही अभिभूत कर देने वाले थे।

इसके बाद हमने हरसिद्धि माता मंदिर, काल भैरव मंदिर और सांदीपनि आश्रम जैसे कई पवित्र स्थलों के दर्शन किए। हर एक स्थान पर शिव और उनके परिवार की उपस्थिति जैसे जीवंत रूप में महसूस होती रही।

महाकाल लोक: आस्था, भव्यता और आधुनिकता का संगम

महाकालेश्वर मंदिर के पीछे निर्मित महाकाल लोक केवल एक परिसर नहीं, बल्कि एक दिव्य अनुभव है, जहाँ पुरातनता और नवीनता का अद्भुत मेल देखने को मिलता है। जैसे ही हम 'नंदी द्वार' से प्रवेश करते हैं, एक अद्भुत ऊर्जा का संचार होता है। नंदी की विशाल प्रतिमा मानो स्वयं शिव के द्वारपाल बनकर श्रद्धालुओं का स्वागत कर रही हो।

आशीष कुमार

वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II), उत्तर प्रदेश, लखनऊ



चारों ओर लगी हुई सैकड़ों मूर्तियाँ शिव तांडव, सती अनुष्ठान, गंगा अवतरण, और रुद्र रूप में शिव पौराणिक कथाओं को जीवंत करती हैं। हर मूर्ति में इतनी जीवंतता है कि लगता है जैसे वो किसी क्षण बोल उठेंगी। यहाँ दीवारों पर उकेरी गई पेंटिंग्स और कलाकृतियाँ न केवल आँखों को सुख देती हैं, बल्कि इतिहास और संस्कृति की जीवंत झलक भी दिखाती हैं।

रात्रि के समय जब पूरा परिसर रौशनी से नहाया होता है, तो वह दृश्य अलौकिक हो उठता है। चलते हुए भक्तजन, गूँजते मंत्र, और धीमी संगीत ध्वनि - सब मिलकर ऐसा वातावरण रचते हैं जहाँ शरीर नहीं, आत्मा यात्रा करती है। महाकाल लोक एक ऐसा प्रयास है जो उज्जैन को वैश्विक धार्मिक मानचित्र पर और भी सशक्त बनाता है।

शिप्रा तट पर आरती का दिव्य अनुभव

महाकालेश्वर के दर्शन के पश्चात् यदि कोई स्थान आत्मा को गहराई तक स्पर्श करता है, तो वह है शिप्रा नदी का तट, विशेषकर रामघाट। यहाँ पहुँचते ही मन एक अद्भुत शांति का अनुभव करता है। नदी का शीतल जल, हिलोरें मारती लहरें, और किनारे बैठकर मंत्रोच्चार करते साधु-संत - यह सब मिलकर एक गहरी आध्यात्मिक अनुभूति का सृजन करते हैं।

हमने सायंकाल आरती में भाग लिया। जैसे ही सूर्य अस्ताचल को जाने लगा, वैसे ही घाट पर दीपों की रेखाएँ जल उठीं। पुजारियों ने शंख ध्वनि के साथ आरती आरंभ की, और पूरे वातावरण में एक दिव्य कंपन फैल गया। श्रद्धालु दीप जलाकर नदी में प्रवाहित कर रहे थे - एक प्रतीक था यह अपने अज्ञान, अपने दुःखों को छोड़ने का। वहाँ बैठकर, नदी की लहरों को निहारते हुए, ऐसा लगा जैसे समय थम गया हो। यहीं आकर समझ में आता है कि क्यों इस नगरी को 'मोक्षदायिनी' कहा गया है।

काल भैरव मंदिर: रहस्य और आस्था का अद्भुत संगम

उज्जैन की धरती पर स्थित काल भैरव मंदिर केवल एक तीर्थ नहीं, बल्कि रहस्य, आस्था और परंपरा का अनूठा मेल है। महाकालेश्वर मंदिर से कुछ ही दूरी पर स्थित यह मंदिर भैरव उपासना का केंद्र है। यहाँ भगवान काल भैरव को मदिरा अर्पण करने की परंपरा, श्रद्धालुओं को चकित भी करती है और भावविभोर भी। मंदिर के बाहर ही एक छोटी-सी दुकान से श्रद्धालु प्रसाद के साथ एक मदिरा की बोतल भी लेते हैं, जो सीधे मंदिर में चढ़ाई जाती है। पुजारी विशेष विधि से मदिरा को पात्र में भरकर काल भैरव की मूर्ति के होठों से लगाते हैं और यह चमत्कार जैसा दृश्य होता है कि मूर्ति स्वयं उसे अंदर ग्रहण करती प्रतीत होती है। इस परंपरा के पीछे गहरी तांत्रिक मान्यता है, जो कहती है कि काल भैरव तंत्र-साधना के अधिष्ठाता हैं, और उन्हें भोग के रूप में मदिरा अर्पित करना एक विशेष साधना का अंग है। मंदिर का वातावरण गूढ़ और अलौकिक प्रतीत होता है। चारों ओर से धूप, अगरबत्ती, घंटियों की ध्वनि और भैरव स्रोतों का पाठ यह सब मिलकर एक गहन अनुभूति का संचार करते हैं। काल भैरव मंदिर उज्जैन की उस रहस्यमयी परंपरा का प्रतीक है, जो आस्था के साथ-साथ भारत की विविधता और सांस्कृतिक गहराई को भी दर्शाता है।

स्थानीय बाज़ार एवं खान-पान

शहर के बाज़ारों में भ्रमण करते समय स्थानीय कला और संस्कृति का जीवंत प्रदर्शन देखने को मिला। रंग-बिरंगी चूड़ियाँ, रुद्राक्ष की मालाएँ, लकड़ी की मूर्तियाँ और पूजन सामग्री से सजे बाज़ारों में घूमते हुए मेरी बेटी और पत्नी ने कई चीज़ें खरीदीं।

भोजन की बात करें तो गरमा गरम पोहा-जलेबी, दाल-बाफला और कुल्हड़ में परोसी गई छाछ ने स्वाद का एक नया आयाम प्रस्तुत किया।

यात्रा का आत्मिक प्रभाव और मन के भाव

उज्जैन की यह यात्रा केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं थी, यह एक आंतरिक यात्रा भी थी स्वयं को जानने और अपने भीतर के शिव को पहचानने की। महाकालेश्वर के दर्शन के समय जिस ऊर्जा और श्रद्धा का अनुभव हुआ, वह शब्दों में बाँध पाना कठिन है। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे कोई अदृश्य शक्ति हमारे साथ है, हमारी हर भावना को समझ रही है।

महाकाल लोक में घूमते समय लगा मानो हम किसी और ही लोक में प्रवेश कर गए हों एक ऐसा लोक जहाँ केवल शांति, आस्था

और दिव्यता का वास है। वहाँ की भव्यता और शिल्पकला ने हमें हमारी समृद्ध संस्कृति और धर्म के गौरव की याद दिलाई। हर मूर्ति, हर शिलालेख ने कुछ न कुछ कहा बस सुनने का भाव चाहिए था। शिप्रा तट पर बैठकर जब सूर्य अस्त हो रहा था और घाटों पर दीप जल रहे थे, तब मन स्वतः ध्यान की अवस्था में चला गया। जीवन की आपाधापी, भागदौड़ और तनाव कुछ समय के लिए जैसे विलीन हो गए। वहीं महसूस हुआ कि उज्जैन एक ऐसा नगर है जहाँ केवल देह नहीं, आत्मा भी विश्राम पाती है। काल भैरव मंदिर का अनुभव हमें यह भी सिखा गया कि धर्म केवल शुद्धता और मर्यादा तक सीमित नहीं, वह विविधता में भी सुंदर है। वहाँ की परंपराएँ हमारे धर्म की सहिष्णुता और गहराई को दर्शाती हैं।

ओंकारेश्वर और ममलेश्वर: नर्मदा की गोद में शिव का वास

तीसरे दिन हम ओंकारेश्वर और ममलेश्वर के दर्शन हेतु रवाना हुए। नर्मदा के किनारे स्थित ये स्थल प्राकृतिक सौंदर्य और अध्यात्म का अद्भुत संगम प्रस्तुत करते हैं। ओंकार पर्वत के बीचों-बीच स्थित ओंकारेश्वर मंदिर तक पहुँचने के लिए हमने नाव से यात्रा की। नर्मदा की शांत लहरों पर तैरते हुए मंदिर की झलक पाना एक रोमांचक अनुभव रहा। मंदिर में पूजा-अर्चना के बाद हमने घाट पर कुछ समय व्यतीत किया। माँ नर्मदा की लहरों में हाथ डालना और उनका शीतल स्पर्श पाना एक मातृत्व अनुभव जैसा था। ममलेश्वर मंदिर, जो ओंकारेश्वर का जुड़वाँ स्वरूप है, वहाँ की शांति और कम भीड़-भाड़ के कारण विशेष अनुभूति प्रदान करता है।

निष्कर्ष: एक आत्मिक संवाद की पूर्णता

चार दिनों की यह यात्रा न केवल स्थलों की भौगोलिक यात्रा थी, अपितु यह आत्मा की अंतर्यात्रा भी थी। महाकाल की नगरी उज्जैन में समय से परे जाकर शिव के साक्षात् दर्शन हुए, तो ओंकारेश्वर में प्रकृति और अध्यात्म के अद्वितीय संगम का साक्षात्कार हुआ।

इस यात्रा ने मन को निर्मल किया, रिश्तों को और सुदृढ़ किया और जीवन को एक नई दिशा दी। यह अनुभव जीवन की आपाधापी में कुछ पल ठहरकर ईश्वर के सान्निध्य को अनुभव करने का अवसर था- ऐसा अवसर जो बार-बार नहीं मिलता।

उज्जैन यात्रा मेरे जीवन की एक अमूल्य स्मृति बन गई है। यहाँ आकर न केवल देवताओं के दर्शन हुए, बल्कि अपने भीतर के विश्वास, श्रद्धा और अध्यात्म को भी एक नई दिशा मिली।

कुम्भ मेला

कुम्भ मेला भारत में चार स्थानों अर्थात् प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में आयोजित किया जाता है। प्रयागराज में पवित्र गंगा, यमुना एवं सरस्वती नदियों के मिलन तट (संगम तट) पर माघ मास में एवं हरिद्वार में पवित्र गंगा नदी के तट पर चैत्र मास में लगने वाले मेले को कुम्भ मेला (जब बृहस्पति कुम्भ राशि में होता है और सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है) उज्जैन में पवित्र क्षिप्रा नदी के तट पर बैसाख माह में लगने वाले कुम्भ मेला एवं नासिक में पवित्र गोदावरी नदी के तट पर लगने वाले कुम्भ मेला को सिंहस्थ कुम्भ भी कहते हैं (यह मेला बृहस्पति ग्रह के सिंह राशि में प्रवेश करने के उत्सव के अवसर पर पड़ने के कारण सिंहस्थ मेला कहा जाता है)। प्रयागराज में प्रत्येक वर्ष माघ माह में लगने वाले मेले को कुम्भ, छह वर्ष के अन्तराल में अर्धकुम्भ तथा बारह वर्ष के अन्तराल में महाकुम्भ की संज्ञा दी गयी है।

भारतीय परम्परा के अनुसार देवताओं एवं दानवों के बीच अमृत प्राप्त करने के लिये समुद्र मंथन किया गया जिसमें कई प्रकार के रत्न प्राप्त हुये जिनको देवों एवं दानवों के मध्य बाँटा गया तथा अन्त में अमृत भी निकला, जिसको प्राप्त करने के लिये देवों एवं दानवों के मध्य संघर्ष होने लगा और जब देवताओं द्वारा अमृत कलश को ले जाया जा रहा था तो जहाँ-जहाँ कलश से अमृत की बूँदें गिरी वहाँ-वहाँ पर कुम्भ मेला का आयोजन किया जाता है।

प्रयागराज में लगने वाले कुम्भ मेला अति विशाल क्षेत्र में ऐसे फैला रहता है जैसे अस्थायी तम्बुओं का चिरस्थायी शहर बन गया हो। कुम्भ मेला दिखता तो भौतिक रूप में है परन्तु इसमें अनन्त दैवीय शक्तियों का, संतों-महात्माओं एवं श्रद्धालुओं के माध्यम से समावेश होता है। कुम्भ मेला अध्यात्म का चरमोत्कर्ष है। विभिन्न मतावलम्बियों के अखाड़ों एवं पाण्डालों से निकलने वाली कर्णप्रिय दैवीय वाणी कानों के माध्यम से सीधे आत्मा को जागृत करती है। अखाड़ों के साधु संतों द्वारा शाही यात्रा एवं स्नान की आह्लादित करने वाला दृश्य मानो संगम से पुनः रत्नों की प्राप्ति होगी।

अवधेश कुमार

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II), उत्तर प्रदेश, लखनऊ



गृहस्थ जीवन की जिम्मेदारियों को पूर्ण कर श्रद्धालुओं द्वारा एक मास का कल्पवास किया जाता है। कल्पवास सूर्य के मकर राशि में प्रवेश करने के साथ आरम्भ होकर एक माह तक चलता है जिसमें प्रत्येक दिन ब्रह्म मुहूर्त में स्नान के साथ आरम्भ होकर सात्विक जीवन जीने का अभ्यास किया जाता है तथा धार्मिक कार्यों में संलग्न रहकर वेदाध्ययन एवं वेद श्रवण किया जाता है। दिन में केवल एक बार ही अल्पाहार ग्रहण किया जाता है। यह मान्यता है कि कल्पवास से मनुष्य के सभी सांसारिक कार्य पूर्ण होते हैं तथा अन्त में वह जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त होकर स्वर्गलोक को प्राप्त करता है। कुम्भ में स्नान करने से अक्षय फल की प्राप्ति होती है। कुम्भ मेले के प्रमुख स्नान क्रमशः पौष पूर्णिमा, मकर संक्रान्ति, मौनी अमावस्या, वसन्त पंचमी, माघ पूर्णिमा एवं महाशिवरात्रि हैं।

कुम्भ मेला सामाजिक एकता को बल प्रदान करता है तथा जाति भिन्नता को खत्म कर एक सूत्र में पिरोने का कार्य करता है एवं कुम्भ मेला भारत की सभी दिशाओं की संस्कृति का संगम है। एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी में संस्कारों का संवहन करने वाली परम्परा है- कुम्भ मेला। विद्यार्थियों के लिये कुम्भ मेला नवाचार है। कुम्भ मेला विश्व के लिये साहित्य लेखन, प्रबन्धन पाठ, अध्यात्म, योग/क्रियायोग, साधना एवं सनातन को जानने का माध्यम है। कुम्भ मेला समाज के प्रत्येक वर्ग के लिये भौतिक जीवन को सिंचित करने वाला अर्थतंत्र भी है।

हिन्दी देश की एकता की ऐसी कड़ी है, जिसे मजबूत करना प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है।

-श्रीमती इन्दिरा गाँधी

ऑफिसनामा

प्रस्तुत कहानी के पात्र उसी तरह पूर्णतया काल्पनिक हैं जैसे कि ये कहानी। वास्तविकता से दूर फिर भी हम सबके करीब रखने की कोशिश की गयी है। कथा लखनऊ में स्थित ऑडिट भवन को रखने का ध्येय केवल पाठकों को कहानी से करीब लाने के लिए किया गया है। फिर भी अगर किसी परिस्थिति में कुछ मिलता-जुलता अनुभव हो तो इसे कृपया केवल संयोग ही समझें। यह कहानी ऑफिसनामा की पहली कहानी है आशा करता हूँ मेरा प्रयास आप सबको पसंद आएगा।

कहानी 1

“डिजिटल सियापा और चंदन का साइबर जासूस”

किरदार

- ❖ महाराज मिश्रीलाल (वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी): 55 साल के जिंदादिल अफसर, जिनकी मुँछें लखनऊ की नवाबी शान की मिसाल हैं। हर फाइल पर “जाँच हो” लिखना उनका जुनून है। कंप्यूटर और साइबर दुनिया को “डिजिटल जादूगरी” मानते हैं, लेकिन कर्मचारियों की गलतियों पर हँसकर माहौल हल्का कर देते हैं। उनकी मेज पर रसगुल्लों का डिब्बा और एक पुराना ट्रांजिस्टर हमेशा रहता है।
- ❖ चंदन सिंह (सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी): 28 साल का चतुर और चुलबुला युवा, जो स्मार्टफोन और साइबर जासूसी का शौकीन है। हर डिजिटल मुश्किल का मज़ेदार और चालाकी भरा हल निकालता है। मीटिंग में अवधी चुटकुले सुनाकर सबको हँसाता है। उसका नारा है, “साइबर हो या सियापा, चंदन सब ठीक कर देगा!”
- ❖ गोपाल गुप्ता (सीनियर ऑडिटर): 50 साल का पुराने ख्यालों वाला क्लर्क, जो हर नियम को रटता है, लेकिन कंप्यूटर को “शैतानी डब्बा” कहता है। साइबर सुरक्षा को “दिल्ली की साजिश” मानता है। उसकी जेब में हमेशा एक पुराना नोटपैड और चाय के बिस्किट के टुकड़े रहते हैं।
- ❖ किरन कुमारी (ऑडिटर): 24 साल की जोशीली ऑडिटर, जो पर्यावरण और “ग्रीन ऑफिस” की हिमायती है। डिजिटल सिस्टम से थोड़ा डरती है, लेकिन चंदन की साइबर जासूसी में उत्साह से साथ देती है शायद चंदन के प्रति थोड़ा झुकाव भी है। हैकिंग को “डिजिटल भूत” कहती है और ऑफिस में हरियाली लाने का सपना देखती है।

वर्ष 2020 की एक उमस भरी सुबह, लखनऊ के एजी

प्रशांत कुमार श्रेष्ठ

वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II), उत्तर प्रदेश, लखनऊ



ऑफिस में, जहाँ गोमती की हवा फाइलों को हल्की टंडक देती थी, एक डिजिटल तूफान आ गया। ऑफिस का नया डिजिटल ऑडिट सिस्टम, जिसे हाल ही में लॉन्च किया गया था, अचानक ठप हो गया। महत्वपूर्ण ऑडिट फाइलें, ड्राइव से गायब हो गईं, और कर्मचारियों के ईमेल में अजीब संदेश आने लगे, जैसे: “रसगुल्ले खाओ, पासवर्ड बताओ!” और “गोमती की सैर करो, फाइलें लौटाओ!” सबसे हैरानी की बात? ऑफिस के प्रिंटर ने अपने आप “लखनवी शायरी” छापनी शुरू कर दी, जिसमें लिखा था: “डिजिटल दुनिया में, चोर है नया नवाब!”

महाराज मिश्रीलाल सर, अपनी कुर्सी पर मुँछें सहलाते हुए, कंप्यूटर स्क्रीन को घूर रहे थे। “ये क्या डिजिटल सियापा है?” उन्होंने गुस्से में कहा। “हमारी फाइलें हवा में उड़ गईं, और प्रिंटर शायरी छाप रहा है? ये तो ऑफिस की नवाबी इज्जत की जलेबी बन गयी! चंदन, इस साइबर भूत को भगाओ, वरना मैं इस कंप्यूटर को गोमती में डुबकी लगवाऊँगा!”

गोपाल गुप्ता सर, बिस्किट चबाते हुए बोले, “सर, मैंने कहा था, ये डिजिटल डब्बे शैतानी हैं। मेरे ज़माने में रजिस्टर में सब सुरक्षित था। ये साइबर-वाइबर तो दिल्ली की साजिश है!” मिश्रीलाल सर ने तंज कसा, “गुप्ता जी, आपके रजिस्टर में तो चाय के दाग सुरक्षित थे! कुछ ढंग का सुझाओ, वरना तुम्हारा बिस्किट जब्त!”

तभी, चंदन सिंह, अपनी चमकीली नीली शर्ट और शरारती मुस्कान के साथ आगे आए। “सर,” उन्होंने अवधी ठसक में कहा, “ये कोई साइबर भूत नहीं, लखनवी हैकर का डिजिटल तमाशा है। मुझे तीन दिन दीजिए, मैं इसे अमीनाबाद की गलियों से पकड़ लाऊँगा!” मिश्रीलाल सर ने हामी भरी, लेकिन चेताया, “चंदन, अगर तुम फेल हुए, तो तुम्हारा स्मार्टफोन रूमी दरवाजे पर सजाया जाएगा!”

चंदन का साइबर जासूसी खेल

➤ पहला दिन: चंदन सर ने डिजिटल सियापा की जाँच शुरू की,

जैसे कोई लखनवी जासूस गज़ल की पंक्तियाँ जोड़ रहा हो। उन्होंने ड्राइव का लॉग चेक किया और पाया कि फाइलें डिलीट नहीं हुईं, बल्कि एक अज्ञात फोल्डर “गोमती शायर 2020” में छिपा दी गई। ईमेल हैक का स्रोत ऑफिस के ही वाई-फाई से जुड़ा था। चंदन सर ने ऑफिस में सुराग तलाशे। गुप्ता सर के डेस्क पर एक पुराना नोटपैड मिला, जिसमें “पासवर्ड: Rasgulla123” लिखा था।

चंदन सर ने किरन मैडम को बुलाया। “किरन मैडम, तुम मेरी साइबर जोड़ीदार बनो। ये हैकर कोई बाहर का नहीं, ऑफिस का ही शायर है!” किरन मैडम ने उत्साह में कहा, “चंदन सर, ये तो डिजिटल भूत का थ्रिलर है! मैं तुलसी के गमले के साथ जासूसी करूँगी!” चंदन सर ने गुप्ता सर पर नज़र रखी। गुप्ता सर दिनभर कंप्यूटर पर “पासवर्ड भूल गए” बटन दबाते और बिस्किट के टुकड़े कीबोर्ड पर गिराते। चंदन सर ने पूछा, “गुप्ता सर, आपका पासवर्ड Rasgulla123 क्यों?” गुप्ता सर ने हँसते हुए कहा, “चंदन सर, ये तो मेरी नवाबी भूख का राज है!” लेकिन चंदन सर को शक हुआ।

- दूसरा दिन: चंदन सर ने एक चटपटा डिजिटल जाल बिछाया। उन्होंने नकली ईमेल भेजा: “सभी कर्मचारियों के पासवर्ड चेक किए जाएँगे। Rasgulla123 इस्तेमाल करने वालों को चाय बनानी पड़ेगी!” यह पढ़कर गुप्ता सर घबरा गए और तुरंत अपना पासवर्ड बदलने लगे। चंदन सर ने ऑफिस के वाई-फाई लॉग चेक किए और पाया कि गुप्ता सर ने गलती से एक फिशिंग लिंक पर क्लिक किया था, जिससे हैकर को ऑफिस सिस्टम की एक्सेस मिल गई।

चंदन सर ने किरन मैडम के साथ शाम को ऑफिस का सिस्टम स्कैन किया। उन्होंने पाया कि हैकर ने प्रिंटर को हैक कर शायरी छापने का प्रोग्राम डाला था। किरन मैडम ने सुझाव दिया, “चंदन सर, क्यों न हम प्रिंटर में तुलसी की तस्वीर प्रिंट करें? हैकर डरेगा, और मेरा ग्रीन ऑफिस बनेगा!” चंदन सर ने हँसते हुए कहा, “किरन मैडम, तुम तो साइबर दुनिया को भी हरियाली दे दोगी।”

- तीसरा दिन: चंदन सर ने हैकर को पकड़ने के लिए एक डिजिटल चारा डाला। उन्होंने नकली फाइल “Top Secret Rasgulla Audit” बनाई और ड्राइव में डाली। जैसे ही हैकर ने फाइल खोली, चंदन सर का ट्रैकर एक्टिवेट हुआ। हैकर का आईपी ऑफिस के पुराने कंप्यूटर से जुड़ा था, जो स्टोर रूम में पड़ा था। चंदन सर ने स्टोर रूम में छापा मारा और पाया कि गुप्ता सर वहाँ बैठकर पुराने कंप्यूटर पर “हैकिंग ट्यूटोरियल” देख रहे थे।

गुप्ता सर ने हकलाते हुए कबूल किया, “चंदन जी, मैंने यूट्यूब पर हैकिंग सीखी थी, ताकि डिजिटल सिस्टम को बंद कर रजिस्टर वापस लाऊँ। लेकिन ये शायरी और फाइलें छिपाना मेरा आइडिया नहीं था! मैंने गलती से फिशिंग लिंक खोला, और कोई बाहर का हैकर हमारे सिस्टम में घुस गया!” चंदन सर ने लखनवी अंदाज में कहा, “गुप्ता जी, आप तो साइबर नवाब बन गए, लेकिन गलत गज़ल गा बैठे!”

चंदन का चटपटा साइबर हल

चंदन सर ने मिश्रीलाल सर को सारी कहानी सुनाई। मिश्रीलाल सर हँसते-हँसते अपनी मूँछें सहलाने लगे। “चंदन, तुम तो लखनऊ का साइबर ग़ालिब हो! गुप्ता जी, आपकी हैकिंग तो रसगुल्ले जितनी मासूम थी! अब इसका क्या करें?” चंदन सर ने एक मस्तमौजी हल निकाला। उन्होंने गुप्ता सर को “साइबर जागरूकता कमेटी” का इंचार्ज बनाया। गुप्ता सर को अब हर हफ्ते कर्मचारियों को फिशिंग और पासवर्ड सुरक्षा की ट्रेनिंग देनी थी, और बदले में उन्हें हजरतगंज से रसगुल्ले मिलते। गुप्ता सर खुशी-खुशी मान गए और बोले, “चंदन जी, आपने मेरी हैकिंग को साइबर शायरी में बदल दिया!”

चंदन सर ने ऑफिस की साइबर सुरक्षा बढ़ाने के लिए फायरवॉल और दो-चरणीय सत्यापन लागू किया। किरन मैडम ने सुझाव दिया, “चंदन सर, क्यों न हम हर कंप्यूटर पर तुलसी का व लपेपर लगाएँ? हैकर डरेगा, और मेरा ग्रीन ऑफिस बनेगा!” चंदन सर ने हँसते हुए कहा, “किरन मैडम, आप तो साइबर दुनिया को गोमती रिवर फ्रंट का हरा-भरा किनारा बना दोगी!” चंदन सर ने बिजली बचाने के लिए सर्वर को सोलर पैनल से भी जोड़ दिया। मिश्रीलाल सर ने तारीफ की, “चंदन, तुमने इस डिजिटल सियापे को लखनवी नवाबी से सुलझा दिया!” कुछ हफ्तों बाद, ऑफिस का डिजिटल सिस्टम सुरक्षित हो गया। गुप्ता सर की साइबर जागरूकता क्लास ऑफिस की शान बन गई, और कर्मचारी मजेदार अंदाज में पासवर्ड बदलने लगे। किरन मैडम का ग्रीन ऑफिस अब दस गमलों और दो सोलर लाइट्स से चमक रहा था।

मिश्रीलाल सर ने चंदन सर की तारीफ करते हुए कहा, “चंदन, तुमने इस साइबर भूत को भूलभुलैया से निकालकर इमामबाड़े तक सजा दिया। अब बताओ, इनाम में क्या चाहिए?” चंदन सर ने शरारती अंदाज में कहा, “सर, बस एक नया वाई-फाई राउटर मँगवा दीजिए। ये वाला मेरे चुटकुलों से थक गया है!” मिश्रीलाल सर हँसते-हँसते नए वाई-फाई राउटर खरीदने की GeM फाइल पर “अनुमोदित” लिखने लगे।

बच्चों का सकारात्मक पालन-पोषण

बच्चों के शारीरिक और मानसिक जीवन का गठन बहुत कुछ अभिभावकों पर निर्भर करता है। पालन पोषण से सम्बन्ध रखने वाली सामान्य-सी बातें भी बच्चों के जीवन में महत्वपूर्ण प्रभाव डालती हैं। वैसे प्रत्येक बच्चे के स्वभाव, संस्कार, मूल प्रवृत्तियों में अपनी कुछ न कुछ अलग विशेषतायें होती हैं, फिर भी माँ-बाप द्वारा बच्चों का पालन पोषण उनके विकास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अच्छी तरह खाद पानी देकर, काट-छांट करके माली पौधों को अधिक उपयोगी और फलदायी बना सकता है। उपेक्षा, साज-सम्राज के अभाव में मूल्यवान पौधा भी सूख जायेगा या अविकसित रह जायेगा जिससे मधुर फलों की भी कोई आशा नहीं की जा सकती। इसी तरह बच्चों का ठीक-ठीक पालन पोषण किया जाए, उनकी शिक्षा का समुचित ध्यान रखा जाए तो प्रत्येक बच्चा उत्कृष्ट और महान व्यक्ति बन सकता है। इसके विपरीत सही पालन पोषण न होने पर तथा बच्चों के निर्माण में ध्यान न देने से होनहार बालक भी अविकसित रह जाते हैं।

बाल्यकाल में जिन आदतों की नींव पड़ जाती है वे ही सारे जीवन भर अपना प्रभाव डालती रहती हैं। बचपन में पड़े संस्कार, भावनाएं जीवन का एक प्रमुख अंग बन जाते हैं। वस्तुतः बाल्यकाल सम्पूर्ण जीवन की नींव है। बच्चों की कोमल मनोभूमि पर पड़े हुए विभिन्न प्रभाव उसके मानस पटल पर चित्रवत् अंकित हो जाते हैं। अच्छा या बुरा जैसा भी प्रभाव बच्चों पर पड़ता है वैसे ही वे बन जाते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि बच्चों पर अच्छा प्रभाव पड़े, उन्हें अच्छाइयों की प्रेरणा मिले। यह सब माता-पिता के ऊपर ही निर्भर है। बच्चों का पालन पोषण एक महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व है। इसे पूर्ण करने के लिए उन्हें काफी समझदारी, ज्ञान, विचारशीलता से काम लेना आवश्यक है।

कई माता पिता बच्चों को आवश्यकता से अधिक प्यार, स्नेह करते हैं। हालाँकि बच्चों के लिए स्नेह, प्यार दुलार की उतनी ही आवश्यकता है जितनी उन्हें खिलाने-पिलाने की। अभिभावकों के प्यार से बच्चों का मानसिक विकास होता है। उनके जीवन में सरसता पैदा होती है उनका व्यक्तित्व पुष्ट बनता है किन्तु अत्यधिक दुलार-प्यार बच्चों के जीवन में अनेक बुराइयाँ पैदा कर देता है। ऐसे बच्चे आत्मनिर्भर, स्वावलम्बी नहीं बन पाते। वे अपने प्रत्येक काम की पूर्ति दूसरों से चाहते हैं। परावलम्बन, आलस्य, आरामतलबी, फिजूलखर्ची, आदि बुराइयाँ माता-पिता की उन सामान्य-सी भूलों से ही पैदा होती हैं जो बच्चों के लालन-पालन, शिक्षा-दीक्षा में उन्होंने दुलार-प्यार वश कीं। यह एक आम बात है कि “लाड़ले बच्चे अक्सर बिगड़ जाते हैं।” ऐसे बच्चों में जिन्दगी



रुचि जायसवाल

कनिष्ठ अनुवादक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II), उत्तर प्रदेश, लखनऊ

के कठिन दिनों में चलने की शक्ति नष्ट हो जाती है।

प्रत्येक बालक में अपनी एक जन्म जात प्रतिभा होती है। एक विशेषता होती है और यदि बच्चे की इस मूलभूत प्रतिभा, प्रवृत्ति को ध्यान में रखकर उसी दिशा में उसे बढ़ाया जाय तो वह एक दिन असाधारण स्थिति प्राप्त कर सकता है। इसके विपरीत यदि बालक को उसकी मूल प्रवृत्ति, प्रतिभा के विपरीत चलाया जाएगा तो वह विशेष सफलता, विकास की स्थिति प्राप्त करने में असमर्थ रहेगा। यह आवश्यक है कि माता-पिता बच्चे की मूल प्रवृत्ति, मूल प्रतिभा को जानें, पहचानें और उसी के अनुरूप उसे विकसित होने की दिशा, साधन, सुविधाएं प्रदान करें। जो माता-पिता अपने ही दृष्टिकोण से अपनी इच्छानुसार बच्चे का भविष्य देखना चाहते हैं वे बड़ी भूल करते हैं। इंजीनियर का लड़का इंजीनियर बने, कलाकार का कलाकार और वकील का लड़का भी वकालत करे, यह कोई नियम नहीं है। रुचि, प्रतिभा, मूल प्रवृत्ति से अभिभावक और बच्चे के कार्यक्रमों में असमानताएं स्वाभाविक ही हैं। अतः एकांगी निर्णय, एकांगी दृष्टिकोण से बच्चे के भावी जीवन की रूपरेखा न बनाई जाए। संगीत प्रतिभायुक्त बच्चों को क्लर्क, राजनीतिज्ञ बनाना, संवेदनशील भावुक कोमल हृदय बच्चों को डॉक्टर बनाना, चिन्तनशील दार्शनिक विचारक बच्चों को तराजू तोलने की दुकान पर बैठाना, अभिभावकों की बड़ी भारी भूल है। इससे बच्चों की मूलभूत प्रतिभा का विकास नहीं होता है।

बच्चों को अपने बाल साथियों में न खेलने देना, दूसरे बच्चों से मिलने-जुलने से रोकना भी ठीक नहीं। परस्पर दूसरे बच्चों से मिलने-जुलने से ही बालकों का विकास होता है। उनमें मेल-जोल की वृत्तियाँ पैदा होती हैं। किन्तु कई अभिभावक संकीर्ण मनोवृत्ति के कारण, बच्चों के बिगड़ जाने के भय से उन्हें दूसरे बच्चों से मिलने-जुलने नहीं देते। उन्हें बार-बार डाँटते-फटकारते हैं और रोकते हैं। इससे बच्चों में कई मानसिक विकृतियाँ पैदा हो जाती हैं। ऐसे बच्चे आगे चलकर एकाकी, असामाजिक वृत्ति के बन जाते हैं। वे दूसरों से मिलने-जुलने में संकोच अनुभव करते हैं। संसार उन्हें

कैद की तरह लगता है। उनकी कोमल भावनायें कुण्ठित हो जाती हैं। यह भी ध्यान रखने योग्य बात है कि बच्चों को ऐसे ही बालकों से मिलने-जुलने दिया जाय जो श्रेष्ठ वातावरण में पले हों तथा सुसंस्कृत हो।

कई माता-पिता बच्चों को, यह सोचकर कि उनका बच्चा अधिक पढ़ेगा, अधिक परिश्रम करेगा और उन्नत बनेगा, बार-बार टोकते हैं। बार-बार आदेश पूर्ण दबाव डालते रहते हैं। दूसरे बच्चों से तुलना करते हैं। वे सोचते हैं कि इससे बच्चा अधिक मेहनत करेगा किन्तु परिणाम इसके विपरीत ही निकलता है। इससे बच्चों का आत्मविश्वास नष्ट हो जाता है। उन्हें अपनी शक्ति, सामर्थ्य और सफलता में सन्देह होने लगता है। कई बच्चों में तो यह सन्देह इतना प्रबल हो जाता है, कि वे असफलता को निश्चित मानकर प्रयत्न ही नहीं करते। जैसे-तैसे अधूरे मन से प्रयत्न भी करते हैं तो सफल नहीं होते। बच्चों को हीन, कमजोर बताना, उनकी बार-बार आलोचना करना, उन्हें वैसे ही बनाना है जैसे अभिभावक गण स्वयं नहीं चाहते। बच्चों को प्रोत्साहन और प्रेरणा भरी बातें कहना, उनके आत्मविश्वास व उत्साह को बढ़ाना ही उनके जीवन की सफलता, प्रौढ़ता, विकास का रहस्य है। इतना ही नहीं

गलतियों, भूलों से होने वाली हीन प्रतिक्रिया को ही बच्चों के मानसपटल से दूर कर देना चाहिए। इससे महत्वपूर्ण कार्यों को निर्भीक, निःसंकोच रूप से करने की क्षमता और जीवन पथ पर आगे बढ़ते रहने की मानसिक दृढ़ता प्राप्त होती है। बच्चों को जन्म देना, उनका, पालन-पोषण करना, उनकी साज-संभाल रखना माँ का उत्तरदायित्व है। किन्तु बच्चों की शिक्षा-दीक्षा, उनका मानसिक विकास, स्वस्थ व्यक्तित्व का निर्माण, उन्हें मनुष्य बनाने का महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व पिता पर भी है। स्कूल कलेजों में भी पुस्तकीय ज्ञान; अक्षर ज्ञान ही हो पाता है किन्तु जीवन के आन्तरिक एवं बाह्य समग्र ढांचे का निर्माण पिता द्वारा ही पूर्ण होता है। यह एक निश्चित तथ्य है। इसके लिए बच्चों और पिता में नित्यप्रति का संपर्क रहना, पिता द्वारा बच्चों के जीवन में गहरी दिलचस्पी का होना आवश्यक है। अक्सर आजकल के संघर्षमय, भाग दौड़ के जीवन में इसकी कमी होती जा रही है।

अतः माता-पिता को प्रतिदिन कुछ न कुछ समय बच्चों के लिए अवश्य निकालना चाहिए और माता-पिता के कर्तव्य, उत्तरदायित्व का निर्वहन भी उनके लिए उसी तरह अनिवार्य और आवश्यक है, जिस तरह उनका माता-पिता होने का अधिकार है।

राजभाषा अधिनियम, 1963 (यथा संशोधित 1967) की धारा 3 (3) के अनुसार निम्नलिखित दस्तावेजों को हिन्दी-अंग्रेजी में एक साथ जारी करना आवश्यक है:

1. सामान्य आदेश (General Orders)
2. संकल्प (Resolution)
3. परिपत्र (Circulars)
4. नियम (Rules)
5. अधिसूचना (Notifications)
6. प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन (Administrative and other reports)
7. प्रेस विज्ञप्ति (Press Communiques)
8. संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखए गए प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदन और राजकीय कागज पत्र (Administrative and other reports and official papers laid before a House or the Houses of Parliament)
9. संविदाएं (Contacts)
10. करार (Agreements)
11. अनुज्ञप्तियाँ (Licences)
12. अनुज्ञा पत्र (Permits)
13. सूचना (Notices)
14. निविदा प्रारूप (Tender Forms)

सिंगापुर : एक नवोन्मेषी देश

मेरा पहला अंतर्राष्ट्रीय अनुभव सिंगापुर की अविस्मरणीय सप्ताह भर की यात्रा थी। एक जीवंत द्वीपीय शहरी-राष्ट्र जो अपने भविष्यदर्शी क्षितिज, विविध संस्कृतियों और विश्वस्तरीय आकर्षणों के लिए प्रसिद्ध है। शहरी-राष्ट्र इसलिए क्योंकि इस देश का कुल क्षेत्रफल मात्र 735 वर्ग किलोमीटर और जनसंख्या 60 लाख है तो इसे चाहे देश समझे या शहर। मेरी यात्रा की शुरुआत भुवनेश्वर से होती है क्योंकि आईआईटी भुवनेश्वर में अपने मित्र से मिलने के बाद मैंने इस यात्रा की योजना बनाई थी। सारी औपचारिकताएं पूर्ण करने के पश्चात् भुवनेश्वर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से रात्रि 11:30 बजे 4:15 घंटों की नॉन-स्टॉप उड़ान से मैं प्रातः 06:00 बजे (सिंगापुर भारतीय समयानुसार ढाई घंटे आगे है) सिंगापुर, चांगी हवाई अड्डे पहुँच गया। दुनिया के सर्वश्रेष्ठ हवाई अड्डों में से एक माने जाने वाले चांगी हवाई अड्डे पर पहुँचने पर मैं इसकी दक्षता, सुंदरता और हरियाली से अभिभूत हो गया। सिंगापुर में एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिए एमआरटी (स्थानीय मेट्रो) सबसे किफायती और तीव्र सेवा है और यह चांगी हवाई अड्डे से भली-भाँति जुड़ी हुई है। चांगी एमआरटी स्टेशन में लगी वेंडिंग मशीन से ईजी लिंक स्मार्ट कार्ड लेने के बाद मैं अपने होटल की ओर चल पड़ा और यह कार्ड वहाँ की बसों में भी मान्य है। रोमांच से परिपूर्ण मैं सिंगापुर के प्रतिष्ठित स्थलों को देखने निकल पड़ा।

मेरे सिंगापुर भ्रमण की शुरुआत विश्व प्रसिद्ध सिंगापुर चिड़ियाघर से हुई, जिसे वह स्थानीय तौर पर मंडाई वाइल्डलाइफ रिजर्व कहते हैं। यहाँ पहुँचने के लिए खतीब एमआरटी से शटल बस चलती है। सिंगापुर चिड़ियाघर अपने खुले-आवासीय बाड़ों और विविध पशु संग्रह के लिए प्रसिद्ध है। वन्य जीवों का पालन-पोषण बहुत ही दक्षता से किया जाता है जोकि प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता है। खुले बाड़े में झूलते ओरंगुटान, जिराफ और बम्बर शेर को खाना खिलाते देखना वाकई एक यादगार अनुभव था।

शशांक गौरव

कनिष्ठ अनुवादक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II), उत्तर प्रदेश, लखनऊ



इसके अन्दर हॉप-ऑन हॉप-ऑफ रोड ट्रेन भी चलती है जिसका शुल्क टिकट में ही सम्मिलित है जो हर बाड़े के निकट ले जाती है। बर्ड पैराडाईज़, रिवर वंडर, नाईट सफारी आदि इसके अन्य आकर्षण हैं जिनका अलग से टिकट लेना होता है।

अगले दिन मेरी यात्रा प्रसिद्ध मरीना बे सैंड्स से शुरू हुई। अपनी विशिष्ट जहाज जैसी आकृति वाले इस वास्तुशिल्प चमत्कार में एक भव्य होटल और विविध उपयोग इमारत हैं जो अब सिंगापुर की पहचान बन चुकी हैं। इसके समीप ही सिंगापुर फ्लायर ओब्सर्वेशन डेक है, जहाँ से शहर का अद्भुत 360-डिग्री मनोरम दृश्य और शहरी विस्तार दिखाई देता है। यहाँ कई प्रकार के मॉल और रेस्तराँ भी हैं, जो विविध देशों की संस्कृतियों से प्रेरित होकर अनूठे व्यंजन परोसते हैं। इसके निकट विश्वविख्यात मर्लिन स्टेच्यू स्थित है, शेर के सिर और मछली के शरीर वाली मर्लिन स्टेच्यू सिंगापुर के इतिहास और परिवर्तन को दर्शाती है। मछली का शरीर सिंगापुर की उत्पत्ति को एक मछुआरे गाँव-टेमासेक के रूप में दर्शाता है। लोकप्रिय पर्यटक आकर्षण होने के अलावा, मर्लिन सिंगापुर की पहचान और लचीलेपन का प्रतीक है। यह देश की साधारण शुरुआत से उठकर एक समृद्ध, वैश्विक शहर-राष्ट्र बनने की क्षमता का प्रतिनिधित्व करता है। यहाँ





से चलने योग्य दूरी पर मैंने मंत्रमुग्ध कर देने वाले 'गार्डन्स बाय द बे' का भ्रमण किया। यह बहुत ही सुन्दर और आधुनिक बगीचा है जिसमें दुनिया भर के फूलों को बहुत ही सुन्दरता से प्रदर्शित किया गया है। सुपरट्री ग्राव के बीच टहलते हुए, मैं रात में जगमगाते ऊर्ध्वाधर (वर्टिकल) उद्यानों को देखकर दंग रह गया। फ्लावर डोम और क्लाउड फॉरेस्ट कंजर्वेटरीज़ ने मुझे अलग ही दुनिया में पहुँचा दिया और ओसीबीसी स्काईवे उद्यान परिदृश्य का एक मनमोहक हवाई दृश्य प्रदान करता है।

यात्रा के तीसरे दिन मैं सेंटोसा आइलैंड गया। यह एक विशाल थीम पार्क है मोनोरेल द्वारा वीवोसिटी से जुड़ी है। यहाँ विश्वप्रसिद्ध यूनिवर्सल स्टूडियो की फ्रेंचाइज़ है, यहाँ कई फिल्मों यथा जुरासिक पार्क, मिनीयन्स, ट्रांसफॉर्मर्स आदि के सेट्स लगे हैं जहाँ दुनिया भर से आये लोग फोटो खींचते, आनंद लेते, उल्लास मनाते नज़र आते हैं। यह थोड़ा खर्चीला स्थान है क्योंकि हर शो, एक्टिविटीज़ और राइड्स का यहाँ से अलग शुल्क देना पड़ता है। यह अत्यंत रोमांचकारी और यादगार अनुभव था।

स्थानीय संस्कृति को अनुभव करने के लिए चाइनाटाउन अच्छे स्थानों में से एक माना गया है। यहाँ सुवनेयर, कपड़े, फैन्सी वस्तुओं की बहुतायत में स्टोर हैं। मैंने यहाँ कुछ बैग, सुवनेयर, मग आदि की खरीदारी की। फिर यहाँ से एमआरटी की लाइन से सीधे लिटिल इंडिया गया जहाँ वास्तव में ऐसा प्रतीत होता है कि आप इतनी दूर सिंगापुर में नहीं बल्कि दिल्ली की आईएनए मार्केट में हों। यहाँ भारतीय समुदाय के लोग बहुतायत में हैं तथा भारतीय खाना खाने के लिए यह स्थान आपको आकर्षित भी करता है। सिंगापुर में 74% चीनी, 13% मलेशियाई व 10% भारतीय

समुदाय के लोग हैं। वहाँ के लोग मिलनसार, हँसमुख व सहयोगात्मक हैं।

सिंगापुर से अब वापस भारत आने की तैयारी थी। चांगी ज्वेल अपने आप में एक पर्यटक स्थल है जोकि इसी हवाई अड्डे का एक भाग है। इसके बारे में बहुत कुछ पढ़ रखा था, इसलिए इसे घूमने के लिए 2 घंटे पहले ही हवाई अड्डे पहुँच गया। “सिंगापुर वॉर्टेक्स” दुनिया का सबसे ऊँचा इनडोर झरना है और सिंगापुर के ज्वेल चांगी हवाई अड्डे के केंद्र में स्थित है। यह 40 मीटर (130 फीट) ऊँचा है और 10 मंजिला काँच और स्टील से बने प्रकृति-थीम वाले परिसर का केंद्रबिंदु है, जिसमें हरे-भरे, सीढ़ीदार वातावरण में 3,000 से ज़्यादा पौधे, मॉल और अन्य आकर्षण हैं। छत पर एकत्रित वर्षा जल से पानी पुनः प्रवाहित होता है, जो फिर एक गोलाकार छिद्र से होकर 130 फीट से गिरता है। रात में झरना प्रकाश और ध्वनि प्रदर्शन के लिए गतिशील 360 कोण के मंच में बदल जाता है, जो इसे सार्वजनिक आकर्षण बनाता है। ज्वेल चांगी हवाई अड्डा और इसका रेन वॉर्टेक्स सिंगापुर की वास्तुकला और शहरी डिज़ाइन के प्रतीक बन गए हैं।

सिंगापुर की इस यात्रा ने मेरी कल्पनाओं की दुनिया को जीवन्त किया और विविध संस्कृतियों को साथ-साथ फलते-फूलते हुए देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि लोग बिना किसी विद्वेष के सामान्य जीवन जी सकते हैं। मेरी पहली अंतर्राष्ट्रीय यात्रा मात्र स्थानों को देखने के बारे में नहीं थी; यह व्यक्तिगत विकास, सांस्कृतिक खोज और अविस्मरणीय यादों का एक अनुभव था जो आने वाले वर्षों तक मेरे घुमक्कड़पन को प्रेरित करेगा। सिंगापुर ने विविध मूलों के प्रति सम्मान और एक मज़बूत, सामूहिक भविष्य के बीच संतुलन बनाकर एक समेकित पहचान बनाई है।



आर्टिफिशियल इंटेलिजेन्स

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए. आई.): स्मार्ट तकनीक की नई दिशा

परिचय

कृत्रिम बुद्धिमत्ता या आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ए. आई.) एक ऐसी तकनीक है जिसके माध्यम से कंप्यूटर और मशीनें इंसानों की तरह सोचने, समझने और निर्णय लेने में सक्षम होती हैं। यह तकनीक तेजी से हमारे जीवन के क्षेत्र में अपना प्रभाव बढ़ा रही है।

इतिहास

ए. आई. की शुरुआत 1950 के दशक में हुई थी जब वैज्ञानिकों ने ऐसी मशीनें बनाने की कल्पना की तब वैज्ञानिकों ने इसकी नींव रखी। समय के साथ मशीनें लथनग, डीप लर्निंग और न्यूरल नेटवर्क जैसी तकनीकों ने ए. आई. को और अधिक शक्तिशाली बना दिया।

प्रकार

संकुचित ए. आई. (नैरो ए. आई.)— यह विशेष कार्यों के लिए बनाया जाता है जैसे कि वॉयस असिस्टेंट या सर्च इंजन। संकीर्ण ए. आई. में चेतना, वास्तविक समझ या मनुष्यों की तरह सीखने और अनुकूलन करने की क्षमता नहीं होती है। अपनी सीमाओं के बावजूद संकीर्ण ए. आई. अपने निर्धारित कार्य में अत्यधिक कुशल और सटीक हो सकता है और अक्सर उस विशिष्ट क्षेत्र में मानवीय क्षमताओं से भी आगे निकल जाता है।

सामान्य ए. आई. (जनरल ए. आई.)— ऐसी ए. आई. जो इंसानों की तरह हर तरह का कार्य कर सके (वर्तमान में यह विकासशील अवस्था में है)। इसका लक्ष्य ऐसा ए. आई. बनाना है जो किसी भी बुद्धि-संबंधी कार्य को कर सके, जो इंसान कर सकता है। जिसमें एक सामान्य ज्ञान (कॉमन सेन्स), तर्क वितर्क (रिज़निंग) और निर्णय लेने की क्षमता होगी।

सुपर इंटेलिजेंट ए. आई.— एक काल्पनिक अवस्था जहाँ ए. आई. इंसानों से भी ज्यादा बुद्धिमान हो जाएगी।

उपयोग

- स्वास्थ्य क्षेत्र: बीमारी की पहचान, दवा की योजना, रोबोटिक सर्जरी
- शिक्षा: पर्सनलाइज्ड लथनग, ऑनलाइन ट्यूटर
- वित्त: फ्रॉड डिटेक्शन, ऑटोमेटिक ट्रेडिंग

रेनू श्रीवास्तव

वैयक्तिक सहायक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II), उत्तर प्रदेश, लखनऊ



- ट्रांसपोर्ट: सेल्फ ड्राइविंग गाड़ियाँ, ट्रैफिक कंट्रोल
- मनोरंजन: मूवी या म्यूजिक रिकमंडेशन, गेमिंग ए. आई.

ए. आई. के लाभ

- तेज और सटीक कार्य निष्पादन।
- मानव श्रम की बचत।
- डाटा की गोपनीयता और सुरक्षा का मुद्दा।
- निर्णयों में पक्षपात (बायस) की संभावना न होना।
- नैतिकता और कानूनी प्रश्न।

चुनौतियाँ और जोखिम-

- रोजगार पर प्रभाव: कई पारंपरिक नौकरियाँ ए. आई. के कारण खतरे में आ सकती हैं।
- डेटा गोपनीयता: ए. आई. का उपयोग गलत हाथों में होने पर व्यक्तिगत जानकारी का दुरुपयोग हो सकता है।
- पूर्वाग्रह (बायस): अगर एआई को पक्षपातपूर्ण डेटा से प्रशिक्षित किया गया है, तो इसके निर्णय भी पक्षपातपूर्ण हो सकते हैं।
- नियंत्रण की चिंता: अत्यधिक स्वायत्त ए. आई. सिस्टम पर मानव नियंत्रण बनाए रखना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।
- मशीन लर्निंग: इसमें कंप्यूटर डेटा से खुद सीखते हैं, अनुभव के आधार पर अपने निर्णय बेहतर करते हैं।
- नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (एन.एल.पी.): मशीनों को मानव भाषा समझने और जवाब देने में सक्षम बनाता है।
- कंप्यूटर विजन: कंप्यूटर को चित्रों और वीडियो को पहचानने और समझने की क्षमता देता है।

- रोबोटिक्स: इसमें ए. आई. का उपयोग करके रोबोट को स्वायत्त कार्य करने के योग्य बनाया जाता है।

भविष्य की संभावनाएँ

भविष्य में ए. आई. का उपयोग और व्यापक होगा। स्मार्ट सिटी, हेल्थकेयर में व्यक्तिगत इलाज, और जलवायु परिवर्तन के समाधान जैसे क्षेत्रों में इसका उपयोग हो सकता है। लेकिन इसके लिए आवश्यक है कि ए. आई. का विकास जिम्मेदारी से और नैतिक ढंग से किया जाए।

निष्कर्ष

ए. आई. आज की दुनिया में एक क्रांतिकारी तकनीक बन चुकी है। यदि इसका सही और जिम्मेदारीपूर्वक उपयोग किया जाए, तो यह मानव जीवन को और बेहतर बना सकती है। साथ ही इसके संभावित खतरों को समझते हुए सावधानी से इसका विकास आवश्यक है।

दिल्ली की भूली हुई धरोहर

शाहजहाँनाबाद की जल प्रबंधन प्रणाली की कहानी

दिल्ली, भारत की राजधानी, ऐतिहासिक स्थलों और वास्तुकला के अद्भुत नमूनों का खजाना है। जबकि कई लोग लाल किले, जामा मस्जिद और कुतुब मीनार से परिचित हैं, कम लोग जानते हैं कि शाहजहाँनाबाद शहर की जल प्रबंधन प्रणाली कैसे काम करती थी, जिसे मुगल बादशाह शाहजहाँ ने 1639 में बनवाया था।

शाहजहाँनाबाद की जल प्रबंधन प्रणाली

शाहजहाँनाबाद, जिसे पुरानी दिल्ली भी कहा जाता है, एक दीवार वाले शहर के रूप में डिजाइन किया गया था जिसमें नहरों, बावड़ियों और जलाशयों का एक जाल शामिल था। शहर की जल प्रबंधन प्रणाली यमुना नदी के पानी को शहर के विभिन्न हिस्सों में पहुँचाने के लिए बनाई गई थी, जिसमें इसके निवासियों, बागों और स्मारकों की जरूरतें पूरी होती थीं।

नहर-ए-बहिश्त : स्वर्ग की नहर

मुख्य नगर जिसे 'नहर-ए-बहिश्त' या 'स्वर्ग की नहर' कहा जाता है, शाहजहाँ के शासनकाल के दौरान बनाई गई थी और यमुना नदी से शहर के केन्द्रीय क्षेत्रों में पानी लाती थी। यह शहर अपने समय की एक वास्तुकला की अद्भुत मिसाल थी, जिसमें वितरण चैनलों, जलसेतुओं और साइफनों की एक जटिल प्रणाली थी जो शहर के दूर-दराज के हिस्सों तक पानी पहुँचाती थी।

जल प्रबंधन प्रणाली का महत्व

शाहजहाँनाबाद की जल प्रबंधन प्रणाली ने शहर के पारिस्थितिकी तंत्र को बनाये रखने और इसकी आर्थिक गतिविधियों को समर्थन देने में महत्वपूर्ण भूमिका हरे-भरे बागों और फलों के बागों को सींचा, शाही महल और अन्य स्मारकों की प्यास बुझाई।

रेनू श्रीवास्तव

वैयक्तिक सहायक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II), उत्तर प्रदेश, लखनऊ



विरासत का संरक्षण

इसके ऐतिहासिक महत्व के बावजूद इस जल प्रबंधन प्रणाली का अधिकांश बुनियादी ढाँचे के नीचे दब गया है। हालाँकि, पुरानी दिल्ली के विभिन्न हिस्सों में पुरानी नहरों, बावड़ियों और जलाशयों के अवशेष अभी भी देखे जा सकते हैं, जो शहर के प्राचीन निर्माताओं की बुद्धिमत्ता और शिल्प कौशल का प्रमाण देते हैं।

शाहजहाँनाबाद की जल प्रबंधन प्रणाली की विशेषताएँ

शाहजहाँनाबाद की जल प्रबंधन प्रणाली में कई विशेषताएँ थी जो इसे अद्वितीय बनाती थी। इनमें से कुछ विशेषताएँ इस प्रकार हैं:-

- नहर-ए-बहिश्त: स्वर्ग की नहर
- वितरण चैनलों, जलसेतुओं और साइफनों की जटिल प्रणाली
- शहर के दूर-दराज के हिस्सों तक पानी पहुँचाने की क्षमता

निष्कर्ष

शाहजहाँनाबाद की जल प्रबंधन प्रणाली एक अद्वितीय और ऐतिहासिक महत्व की धरोहर है। इसके अवशेष आज भी पुरानी दिल्ली के विभिन्न हिस्सों में देखे जा सकते हैं। हमें इस धरोहर को संरक्षित और सराहना करना चाहिए, जिससे हम अपने शहर के लिए एक अधिक स्थाई और लचीला भविष्य बना सकें।

बेटियाँ तो बेटियाँ होती हैं

बेटियाँ तो गोरीया चिड़ियाँ की तरह होती हैं। घर के आँगन में खेलती हैं, कूदती हैं और पूरे परिवार में कौतुहल करती हैं। बेटियों से ही पूरे घर-आँगन में रौनक रहती है। यह बात सच है कि बेटियाँ अपने पिता के घर में एक सीमित समय तक ही रह पाती हैं उसके बाद उन्हें अपने घर-आँगन को छोड़कर अपने असली घर जाना होता है। इस बात से मेरा तात्पर्य है कि प्रत्येक बेटी को विवाह होने पर अपने पिता के घर को छोड़कर अपने ससुराल जाना होता है। यही समाज का नियम है।

“उड़के एक रोज़ बड़ी दूर चली जाती हैं

घर की शाखों पर ये चिड़ियों की तरह होती हैं।”

इस क्रम में मैं अपने एक अनुभव को साझा करना चाह रहा हूँ :-

यह बात माह फरवरी 2025 की है। मुझे दिनांक 17-02-2025 को जयपुर में आयोजित होने वाले क्षेत्रीय राजभाषा सम्मलेन में कार्यालय के प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त हुआ। कार्यालय के कार्य से लखनऊ के बाहर जाने का अवसर काफी वर्षों बाद मुझे प्राप्त हुआ। चूँकि मैं काफी समय बाद अपने घर से बाहर कहीं दो-तीन दिन के लिये जा रहा था, इस कारण से मेरी सात वर्ष की बेटी काफी मायूस थी कि पापा दो-तीन दिन घर नहीं आयेंगे। मैंने अपनी बेटी को समझाया कि बिटिया कार्यालय के आवश्यक कार्य से मुझे जाना है, तुम चिंता मत करो, हम जल्दी आ जायेंगे और आपके लिये जयपुर से एक अच्छा सा उपहार (गिफ्ट) भी लायेंगे।

अपनी बिटिया से यह वादा कर तय समय पर जयपुर जाने के लिये अपने घर से निकल गया। घर से निकलने के कुछ घंटे बाद ही मेरी पत्नी ने फ़ोन कर मुझसे कहा कि बिटिया से बात कर लीजिये, ये आपसे बात करने की जिद कर रही है। मैंने अपनी बिटिया से पूछा कि क्या हो गया? मैंने आपसे उपहार लाने का वादा किया है न, फिर क्यों जिद कर रही हो। इस पर मेरी बिटिया बोली कि पापा मैं उपहार के लिये जिद नहीं कर रही हूँ, मैंने आपको ये

प्रभाकर श्रीवास्तव
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(वित्त एवं संचार), दिल्ली,
शाखा कार्यालय लखनऊ



बताने के लिये फ़ोन किया है कि मैंने मम्मी को बिना बताये आपके बैग में कपड़ों के बीच में एक सेब और स्ट्रॉबेरी फल रख दिया है, आपको भूख लगे तो आप खा लेना। यह सुनकर मैंने कहा कि बिटिया आपकी मम्मी ने तो मेरी लिये टिफ़िन रख दिया था फिर आपने फल क्यों रखे। इस पर मेरी बिटिया बोली कि पापा टिफ़िन तो आप रात में खायेंगे पर अभी आपको भूख लगेगी तो कौन आपको खाने के लिये फल देगा, मैं तो आपके पास में अभी नहीं हूँ।

मेरी बिटिया की बात सुनकर मैं बहुत भावुक हो गया और सोचने लगा कि एक सात वर्ष की छोटी बच्ची के अन्दर इतनी ममता और चिंता की भावना आना कितने आश्चर्य की बात है। मेरी बेटी के वो शब्द ‘अभी आपको भूख लगेगी तो कौन आपको खाने के लिये फल देगा, मैं तो आपके पास में अभी नहीं हूँ’ हमेशा मेरे दिल में रहेंगे।

बेटियों का अपने माता-पिता के प्रति निःस्वार्थ प्रेम, ममता और स्नेह अविस्मरणीय था, है और हमेशा रहेगा। हम सभी को नीचे लिखी गयी पंक्तियाँ पर विचार करना चाहिये कि:-

‘हर बेटी के भाग्य में पिता होता है, पर हर पिता के भाग्य में बेटी नहीं होती।’

इसीलिये अद्भुत किस्मत वाले होते हैं वो माता-पिता, जिनके घर-आँगन में बेटियाँ होती हैं।

“कोई भी देश सच्चे अर्थों में तब तक स्वतंत्र नहीं है, जब तक वह अपनी भाषा नहीं बोलता।”

मोहनदास करमचन्द गाँधी

चाय की चुस्की

किसी जिले के एक सरकारी दफ्तर में हर सुबह एक खास तरह की हलचल होती थी। कामकाज तो हमेशा की तरह चलता रहता था, लेकिन उस दफ्तर की असली धड़कन था वो चायवाला, जो हर सुबह अपने कंधे पर केतली और दिल में मुस्कान लेकर आता था।

सुबह जैसे ही साहब अपनी-अपनी मेजों पर फाइलें खोलकर 'गंभीरता' ओढ़ते, तभी दफ्तर के गलियारों में गुँजती एक जानी-पहचानी आवाज़ "साहब... चाय..." और बस, वहीं से असली दिन की शुरुआत होती थी।

कुछ कर्मचारी तो जैसे केवल चाय के लिए ही आते हैं- साहब के पास बैठकर चाय की चुस्कियों के साथ तारीफों की फुहार छोड़ते हैं। चायवाले की चाय केवल स्वाद में नहीं, बल्कि उसमें रिश्तों की मिठास और दफ्तर की गर्माहट घुली होती थी। चाहे वो वरिष्ठ अधिकारी हों या चपरासी सबकी सुबह एक प्याली चाय के साथ ही रफ्तार पकड़ती।

कई बार तो फाइलों में उलझे अहम फैसले, चाय के साथ यूँ सरक जाते जैसे उबलती केतली में चीनी घुल गई हो। साहब का कहना था, "जब तक चाय न पी लूँ, दिमाग की मशीन स्टार्ट ही नहीं होती।"

नया आदेश हो, मीटिंग की हलचल हो, या दफ्तर में कोई तू-तू मैं-मैं - एक दौर चाय का चलता और माहौल फिर से मुस्कुरा उठता। लेकिन एक दिन... चायवाला बीमार पड़ गया और जैसे दफ्तर की रगों में दौड़ता खून थम-सा गया। कोई घड़ी देख रहा

मोहम्मद इमरान खान

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(वित्त एवं संचार), दिल्ली,
शाखा कार्यालय लखनऊ



था, कोई फाइलों को यूँ ही घूर रहा था। न किसी ने बात की, न हँसी गुँजी। काम हुआ, मगर जैसे दफ्तर की रफ्तार को ब्रेक लग गया हो।

उसी दिन सबको समझ आया कि दफ्तर की असली "Smart Waking" तो चाय की प्याली है। चाय - थकान मिटाती है, लोगों को आपस में जोड़ती है और दिलों को करीब लाती है।

दो दिन बाद जब चायवाला लौटा, तो जैसे दफ्तर ने फिर से साँस ली। चाय के प्याले खनके, और फाइलों ने फिर से सरकना शुरू किया। हमारा दफ्तर फिर से जी उठा।

“ये चाय केवल एक प्याली ही नहीं, शायद रोज़ की
रिवायत है कोई,

जो होठों पर मुस्कान, रिश्तों में गर्माहट और काम में गति
लाती है।”

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल,
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को सूल॥

हिन्दी भाषा क्रान्ति के अग्रदूत भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

तलाश

हैलो, मयंक जी बोल रहे हैं - उधर से कानों को सुकून देने वाली एक दिलकश आवाज आई। जी बोल रहे हैं पर मैंने आपको पहचाना नहीं - मैंने दिमाग पर जोर देते हुये कहा। वक्त की इसे अच्छाई कहें या बुराई, गुजरने के साथ चीजों को भुला ही देता है - उस मीठी आवाज ने व्यंग्यात्मक लहजे में कहा।

मैं आपकी बात से सहमत नहीं हूँ- मैंने आवाज को लगभग पहचानते हुये कहा। आप मेरी बातों से सहमत तो कभी नहीं थे मि. ऑडिटर - निशा की आवाज में दर्द और शिकायत दोनों था। 'तुम्हमममम! हाँ मैं, मैं कुछ और पूछता उसके पहले ही उधर से उत्तर आया। आज अचानक से इतने सालों के बाद तुमने मुझे कैसे फोन किया - मैंने आश्चर्य से पूछा।' बिल्कुल वैसे ही जैसे पहले हमेशा करती थी, फेवरेट में जाकर तुम्हारे नाम पर टच करके।' "हाहाहाहाहा! मुझे तो पता ही नहीं था, जानती हूँ, इसलिए आज तक मुझे फोन नहीं कर पाए- निशा ने नाराज़गी के साथ कहा। "अब बस भी करो निशा, मेरी मजबूरियाँ थी, जिन्हें तुम नहीं समझोगी।"

"समझाओ किसी और को, मैं समझना भी नहीं चाहती, अच्छा सुनो मैं ऑफिस के काम से एक प्रोजेक्ट के सिलसिले में बैंगलोर आ रही हूँ, अगर आपका दिल करे तो आखिरी बार मुझसे मिल लेना।" कैसी बातें कर रही हो निशा, मैं भला तुमसे क्यों नहीं मिलना चाहूँगा, और आखिरी बार क्यों, मैं हमेशा तुमसे मिलता रहूँगा। चलिए बातें मारना बंद करिये और इस महीने की 27 तारीख का वेट करिए, बाय, अपना खयाल रखियेगा। निशा ने हमेशा की तरह बिना मेरी बात सुने फोन रख दिया।

खैर, मैं बहुत खुश था और निशा के स्वागत की तैयारियाँ करने लगा। हफ्ते भर ही बचे थे उसे आने में। सारी तैयारियाँ हो गई थी। उसके पसंद के चॉकलेट्स, बिस्किट, केक सब लाकर पहले से फ्रिज में रख दिया। कमरे के पर्दे, बेड की चादर सब उसकी पसंदीदा कलर के लगा दिए। जैसे-जैसे वक्त करीब आ रहा था एक-एक पल लंबा होता जा रहा था। शाम का वक्त था और 26 तारीख थी, मेरे फोन पर एक अनजाने नंबर से फोन आता है।

पंकज मोहन जायसवाल

वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(वित्त एवं संचार), दिल्ली,
शाखा कार्यालय लखनऊ



हैलो, मि. मयंक से बात हो रही है - उधर से एक भारी आवाज आई। जी बोल रहा हूँ, कौन? निशा को जानते है आप? मेरा जवाब दिए बिना उन्होंने सवाल किया।

जी, कौन निशा? मैंने आशंकित मन से पूछा। "निशा गर्ग, अब शायद आप पहचान गए होंगे, मैं डॉ. अग्निहोत्री बोल रहा हूँ, चीफ न्यूरो सर्जन, मिडलाइफ हॉस्पिटल।" हाँ, जानता हूँ मैं निशा को, बहुत अच्छे से जानता हूँ, क्या हुआ मेरी निशा को - मैंने चीखकर घबराते हुए पूछा।

"निशा की दिमागी हालत ठीक नहीं थी, पिछले एक साल से वो मेरी पेशेंट थी, स्टाफ से पूछने पर मुझे पता चला कि वो 20 जुलाई को किसी से फोन पर बात कर रही थी और बैंगलोर जाने की बात बोल रही थी। 20 तारीख से ही वो लापता है, आपका नंबर मुझे निशा की डायरी से मिला, हो सकता है, वो बैंगलोर गई हो, आप एक कोशिश कर सकते हैं, निशा को ढूँढने की - डॉ. साहब ने सारी बात विस्तार से बताई। मेरा शरीर निस्तेज हो गया, उबलता हुआ रक्त ठंडा हो गया, आँखों से आँसू बरसने लगे। हाँ, डॉ. मैं पूरी कोशिश करूँगा - रुंधे गले से इतना कहकर मैंने फोन रख दिया।

एयरपोर्ट, बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन हर जगह मैंने निशा को तलाशा, पर निशा कहीं नहीं मिली। हाँ, मैं जरूर कहीं खो गया हूँ.....।

भाषा और संस्कृति से खिलवाड़ करने वाले राजनीतिज्ञ आते हैं और चले जाते हैं। भारतीय संस्कृति की प्रतीक हिन्दी सदा अमर रहेगी।

भारतरत्न राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन

ट्रेन का जनरल डिब्बा नंबर: 1

रविवार की शाम हो चुकी थी, मेरी ट्रेन का समय होने वाला है क्योंकि स्टेशन मेरे गाँव में ही है इसलिए ट्रेन आने के 5 मिनट पहले ही घर से निकलता हूँ इस लापरवाही के कारण अक्सर ट्रेन छूट जाती है। लेकिन देर से घर से निकलने की आदत नहीं छूट रही। हालांकि आज मैं समय से स्टेशन पहुँच गया और ट्रेन को प्लेटफॉर्म से लपक कर दूर से आते देख रहा हूँ, ट्रेन में दो या तीन ही जनरल डिब्बे होते हैं लेकिन वह दूर से ही दिख रहे हैं क्योंकि उनके दरवाजों पे लटके लोग गुम्बद की भाँति दिखाई दे रहे हैं।

भीड़ का अंदाज़ा लगा के मैंने अपने पीठ पर अपना बैग कस लिया है जिसमें ज्यादा वजन नहीं है सिर्फ दो जोड़ी कपड़े हैं ट्रेन स्टेशन पर रुकी और एक आदमी बहुत ही मुश्किल से उतर पाया और लगभग 20 लोगों की भीड़ अंदर घुसने को तैयार है। जिसमें एक मैं भी हूँ काफी धक्का-मुक्की करने के बाद मुझे मिलाकर सिर्फ 6 लोग ही अंदर घुसने में सफल हो पाये, जिसमें से एक का छोटा वाला बैग स्टेशन पे ही छूट गया और एक और था जो सवारी को स्टेशन छोड़ने आया था, लेकिन भीड़ के बीच में फँस जाने के कारण भीड़ उसे अंदर घसीट लाई है, अब वह अगले स्टॉप पर उतरने की तैयारी कर रहा है। अंदर घुसते ही मैंने एक व्यक्ति को देखा जो उदास खड़ा था, मुझे पता चला कि उसको पिछले स्टेशन पर उतरना था लेकिन उतर नहीं पाया।

इन परिस्थितियों को देख कर आप भीड़ का अंदाज़ा लगा सकते हैं, खैर मेरे लिए तो ये हर हफ़्ते का खेल हो चुका है जिसकी अब आदत हो गई है और पाँच साल के अनुभव का ये फ़ायदा है कि कितनी भी भीड़ क्यूँ न हो अपने लिए बैठने की जगह तो निकाल ही लेता हूँ। ट्रेन में सफ़र करते हुए एक चीज़ मैंने समझ ली कि ट्रेन के गेट के पास सबसे ज्यादा भीड़ होती है और ट्रेन के दो दरवाजों के बीचों-बीच वाले कम्पार्टमेंट में जो कि दोनों तरफ से तीसरा होता है जिसमें सबसे कम भीड़ होती है तो मैं अब उसी कम्पार्टमेंट को अपना लक्ष्य बना के आगे बढ़ने लगा जैसे ही मैंने एक कदम बढ़ाया तो नीचे से आवाज़ आई, दिखाई नहीं देता क्या ऊपर से पैर रख दिया, खैर सही बात तो यही है कि इतनी भीड़ में मुझे सच में दिखाई नहीं देता है कि पैर कहाँ जा रहा है? डिब्बे तक जाते-जाते तीन से चार बार ये बात सुननी पड़ती है। तो अब मैं अंततः अपने लक्ष्य तक (तीसरे कम्पार्टमेंट) पहुँच गया। पाँच मिनट तक एक टांग पे तिरछा खड़े होकर पूरी स्थिति को समझा फिर देखा तो चार लोगों की सीट पर पाँच लोग बैठे हुए हैं जिन पर सामान्यता छह या सात लोग बैठते हैं।

मैंने किनारे वाले से कहा भाई जरा जगह दीजिये, तो उसने वही जवाब दिया जो सदियों से चला आ रहा है कि यहाँ पे उसका साथी बैठा है जो टॉयलेट गया है लेकिन मैं इतने वर्षों के अनुभव



शोएब अहमद

लेखापरीक्षक

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
(केन्द्रीय), लखनऊ

से ये जान चुका हूँ कि वह टॉयलेट गया हुआ साथी हजारों सालों में आज तक वापस नहीं आया तो मैंने उसे कहा वह आ जाएगा तो मैं हट जाऊँगा तो अब उसके पास कोई जवाब नहीं था तो उसने अनचाहे मन से मुझे लगभग पैर के अँगूठे भर की जगह दी जिसको मैंने बैठते ही थोड़ा धक्का मार के पैर रखने भर की कर लिया, अब उसमें और मुझमें एक शीत युद्ध शुरू हो चुका है। वह मुझे सीट से गिराना चाह रहा था और मैं थोड़ा-थोड़ा करके अपनी जगह बढ़ाना चाह रहा था।

मेरे सामने ऊपर वाली सीट पर एक मोटा-सा आदमी पूरी सीट पर अकेला लेटा हुआ था एक व्यक्ति उससे कहता है भैया उठ के बैठ जाओ हमें भी बैठने दो, मोटे व्यक्ति ने जवाब दिया अगर बैठने का शौक है तो रिजर्वेशन करा के आया करो, व्यक्ति चुपचाप किनारे ही खड़ा हो गया और मेरा भी शीत युद्ध बगल वाले से जारी था। इस बीच अगला स्टॉप आ जाता है और कुछ लोग चढ़ते हैं जिसमें से दो लड़के किसी तरह हमारे कम्पार्टमेंट तक आ जाते हैं और उस लेटे हुए व्यक्ति को एक लड़का टांग पकड़ के हिला देता है जिससे लेटे हुए व्यक्ति की नींद खुल जाती है और वह कुछ समझ पाए इससे पहले दूसरा साथी दबंग आवाज़ में कहता है कि अबे रिजर्वेशन करा के आया है क्या..., उठ के बैठ...., वह मोटा व्यक्ति अब बिना कुछ कहे, उठ के कोने में कायदे से बैठ जाता है और अब ऊपर वाली सीट पर तीन लोग बैठ गए और कई जगह पे दोनों पार्टिया दबंग हो जाने के कारण डिब्बे में कई जगह लड़ाई और गाली-गलौज की आवाज़ आ रही है जो जनरल डिब्बे में सामान्य बात है। अब मेरा पड़ोसी जिससे मेरा युद्ध हो रहा था, उससे मैंने थोड़ी बातचीत करना शुरू कर दी है जिससे वह कुछ सहज हो गया और लखनऊ आने में अभी भी लगभग एक घंटा बाकी है अब तक मैंने ठीक-ठाक जगह भी बना ली है।

इस बीच एक किन्नर की आवाज़ सुनाई देती है जो सबसे अपने अंदाज़ में पैसे माँग रहा है। कोई आसानी से दे रहा है तो उन्हें खूब दुआ दे रहा है, और जो नहीं दे रहा है उनको गालियाँ

भी पड़ रही है। अब लखनऊ भी आने वाला है, ट्रेन धीमे होने लगी है। मैं भी उतरने की तैयारी करने लगा। लखनऊ बड़ा स्टेशन है तो उतरने की जल्दबाजी करनी पड़ती है, वरना चढ़ने वालों की भीड़ वापस उसी तीसरे कम्पार्टमेंट तक खींच ले जाती है इसलिए मैं जल्दी-जल्दी गेट तक पहुँचने की तैयारी करने लगा तभी फिर

आवाज आई “अँधा है क्या... ऊपर से पैर रख दिया पर इन्हें जवाब देने की जरूरत नहीं होती है बड़ी मशक़त के बाद मैं ट्रेन से उतर पाया और ऐसा लगा मानो आज फिर जंग जीत ली हो।

मोबाइल नोटिफिकेशन और पढ़ाई

दस बज चुके थे खाना खाने के बाद अब मेरे पढ़ने का समय हो गया था, तो एक किताब टेबल पर निकाल के रख ली। अभी किताब खोले बस 10 या 15 मिनट ही हुए होंगे कि मोबाइल पर छोटी-सी घंटी बजती है जो संभावना नोटिफिकेशन या टेक्स्ट संदेश की है, बजते ही फोन को उठाया तो देखा इंस्टाग्राम पे किसी ने फोटो को लाइक किया है, अब इंस्टाग्राम खुलना तो लाज़मी था।

सबसे पहले यही गिनें कि कितने लाइक और कमेंट्स हो गए और कमेंट्स में झूठी तारीफ सुनकर मन खुश हो गया था कि हाथ रील वाले सेक्शन पर चला गया और 15-15 सेकण्ड की मजेदार रील्स आने लगी और आधा घंटा कब निकल गया पता ही नहीं चला हालाँकि ये बात भी सही है कि एक मिनट पहले कौन सी रील देखी थी मुझे वो भी याद नहीं था।

फिर एक नोटिफिकेशन स्क्रीन पर दिखाई देता है जो व्हाट्सएप ग्रुप से है जिसमें सब व्हाट्सएप यूनिवर्सिटी के फॉरवर्ड चल रहे नोटिफिकेशन कोई उन्हें गलत साबित करने पे लगा है तो कोई उन्हें ही परम सत्य मान बैठा है और कुछ मेरे जैसे एकांत में खड़े दोनों की बातों को एन्जॉय कर रहे नोटिफिकेशन कुछ और दोस्तों के संदेश भी पड़े हुए हैं, अब मैं उन्हें रिप्लाई करने में लगा हूँ। कुछ खास दोस्त भी हैं जिनसे बातें काफी लंबी हो चुकी हैं और अब लगभग एक घंटा हो चुका है, उनसे विदाई लेते ही एक अच्छे से थंबनेल में यूट्यूब नोटिफिकेशन आता है कि तीन महीने में

शोएब अहमद
लेखापरीक्षक

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
(केन्द्रीय), लखनऊ



यूपीएससी प्री कैसे निकाले? कौन सी स्ट्रेटेजी फॉलो करें? अब इस वीडियो को देखे बिना कैसे रहा जा सकता है। लगभग एक आधा घंटा वीडियो को पूरा देखने के बाद। मुझे बहुत सारे मोटिवेशनल यूट्यूब शॉर्ट दिखाई दिए। तो अब उन्हें कैसे इग्नोर किया जा सकता है, कुछ आधा एक घंटा मोटिवेशन लेने के बाद जब होश आया तो देखा पंखे की हवा से पूरी किताब के पन्ने पलट चुके हैं और 10 बजे से 12 बजे तक का समय हो गया है और सुबह ऑफिस भी जाना है, तो अब किताब को रख दिया है ताकि जल्दी नींद आ जाए और किताब बंद करते ही फिर से मोबाइल उठा लिया है, क्योंकि फिर किसी सोशल मीडिया एप्लीकेशन से एक नोटिफिकेशन आ गया है।

देश सेवा

आज पार्क में बहुत चहल-पहल थी और हो भी क्यों न आज स्वतन्त्रता दिवस जो था, इस दिन सभी का अवकाश जो होता है। वहीं पार्क के एक बेंच पर बैठी लगभग बयालिस वर्षीय नित्या, वहाँ एक कपल को देख रही होती है, उन को देख कर उसकी आँखें भर आती हैं। नित्या अपने मन में सोचती है और खुद से कहती हैं- बाइस वर्ष बीत गये करन, बहुत कुछ बदल गया है, उस दिन के बाद पर तुम्हारा एहसास आज भी नहीं बदला। आज भी मुझे तुम्हारी झलक हर जगह दिखाई देती है।

वो इतना सोच ही रही थी कि तभी उसका ध्यान एक बच्चे की तरफ जाता है जो अपनी माँ से कागज का हवाई जहाज बनाना सीख रहा था। नित्या उनकी तरफ देखती है और पाती है कि बच्चे की माँ, उसे तिरंगा से हवाई जहाज बनाना सिखा रही थी। नित्या को यह बात अच्छी नहीं लगती और वो उस औरत के पास आती है और उनसे विनम्र भाव से कहती है।

नित्या- आप अपने बच्चे को हवाई जहाज बनाना सिखा रही हैं..... ये बहुत अच्छी बात है पर इस तरह से तिरंगे से बनाना सही नहीं है। ये हमारे देश की शान है। इसका इस प्रकार से प्रयोग देश के सम्मान को दुःख पहुँचाना है। प्लीज़ आप इसका इस तरह से दुरुपयोग न करें।

महिला- देखिये आन्टी मैं आपकी बात समझती हूँ पर अब शाम हो गयी है अब इसका हम क्या करेंगे इसलिये मैं इससे अब ये बना रही हूँ।

नित्या- बेटा ये सही नहीं है, तुम तो जानती ही होगी कितने आर्मी अधिकारी और सेना के जवान इस तिरंगे के लिए अपनी जान की कुर्बानी देते आये हैं। हमें उनके समर्पण का और देश के सम्मान के लिये इस तरह से...

नित्या अपनी बात पूरी करती उससे पहले ही वो औरत उसकी बातों को काटते हुए कहती है- देखिये आन्टी मैं भी अपने देश का सम्मान करती हूँ और मुझे आपसे सीखने की जरूरत नहीं है कि मुझे क्या करना चाहिए और क्या नहीं और प्लीज़ आप जाइये मुझे आपकी ये बातें सुनने में कोई रुचि नहीं है। पता नहीं कहाँ से ऐसे लोग आते हैं और आप तो ऐसी बातें कर रही हैं जैसे आप तो बस देश की सेवा में ही लगी हो। आपने ऐसा क्या किया है जो आप मुझे समझा रही हैं? नित्या दर्द भरी आवाज में कहती है- देश के लिये अपना सब कुछ दे दिया है। इतना कह कर वह जाने ही लगती है कि तभी उस महिला का पति आ जाता है और वो नित्या को देख कर सैल्यूट करता है, नित्या उसको हल्की सी मुस्कुराहट दे कर चली जाती है।

अनामिका गुप्ता
सुपुत्री श्री गोविंद लाल
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II), उत्तर प्रदेश,
शाखा कार्यालय प्रयागराज



महिला अपने पति से- आपने इन्हें सैल्यूट क्यों किया, आप जानते हैं, इन्हें क्या? उसका पति- ये नित्या मैम हैं जो उस आर्मी उस स्कूल की प्रिन्सिपल हैं। इनके पिता और पति दोनों आर्मी में थे और दोनों ही शहीद हो गये देश के लिये और ये अब आर्मी के शहीद हुए जवानों के बच्चों को निःशुल्क पढ़ाती हैं। वो महिला ये जान कर उनको कही हुई बातें याद करती है और उसे दुःख होता है अपने किये हुए बर्ताव का, और उसकी आँखें भर आती हैं।

दूसरी तरफ नित्या अपने घर आती है और अपने पति की तस्वीर के सामने खड़ी हो कर कहती है- आज पूरे बाइस साल हो गये.....आपको गये हुए करन.....आज भी याद है वो दिन मुझ को.....कितना खुश थे आप, अस्पताल में कितनी बेसब्री से आप अपनी बेटी के होने का इन्तजार कर रहे थे.....नर्स ने बताया था मुझे कि आप ने उनसे बार-बार पूछ कर कितना परेशान किया था उन्हेंपर उसी समय आपको फोन आया और आपको जाना पड़ा अपना फर्ज निभाने, देख भी तो नहीं पाये आप अपनी बेटी को एक बार भी। आज भी मुझे आपकी वो बात याद है जो आप हमेशा कहा करते थे कि नित्या देश के आगे कुछ भी नहीं, कोई भी नहीं। आपकी बेटी भी बिल्कुल आप पर गयी है, आज वो भी अपने पापा और नाना की तरह ही आर्मी की ड्यूटी निभाने जा रही है। पापा हमेशा कहते थे मुझसे कि नित्या जो सुकून देश के लिये जीने में मिलता है वो किसी और काम में नहीं मिलता है, सही कहते थे वो। नित्या की आँखें आँसुओं से पूरी तरह से भर जाती हैं, तभी कोई उसके कन्धे पर हाथ रखता है। नित्या अपने आँसुओं को अपने अन्दर ही समेट लेती हैं और उसकी तरफ मुड़ जाती है और मुस्कुराते हुए बोलती है- हो गयी तैयार तुम जाने के लिये इरा।

इरा मुस्कुराते हुए- हाँ माँ! हो गयीपता है माँ! मुझे हमेशा से ही ये लगता था कि पापा उस समय मुझसे मिलने के लिये क्यों नहीं रुके, क्या उनके लिये मैं और आप बिल्कुल भी मायने नहीं रखते थे। पर आज समझ में आ रहा है, मुझे कि पापा खुद से

पहले देश को क्यों रखते थे। क्योंकि ये सिर्फ वर्दी नहीं है, ये देश की शान और सम्मान है, इस वर्दी को पहनते समय और शपथ लेते समय से ही हम देश के हो जाते हैं और देश हमारा हो जाता है और आप कहती हो न कि जो हमारा है उसके लिये जीने में और उसके लिये जान देने के लिये हमें कभी दो बार नहीं सोचना चाहिये है न माँ.... इतना कह कर वो अपनी माँ की ओर देखने लगती है, उसकी माँ की आँखों में आँसू थे।

इरा- माँ, आप रो रही हैं, क्या आप को मेरे आर्मी को ज्वाइन करने से खुशी नहीं है, क्या आप दुःखी हो?

नित्या- आज मेरे ये आँसू कोई दुःख के आँसू नहीं हैं बेटा बल्कि सुकून और गर्व के हैं, मुझे गर्व है कि मैं एक फौजी की बेटी हूँ, मुझे गर्व है कि मैं एक फौजी की पत्नी हूँ और मुझे गर्व है कि मैं एक फौजी की माँ हूँ और ये मेरे लिये बहुत सम्मान की बात है। सच ही तो है देश से बढ़कर कुछ भी नहीं.....कोई भी नहीं होता है।

इतना कह कर वो अपनी बेटी को सैल्यूट करती है।

देश में ऐसे बहुत से परिवार हैं, जिनके परिवार में से कोई न कोई, किसी न किसी तरह से देश की सेवा में लगे हुए हैं, ऐसे सभी लोगों तथा उनके परिवार को मेरा दिल से सैल्यूट है।

खिलाड़ी पापा

हर शाम की एक पारंपरिक रिवाज है। मैं और मेरी लाड़ली बिटिया पास वाले पार्क में खेलने जाते हैं। अब बिटिया के खेलने का मतलब है कि वो अपनी सोसाइटी के सारे दोस्तों की रानी बन जाती है और मैं? मैं बन जाता हूँ एक चलती-फिरती बेंच, पानी की बोतल और कभी-कभी बॉडी गार्ड भी। जैसे ही हम पार्क में पहुँचते हैं, उसका डायल - शुरु- “पापा, झुला झुला दो।” “पापा, पानी दो।” “पापा, ये चाहिए, वो चाहिए। ये मेरा है” और फिर जैसे ही उसकी कोई दोस्त आ जाती है, मैं एकदम अदृश्य हो जाता हूँ। मैं बोलता हूँ, “बेटा, अब घर चलते हैं।” तो जवाब आता है- “मुझे नहीं जाना।”

अब ये “मुझे नहीं जाना” इतना कॉमन हो गया था कि मुझे लगने लगा कि मेरी घड़ी में भी यही वक्त चल रहा है। लेकिन एक दिन मेरे अंदर का बच्चा जाग गया। सोचा, “आज देखते हैं कौन है असली स्टार!”

मैंने पार्क में एक नया खेल शुरू किया दौड़, उछल-कूद, अजीबो-गरीब स्टेप्स और सबसे बड़ी बात - बच्चों को हँसाते हुए एक्सरसाइज करवाई। तुरंत पार्क में बात ऐसे फैली, जैसे वाट्सएप पर मिर्च-मसाला वाली न्यूज़ “पार्क में एक अंकल जी नया गेम खेल रहे हैं और अंकल जी यानी मैं बन गया बच्चों का सुपरहीरो!”



अरविन्द कुमार श्रीवास्तव
लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(वित्त एवं संचार), दिल्ली,
शाखा कार्यालय लखनऊ

एक-एक करके बिटिया की सारी सहेलियाँ मेरी टीम में आ गईं। अब बिटिया जी जो अब तक मुझे देख भी नहीं रही थीं, अचानक उनकी आँखों में जलन नहीं, पूरा बारबेक्यू जल उठा। वो आई, चेहरा तमतमाया और बोलल- “पापा! चलिए, अब घर चलना है।” वाह! अब याद आया पापा? अभी तक तो मैं “पार्क की हवा” था।

मैं मुस्कुराया और खेलते हुए बोला “मुझे नहीं जाना।”

वृक्षारोपण: आवश्यकता या मजबूरी

वृक्षारोपण हाल के वर्षों में कई पर्यावरण अभियानों की एक प्रमुख धारा बन गया है। वृक्षों को लगाने की अपील हर जगह है, इसे कार्बन उत्सर्जन के प्रभाव को कम करने और प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र को पुनर्स्थापित करने का एक सरल और प्रभावी तरीका माना जाता है।

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान की शुरुआत की थी। यह अभियान पर्यावरण के प्रति अपना दायित्व निभाने के साथ-साथ माताओं के प्रति श्रद्धा और समर्पण भाव दर्शाने की एक अनूठी पहल है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 5 जून, 2024 को दिल्ली के बुद्ध जयंती पार्क में पीपल का पौधा लगाकर इस अभियान की शुरुआत की थी। प्रधानमंत्री ने पर्यावरण को बेहतर बनाने के लिए सामूहिक प्रयासों के महत्व पर जोर दिया और पिछले एक दशक में भारत के वन क्षेत्र में हुई प्रगति का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि यह अभियान देश के सतत विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इसी क्रम में पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने सितंबर 2024 तक 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के तहत 80 करोड़ पौधे लगाने के अपने लक्ष्य को सफलतापूर्वक पूरा किया। 22 सितंबर 2024 को, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के तहत प्रादेशिक सेना की 128 इन्फैंट्री बटालियन और पारिस्थितिकी कार्य बल इकाई ने सिर्फ एक घंटे में पाँच लाख से ज्यादा पौधे लगाकर एक उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की। जैसलमेर में "विशेष पौधारोपण अभियान" के अंतर्गत यह शानदार उपलब्धि, प्रधानमंत्री के "एक पेड़ माँ के नाम" और प्रादेशिक सेना की पहल, "भागीदारी और ज़िम्मेदारी" का हिस्सा थी, जिसका उद्देश्य पारिस्थितिकी को यथास्थिति में बनाए रखना और स्थानीय समुदायों के बीच पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाना था। प्रादेशिक सेना की इकाई के इन प्रयासों को वर्ल्ड बुक ऑफ़ रिकॉर्ड्स, लंदन द्वारा विश्व रिकॉर्ड के साथ मान्यता दी गई।

वैश्विक परिदृश्य में शायद सबसे महत्वाकांक्षी उदाहरण एक ट्रिलियन पेड़ अभियान है, जिसे विश्व आर्थिक मंच ने जनवरी 2020 में डावोस में संयुक्त राष्ट्र के UN's Decade of Ecosystem Restoration के समर्थन में लॉन्च किया, जिसका लक्ष्य 2030 तक एक ट्रिलियन पेड़ पुनर्स्थापित, सुरक्षित या लगाए जाएंगे। इसके बाद 2018 में WWF जैसे प्रकृति गैर-लाभकारी संगठनों द्वारा शुरू किए गए इसी प्रकार के अभियान ने 2050 तक एक ट्रिलियन पेड़ लगाने का लक्ष्य रखा। इस वर्ष ब्रिटेनवासियों को रानी के प्लेटिनम जयंती के सम्मान में एक राष्ट्रीय वृक्षारोपण प्रयास में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया गया है।

रेडिटर्स ने भी 2019 में इस कार्य में भाग लिया, जब उन्होंने

मोहित सेठ

लेखापरीक्षक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II), उत्तर प्रदेश, लखनऊ



प्रसिद्ध यूट्यूबर मिस्टर बीस्ट को 20 मिलियन सब्सक्राइबर्स तक पहुंचने का जश्न मनाने के लिए 20 मिलियन पेड़ लगाने के लिए प्रोत्साहित करते हुए मीम्स की बाढ़ उत्पन्न की। मिस्टर बीस्ट, जिनका असली नाम जिमी डोनाल्डसन है, ने इस चुनौती को स्वीकार किया, एक फंड रेजर शुरू किया और पेड़ संरक्षण चैरिटी "आर्बर डे फाउंडेशन" के साथ मिलकर लक्ष्य को हासिल करने में मदद की।

लेकिन जलवायु संकट को कम करने के लिए पेड़ लगाने पर इतना बड़ा जोर क्यों दिया जा रहा है? क्या साधारण पेड़ वास्तव में दुनिया को बचा सकते हैं?

इथियोपिया ने 24 घंटे में 353 मिलियन पेड़ लगाने का रिकॉर्ड बनाया

पर्यावरण कार्यकर्ता ग्रेटा थनबर्ग ने इस चिंता को दोहराया और दावोस की बैठक में जहाँ एक ट्रिलियन पेड़ों की पहल शुरू की गई थी, कहा कि "किसी को पेड़ लगाने के लिए पैसे देना" काफी नहीं है। उसने स्पष्ट किया है कि पेड़ लगाने के प्रयासों को जीवाश्म ईंधनों पर हमारी निर्भरता को रोकने और उत्सर्जन को कम करने के लिए एकजुट प्रयासों के साथ काम करना चाहिए और 2019 में इसी सम्बन्ध में ट्वीट किया कि "हमें जितना संभव हो सके पेड़ लगाने की जरूरत है। बिल्कुल हमें मौजूदा पेड़ों को खड़ा रखने और प्राकृतिक आवासों को फिर से जीवित करने और प्रकृति को रिस्टोर करने की आवश्यकता है। लेकिन ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को रोकने और जीवाश्म ईंधनों को जमीन में छोड़ने के तरीकों के बिना कोई बात नहीं है। "थनबर्ग ने ब्रॉडकास्टर सर डेविड एटेनबोरो के साथ "रीवाइलिंग" की अवधारणा का समर्थन किया है। एक फिल्म में जो उसने लेखक जॉर्ज मॉनबियोट के साथ बनाई, उन्होंने यह रेखांकित किया कि रीवाइलिंग का अर्थ केवल अधिक पेड़ लगाना नहीं, बल्कि विभिन्न प्रकार के पेड़ों की रक्षा और पुनर्स्थापन करना है। वृक्षारोपण के बारे में आपको जानने वाली दो सबसे बड़ी बातें

1. पेड़ अंतिम कार्बन भंडारण मशीनें हैं- केवल एक हेक्टेयर में 400 टन कार्बन स्टोर किया जा सकता है।

2. वृक्षारोपण की पहलों को अच्छी तरह से शोधित और योजनाबद्ध किया जाना चाहिए- खराब कार्यक्रमों से लाभ के बजाय अधिक नुकसान होगा।

पेड़ कैसे काम करते हैं?

पेड़ अंतिम कार्बन भंडारण मशीनें हैं। सभी पौधों की तरह, यह अपने विकास और ऊर्जा के लिए वातावरण से कार्बन डाइऑक्साइड लेते हैं, जिसे प्रकाश-संश्लेषण कहा जाता है। इस प्रक्रिया के एक उपोत्पाद (byproduct) के रूप में, वे ऑक्सीजन उत्पन्न करते हैं, जिसे हम साँस के रूप में लेते हैं। वन क्षेत्र और जंगल सदियों तक कार्बन को बंद रख सकते हैं- जिसकी वजह से मानव और ग्रह को उनकी बेहद जरूरत है, क्योंकि कार्बन उत्सर्जित मानव गतिविधियों से वायुमंडल को नुकसान होता है। यूके संरक्षण चैरिटी, **वुडलैंड ट्रस्ट** के अनुसार, अकेले एक हेक्टेयर (जो 10,000 वर्ग मीटर है- या लगभग दो और आधे फुटबॉल पिच के बराबर) वन क्षेत्र में 400 टन कार्बन संचित किया जा सकता है। पेड़ों को काटना कार्बन उत्सर्जन के लिए गंभीर परिणाम लाता है। अमेरिका के ओरेगन में 2018 के एक अध्ययन में पाया गया कि लॉगिंग अर्थात् पेड़ों का कटान; सन् 2000 से हर साल 33 मिलियन टन कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन करने के लिए जिम्मेदार था, जो राज्य में अन्य कार्बन-उत्सर्जन स्रोतों जैसे परिवहन की तुलना में कहीं अधिक था।

सभी पेड़ कार्बन स्टोर करते हैं, लेकिन ऐसा माना जाता है कि उष्ण-कटिबंधीय वर्षावनों का जलवायु परिवर्तन से रक्षा करने में और भी अधिक उपयोगिता है। अमेज़न वर्षावन द्वारा वायुमंडल में संग्रहित कार्बन की मात्रा के लिए अनुमान बहुत भिन्न होते हैं। लेकिन जो भी आँकड़ा हो, अध्ययनों ने दिखाया है कि इसने आसपास के सभी देशों द्वारा उत्पन्न कार्बन उत्सर्जन को कम करने में मदद की है। इन सभी कारणों के लिए जलवायु वैज्ञानिकों ने पेड़ लगाने और पहले से मौजूद पेड़ों की रक्षा करने के लाभों की सराहना की है।

वर्ष 2019 में प्रकाशित ईटीजेड ज्यूरिख विश्वविद्यालय के एक विशाल अध्ययन ने निष्कर्ष निकाला कि अमेरिका के आकार के बराबर विश्व स्तर पर जंगल के एक बहुत बड़े क्षेत्र को बहाल करके, 205 बिलियन टन कार्बन स्टोर किया जा सकता है, जोकि औद्योगिक क्रांति के बाद से मानव गतिविधि के परिणामस्वरूप वायुमण्डल में निर्गत किए गए कुल कार्बन-उत्सर्जन (300 बिलियन टन) का लगभग दो तिहाई हिस्सा है। अध्ययन का नेतृत्व करने वाले प्रोफेसर थॉमस क्रॉथर ने कहा कि परिणाम “दिमाग उड़ाने” वाले थे। उन्होंने कहा “हम सभी जानते थे कि वनों को बहाल करना जलवायु परिवर्तन से निपटने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है, लेकिन हम वास्तव में नहीं जानते थे कि प्रभाव कितना बड़ा होगा। किन्तु हमें जल्दी से कार्य करना चाहिए, क्योंकि नए जंगलों को परिपक्व होने

और प्राकृतिक कार्बन भंडारण के स्रोत के रूप में अपनी पूरी क्षमता हासिल करने में दशकों लगेंगे।

क्या वृक्षारोपण ही उपचार है?

मनुष्य पेड़ों की भूमिका को कैसे नुकसान पहुँचा रहे हैं- हालांकि, **ग्लोबल वार्मिंग और वनों की कटाई दोनों इस ग्रह की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले जंगलों के लिए एक बड़ा खतरा पैदा करते हैं।** हाल ही में, विनाशकारी सबूत सामने आए हैं कि अमेज़न वर्षावन को हुए नुकसान के कारण, यह कार्बन को स्टोर करने की अपनी क्षमता खो रहा है। वास्तव में, प्राकृतिक और मानव-जनित दोनों तरह की विभिन्न गतिविधियाँ इसके कारण हो रही हैं, कुछ मामलों में वातावरण में मीथेन और नाइट्रस ऑक्साइड जैसी ग्रीनहाउस गैसों को छोड़ रही हैं। नतीजतन, वैज्ञानिक उभरते सबूतों से बेहद चिंतित हैं कि अमेज़न के कुछ हिस्से कार्बन सिंक न बन कर कार्बन स्रोत बन रहे हैं। उदाहरण के लिए, मार्च 2021 के एक अध्ययन के अनुसार-लॉगिंग से आर्द्रभूमि और मिट्टी के संघनन को सुखाने से ग्रीनहाउस गैस नाइट्रस ऑक्साइड के उत्सर्जन में वृद्धि हो सकती है। मई 2021 के एक अन्य अध्ययन में पाया गया कि बढ़ता तापमान पेड़ की प्रकाश संश्लेषण की क्षमता को जल्दी से धीमा कर सकता है, हालांकि यह प्रक्रिया अभी भी होती है। **वृक्षारोपण अकेले क्यों पर्याप्त नहीं है** जबकि यह सब सबूत यह दर्शाता है कि जंगलों का संरक्षण और अधिक पेड़ों का रोपण करना आवश्यक है ताकि भविष्य की पीढ़ियाँ उनके कार्बन-कैप्चर क्षमता से लाभान्वित हो सकें, इस बात के साक्ष्य हैं कि दुनिया को जलवायु परिवर्तन से बचाने के लिए हम “पौधरोपण” पर भरोसा नहीं कर सकते हैं। 2020 में कुछ वैज्ञानिक अनुसंधान ने सुझाव दिया कि यदि वृक्षारोपण पहलकदमियाँ खराब तरीके से डिज़ाइन की जाती हैं तो वे वास्तव में लाभकारी नहीं हो सकती हैं। **बीबीसी द्वारा किए गए अध्ययनों के एक लेख के अनुसार-** इसका कारण यह है कि इससे विशेष रूप से विविधता रहित “मोनोकल्चर” (जिसका अर्थ एक प्रकार की प्रजातियाँ) वन क्षेत्र बनाने का खतरा होता है और इस पर एक बहस भी है कि वास्तव में बहुत युवा पेड़ कितनी कार्बन को कैचर कर सकते हैं। स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एरिक लैम्बिन ने चिली में त्वरित जैव विविधता हानि की ओर इशारा किया। उन्होंने यह भी कहा कि “यदि वृक्षारोपण को प्रोत्साहित करने वाली नीतियाँ अच्छी तरह से डिज़ाइन नहीं की गई या सही तरीके से लागू न की गई, तो सार्वजनिक धन को बर्बाद करने के साथ-साथ अधिक कार्बन उत्सर्जन और जैव विविधता खोने की प्रबल संभावना है।”

अतः यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि **केवल अधिक पेड़ लगाना नहीं, बल्कि विभिन्न प्रकार के पेड़ों की रक्षा और पुनर्स्थापन करना ही इस ग्रह को सुरक्षित एवं संरक्षित कर सकता है।**

समय: वर्तमान या भविष्य

कालचक्र, एक ऐसा ग्रह, जो न कभी किसी दूरबीन में देखा गया, न किसी कहानी में सुना गया था। इसका आकाश हर पल रंग बदलता- कभी गहरा नीला, कभी चटख लाल, तो कभी सुनहरा, मानो कोई जादूगर अपने रंगों से खेल रहा हो। यहाँ समय का कोई बंधन न था। कालचक्र के निवासी, जिन्हें समयक कहा जाता, समय को अपने हिसाब से जीते थे। न कल की चिंता, न आज का दबाव-बस हर पल का आनंद।

इस ग्रह पर एक युवा समयक, अविर रहता था। बाकी समयकों से अलग, अविर की आँखों में हमेशा कुछ नया खोजने की चमक रहती। एक दिन, जंगल में एक पुराना, धूल भरा यंत्र उसे मिला, जो जमीन में आधा दबा था। यंत्र पर प्राचीन लिपि में लिखा था: “जो समय को समझ लेगा, वही इस दुनिया का सच जान लेगा।” अविर ने उत्सुकता से यंत्र को छुआ और एक चमकदार रोशनी फूटी। एक दरवाजा खुला, जो उसे एक ऐसी दुनिया में ले गया जहाँ समय एक सीधी रेखा में चलता था-हमारी पृथ्वी जैसी दुनिया। यहाँ लोग कल के लिए रोते, आज के लिए भागते, और भविष्य के सपनों में खोए रहते। अविर हैरान था। यहाँ समय लोगों का मालिक था, जबकि उसकी दुनिया में समय उनका दोस्त था।

इस नई दुनिया में अविर की मुलाकात रवि से हुई, एक युवा ऑफिस कर्मचारी, जो एक सॉफ्टवेयर कंपनी में काम करता था। रवि की जिंदगी एक अंतहीन दौड़ थी। सुबह जल्दी उठना, ट्रैफिक में फँसना, मीटिंग्स, डेडलाइंस, और रात को थककर सो जाना। रवि को हर पल भविष्य की चिंता खाती रहती थी, वो हमेशा अपने सहकर्मियों से ज्यादा पैसे कमाने और बड़ा घर बनाने को ही अपनी जिन्दगी का एक मात्र लक्ष्य मान बैठा था, इस कारण से वो हमेशा काम के दबाव में रहता था और कार्यालय के आगे घर और अपनी पत्नी एवं बच्चों को भी समय नहीं दे पाता था अविर ने रवि को एक कॉफी शॉप पर देखा, जो अपने लैपटॉप के सामने बैठा था, कॉफी का मग थामे, आँखों में थकान और चेहरे पर तनाव लिए। रवि को परेशान देख कर अविर ने उसका कारण पूछा। रवि द्वारा एक गहरी साँस ली गई और कहा गया, “देख, भाई, जिंदगी आसान नहीं है। हर दिन एक नई डेडलाइन दी जाती है। पैसा कमाना है, बड़ा घर चाहिए, एक लक्जरी कार चाहिए-वो जो रास्ते पर सबकी नजर खींच ले। भविष्य की चिंता हमेशा सताती है। अगर आज ज्यादा मेहनत न की गई, तो कल क्या होगा?”

अविर मुस्कुराया और पूछा, “ये सब चीजें-पैसा, कार, बड़ा घर-क्या ये सचमुच तुम्हें खुशी दे पाएंगी? हर पल भविष्य की चिंता में क्यों जिया जाता है? अभी, इसी पल, क्या तुम खुश हो?” रवि द्वारा कंधे उचकाए गए और कहा गया, “खुशी? वो तो बाद में

अभिषेक मीणा

लेखापरीक्षक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार

(लेखापरीक्षा-II), उत्तर प्रदेश, लखनऊ



आएगी, जब बैंक में लाखों जमा होंगे, जब नई कार खरीदी जाएगी। अभी तो बस भागना है। समय रुकता नहीं और मुझे इसके पीछे दौड़ना है।”

अविर ने एक गहरी साँस ली और कहा, “तुम्हारी दुनिया में, समय को पकड़ने की कोशिश क्यों की जाती है? मेरी दुनिया में, समय हमारा दोस्त है। हर पल को जिया जाता है, जैसे वो आखिरी हो। तुम्हारी ये दौड़, ये पैसों की भूख, ये भविष्य की चिंता- क्या ये तुम्हें जीने दे रही है? कल की चिंता में आज खोया जा रहा है।” तुम्हारा शरीर यहीं पर है पर क्या तुम सम्पूर्ण रूप से वर्तमान में उपस्थित हो, जिस भविष्य की चिंता तुम्हें खाई जा रही है, क्या पता उस भविष्य में तुम्हारा अस्तित्व ही न हो और तुम उस भविष्य का हिस्सा ही ना हो। रवि थोड़ी देर के लिए सोच में डूब गया। परन्तु क्षणिक देर बाद उसने झुंझलाहट में कहा, “लेकिन भविष्य की चिंता न की गई, तो क्या होगा? अगर मैंने आज मेहनत न की, तो वो कार, वो घर, वो स्टेटस-सब सपना रह जाएगा।”

अविर द्वारा शांति से जवाब दिया गया, “सपने देखे जाना अच्छा है, लेकिन सपनों के पीछे भागते-भागते आज को भूल क्यों जाया जाता है? क्या तुम्हें याद है, आखिरी बार कब आसमान की ओर देखा था? कब किसी दोस्त के साथ बिना वजह हँसा गया था? कब अपने लिए एक पल चुराया था? पैसा, कार, घर-ये सब आ सकता है, लेकिन अगर आज का पल खो दिया गया, तो वो कभी वापस नहीं आएगा।”

रवि ने एक गहरी साँस ली और पूछा गया, “तो क्या करूँ? सब छोड़ दूँ? मेहनत न करूँ?” अविर ने जवाब दिया। “मेहनत करो, लेकिन उसे बोझ मत बनने दो। अपने लिए समय निकालो। छोटी-छोटी चीजों में खुशी ढूँढो- जैसे ये शाम का मौसम, इस पल की बातचीत या बाहर उड़ते परिंदों का नजारा। भविष्य की चिंता छोड़कर आज को जिया जाए। अविर ने बात को आगे बढ़ाते हुए एक छोटे बच्चे का उदाहरण देते हुए रवि को समझाया कि जिस प्रकार एक छोटा बच्चा अपने वर्तमान में जीता है और सदैव ही

खुश रहता है वो कभी भी भविष्य की निराधार कल्पना नहीं करता, जिस कारण से वह कभी भी दुःखी नहीं होता है। परन्तु समय के साथ-साथ, और जैसे-जैसे वह बड़ा होता जाता है, वह दुनिया की अँधी दौड़ में फँस जाता है और फिर शुरू होता है, कभी न खत्म होने वाली महत्वाकांक्षाओं का जाल, जिन्हें पूरा करने के लिए व्यक्ति अपने वर्तमान को भुला देता है और उन दुःखों को भी झेलता है जो कि वर्तमान में रह कर आसानी से टाले जा सकते थे और चैन की नींद सोया जा सकता था। बात को विराम देते हुए अवीर ने कहा “देखो, मैं तुम्हें एक चीज देता हूँ।”

अवीर ने कालचक्र के एक छोटे से टुकड़े से बना एक ताबीज निकाला और रवि को दिया और कहा, “इसे देखो, जब लगे कि तुम समय के पीछे भाग रहे हो। ये तुम्हें याद दिलाएगा कि तुम अभी, इसी पल में, जिंदा हो और जिन्दा रहना ही तुम्हारी खुशी के सबसे बड़े कारणों में से एक होना चाहिए, अस्तित्व और वर्तमान एक दूसरे से पारस्परिक रूप से जुड़े हुए हैं, वर्तमान ही वह समय है, जो वास्तव में हमारे पास है, जिसमें हम साँस ले रहे हैं। यह हमारे अस्तित्व का प्रमाण है।

एक गहरी साँस लेते हुए रवि ने ताबीज को हाथ में लिया और उसकी चमक में कुछ शांति महसूस की। धीरे-धीरे, रवि की जिंदगी में बदलाव आया। ऑफिस में ब्रेक लेना शुरू किया, सहकर्मियों के साथ हल्की-फुल्की बातें हुईं और वीकेंड पर पुरानी किताबें पढ़ी, जो सालों से अलमारी में पड़ी थीं और नए-नए स्थानों की यात्रा शुरू की। रवि ने महसूस किया कि समय उसका दुश्मन नहीं, बल्कि दोस्त है, जो उसे हर पल कुछ नया सिखाता है। रवि ने महसूस किया कि समय जल्दी-जल्दी नहीं बीत रहा है

बल्कि हम समय से आगे निकलने की कोशिश में है। तभी अचानक से एक तेज आवज, एक तेज चीख गूँजी-अलार्म की आवाज! रवि की आँखें खुलीं, और उसने खुद को अपने छोटे से बेडरूम में बिस्तर पर पाया, पसीने से भीगा हुआ। उसने इधर-उधर देखा। न कालचक्र का जादुई आसमान, न अवीर, न वो लैपटॉप। सब कुछ एक सपना था। अलार्म ने सुबह के सात बजे का वक्त चिल्लाकर बताया। ऑफिस के लिए देर हो रही थी! रवि ने बिस्तर से छलांग लगाई, जल्दी से ब्रश किया, कपड़े पहने, और दौड़कर घर से बाहर निकला।

उसने अपनी छोटी-सी कार की चाबी उठाई और ऑफिस के लिय निकल गया। कार चलाते हुए उसने अपने गले पर हाथ फेरा, जहाँ सपने में वो चमकदार ताबीज लटक रहा था, लेकिन अब वहाँ सिर्फ खालीपन था। एक पल को उसका मन उदासी में डूबा, मानो कोई अनमोल चीज खो गई हो। लेकिन तभी सड़क पर एक चमचमाती लज्जरी कार, तेजी से उसके पास से गुजरी। पहले, ऐसी कार देखकर रवि के दिल में एक हलचल होती। लेकिन आज? आज उस कार ने उसे तनिक भी नहीं भटकाया।

रवि ने अपनी चलती हुई कार की खिड़की खोली, गाड़ी की स्पीड बढ़ाई, ठंडी हवा का एक झोंका कार की खुली खिड़की से आकर उसके चेहरे को छू गया। उस हवा में जैसे कोई जादू था। रवि के चेहरे पर एक हल्की, मगर गहरी मुस्कान तैर गई। सपने में अवीर की कही हुई बातें उसके कानों में गूँज रही थी- **“समय को दोस्त बनाओ, हर पल को जियो।”**



कार्यालयीन विशिष्ट उपलब्धियाँ



छायाचित्र: वर्ष 2022-23 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (वित्त एवं संचार), नई दिल्ली शाखा कार्यालय, उत्तर प्रदेश, लखनऊ के अधिकारीगण नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-2), लखनऊ से राजभाषा शील्ड प्राप्त करते हुए।



छायाचित्र: उत्तरी क्षेत्र हॉकी प्रतियोगिता 2024-25 में उप विजेता (रनर अप) रहने पर श्री आशीष मिश्रा, को शील्ड प्रदान करते हुए माननीय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)।

मुश्किल होता है

जब चारों तरफ घिरा हो अँधेरा,
और दिखे न कहीं उम्मीद का सवेरा,
तब खुद को संभालना मुश्किल होता है।

जब न हो किसी भी चीज़ की चाहत,
और किसी अपने ने किया हो आहत,
तब खुद को संभालना मुश्किल होता है।

जब भावों को न समझा जाए,
और शब्दों का गलत अर्थ निकाला जाए,
तब खुद को संभालना मुश्किल होता है।

जब टूटे हुए सपने हों,
और रूटे हुए भी अपने हों,
तब खुद को संभालना मुश्किल होता है।
जब जीवन में तन्हाई हो,
और खुद की खुद से लड़ाई हो,
तब खुद को संभालना मुश्किल होता है।

जब आँसू हों आँखों में भरे,
और फिर भी मुस्कुराना पड़े,
तब खुद को संभालना मुश्किल होता है।
जब खुद की भावनाएँ छुपानी पड़ें
और अपनों के सामने झूठी कहानी बनानी पड़े,
तब खुद को संभालना मुश्किल होता है।
जब हो जाए मन की शांति भंग,
और ये जीवन लगने लगे एक जंग,
तब खुद को संभालना मुश्किल होता है।



ज्योति दीक्षित

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(वित्त एवं संचार), दिल्ली,
शाखा कार्यालय लखनऊ

1. कितनी ही गौरव गाथाएं और अभी गढ़नी होंगी
कितने महिसासुरों की गर्दन धड़ से अलग करनी होंगी
मोमबत्तियों को रक्खो बस तुम अब दीवाली की खातिर
अब प्रचंड पग-पग पर केवल ज्वालायें करनी होंगी।
2. खुशबू चुरा के ले गया कोई गुलाब की
है बात प्रेम की तो जैसे बात ख्वाब की
अब तो चमन में चारसू नफरत की आग है
भूले हैं बात अब सभी अदबो आदाब की।
3. इन्हें बांधो भले कितना ये पर्दे हिल ही जाते हैं
छुपा लो लाख लेकिन राज इक दिन खुल ही जाते हैं
गलतफहमी के कारण जो बिछड़ जाते हैं हमसे लोग
अगर दिल में हो सच्चाई तो फिर से मिल ही जाते हैं।
4. अपने बन्दों से खुदा क्यों हट गई तेरी नजर
क्या खता ऐसी हुई बरपा रहा ऐसा कहर
दूर कर सारे दुखों को मन न कोई हो व्यथित
चीर कर फिर तम को निकले खुशनुमा उजली सहर।
5. नजरें बदल गयीं तो, नजारे बदल गये
दिन जब ढला तो चाँद सितारे बदल गये
धारे थे, नाखुदा थे, नदी भी थी, नाव भी
थोड़े सी मौज में ही किनारे बदल गये।
6. हम में वो पहले जैसी मुरब्बत नहीं रही
बातें तो बढ़ गई हैं मोहब्बत नहीं रही
कुछ आजमाइशों के इधर दौर यूँ चले
चलने में साथ पहले सी राहत नहीं रही।
7. गम में भी मुस्कुराऊँ ये मुश्किल नहीं
गाऊँ और गुनगुनाऊँ ये मुश्किल नहीं
है खिजां जबकि गुलशन में चारों तरफ
खुशबुएँ मैं लुटाऊँ ये मुश्किल नहीं।

श्रीमती लीना दरियाल
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान निदेशक
लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ



8. नया गुल खिला कोई सहने चमन में
नई आई लज्जत सी फिर अंजुमन में
नई गुनगुनाहट, तराने नए हैं
मधुरता नई आ गयी है सृजन में।
9. जो बाकी रह गए सामान सारे छोड़ जाएंगे
रहे तू दोस्त खुश, दालान सारे छोड़ जाएंगे
गिला-शिकवा नहीं कोई हमें ऐ जिन्दगी तुझसे
कि हम वक्ते सफर अरमान सारे छोड़ जाएंगे।
10. फिजा और बादलों को फिर बहकने दो, बहकने दो
चमन की डाली डाली को चहकने दो, चहकने दो
ये बारिश की हसीं रुनझुन ये गीतों की मधुर गुनगुन
हवा में सौंधी सी खुशबू, महकने दो, महकने दो।
11. ठहरा है वक्त अब वो रवानी नहीं रही
चलने में राह अब वो आसानी नहीं रही
जजूबात बन गए हैं फसाना सा और फिर
किरदार तो हैं पर वो कहानी नहीं रही।
12. हमेशा ही सबक ये कुछ न कुछ सिखला के जाती है
ये जो है जिन्दगी ये फर्ज़ शिद्दत से निभाती है
बहुत उड़ने जो लगते हैं अहम के आसमानों में
जमीं पर उनको लाने को वबा भी बन के आती है।

आज हमें एक ऐसी भाषा की जरूरत है, जो एक बड़े समुदाय की भाषा हो, सरल और व्यवहार्य हो। इस दृष्टि से हिन्दी के सिवा और कौन-सी भाषा हो सकती है।

श्रीमती लीलावती मुंशी

हाँ, मैं बिहारी हूँ

कर्म पथ पर अग्रसर, सेवा भाव में तत्पर
आदमी अदद सरकारी हूँ, हाँ, मैं बिहारी हूँ।
प्रजातंत्र का आधार जहाँ, मगध गणराज्य विशाल यहाँ
उसी वैशाली की क्यारी हूँ, हाँ, मैं बिहारी हूँ।
नालंदा की धरोहर, सम्राट मौर्य और अशोक की गाथा
मैं सभी साम्राज्यों पर भारी हूँ, हाँ, मैं बिहारी हूँ।
कवि विद्यापति की तान हूँ, दिनकर का ज्ञान हूँ
सिद्धार्थ को बुद्ध बनाए, ऐसा पीपल भारी हूँ, हाँ, मैं बिहारी हूँ।
खैनी-बीड़ी छूटती नहीं, तंबाकू मुझसे रूठती नहीं
रहन-सहन से फक्कड़-बनवारी हूँ, हाँ, मैं बिहारी हूँ।
सर्व धर्म समभाव, न किसी धर्म से बिलगाव
छठ पूजा में सर्वस्व वारी हूँ, हाँ, मैं बिहारी हूँ।



राम जनम राय,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान निदेशक
लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ

उगते सूर्य को करते नमन सभी, डूबते सूर्य को भी नमन करूँ
ऐसा पुण्य पुजारी हूँ, हाँ, मैं बिहारी हूँ।
शेरो में शेरशाह, गुरुओं में कौटिल्य और आर्यभट्ट
डॉक्टर आनंद और खान-सर की तैयारी हूँ, हाँ, मैं बिहारी हूँ।

श्रद्धांजलि

बनारस के रहने वाले,
एक मित्र और सहपाठी।
हर हर महादेव! से करते अभिवादन,
थे वो, आनंद त्रिपाठी।
सेवा भाव में तत्पर हरदम,
बातें उनकी निराली।
हर दिल में बसने वाले,
थे वो, आनंद त्रिपाठी।
क्या छवि, क्या व्यक्तित्व,
अंदाज था उनका निराला।
थी बुलंद आवाज उनकी,
उसपे उनकी बिंदास कव्वाली।
गाते थे मदमस्त भाव से,
करते रचना निराली,
हर दिल में बसने वाले,
थे वो आनंद त्रिपाठी।



राम जनम राय,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान निदेशक
लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ

स्व. आनंद त्रिपाठी द्वारा रचित एक कविता जो उन्होंने कोरोना काल में फेसबुक पर साझा की थी।
हवा में कुछ हलचल है, थोड़े समझदार हो जाइए
तूफान आने का अंदेशा है, थोड़े खबरदार हो जाइए!
बुझ न जाए बेवक्त कहीं, जलते चिराग इन हवाओं से
इल्लिजा है सबसे यही कि, थोड़े होशियार हो जाइए।
हरने आई हैं ये बंद हवायें, चैन ओ सुकून जिंदगी का
सब कुछ छोड़ के पहले, खुद के पहरेदार हो जाइए!
उड़ने लगी रंगत देखो, इन कायनाती फिज़ाओं की
कैद कर के खुद को अब, घर में गुलजार हो जाइए
अजब है ये जंग जिंदगी की, जीत न सकेंगे दौड़ के
ठहर के अपने मुकाम पे, जीत के दावेदार हो जाइए।

एक प्यारे दोस्त “स्व. आनंद त्रिपाठी” को श्रद्धा सुमन।

जिंदगी

धीरे-धीरे पल-पल निकलती जा रही है जिंदगी ।
बहुत कुछ खोने के बाद अब कुछ-कुछ समझ में आ रही है जिंदगी ॥

कई बार सोचा कुछ लम्हों को कैद कर लूँ ।
मगर कर ना सका और रेत-सी फिसलती जा रही है जिंदगी ॥

सोचा था कि एक दिन मैं तकदीर बदल दूँगा ।
लेकिन मुझे मजबूर करके मेरी ही तकदीर बदलती जा रही है जिंदगी ॥

ख्वाहिशें तो मैंने कब की छोड़ रखी है ।
बस अब महज कुछ आशाओं में ही सिमटती जा रही है जिंदगी ॥

अब तो यह झूठी हँसी भी बेमानी लगती है ।
जैसे कि खुद-ब-खुद मुझ पर ही अब हँसती जा रही है जिंदगी ॥

दीपक कुमार तिवारी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(वित्त एवं संचार), दिल्ली,
शाखा कार्यालय लखनऊ



हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक
भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है ।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

चाहत

तू जो रूठेगी मुझसे, तो मना लूँगा मैं
तेरी हर अदा को, अपना बना लूँगा मैं ।
पास से न सही कभी, ख्वाब में ही मिलो
सच कहता हूँ कि सीने से, लगा लूँगा मैं ।
यही तमन्ना है सिमट जाओ, आगोश में मेरे
तेरी खुशबू अपनी साँसों में, बसा लूँगा मैं ।
काश! अबकी बार मुझे, तेरा दीदार हो जाये
काश मेरी तरह प्यार तुझे, बेशुमार हो जाये ।
मैंने चाहा है तुझको और चाहता ही रहूँगा
तेरी धड़कन को भी दिल में, बसा लूँगा मैं ।
ख्वाहिश है कि मेरे सिवा, कोई देखे न तुझे

जितेन्द्र कुमार गंगवार (जय)
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(वित्त एवं संचार), दिल्ली,
शाखा कार्यालय लखनऊ



सच कहता हूँ कि दुनिया से, छुपा लूँगा मैं ।
तू जो रूठेगी मुझसे, तो मना लूँगा मैं ।
तेरी हर अदा को 'जय', अपना बना लूँगा मैं ॥

प्रेरणा

प्रीति श्रीवास्तवा,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II), लखनऊ,
उत्तर प्रदेश



ये जीवन है एक मौसम
जो बदलता है हर दम
कभी सुख रुपी बहार
तो कभी दुःख रुपी पतझड़।

कभी रहे बहुत ही सुहावना
तो कभी आँधी - तूफान का आना
भयानक तूफान में भी,
नहीं डगमगाते हैं, पर्वत के पग
वह तो रहता है, हमेशा ही अड़िग।

जो कहता है.....
करो जीवन का हर स्पर्श
यदि सुखपूर्वक,
बितायें हैं कई वर्ष
तो दिखाओ दुःख में भी,
खुश रहकर।
बिताओ हर लम्हा,
हँस - हँसकर
यही कह रहा है, पर्वत का हृदय,
जिसमें है सिर्फ करुणा
जो दे रहा है बराबर,
यही एक प्रेरणा।

गज़ल

आशीष कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II), लखनऊ,
उत्तर प्रदेश



तरक्की की दौड़ में, हम जरा-सा पिछड़ क्या गए
अब दोस्त नहीं, ओहदों से मुलाकात होती है।
सुकूँ के पलों में जिनसे, तफरीह और बात होती थी,
अब मिलते हैं तो, नसीहत पे बात होती है।
वो दोस्त, जो कभी हमनिवाला हुआ करते थे,
अब हाल भी पूछे, तो रिवायत सी बात होती है।
कभी लगते थे ठहाके, बेवजह हर महफिल में,
अब मिलते हैं तो, जुबाँ पे सियासत की बात होती है।
गर तन्हाई में मिले, तो हाथ भी मिला लेते हैं,
महफिल में मिलें, तो उन्हें शर्म-सी महसूस होती है।
मिलें जो कभी तो कहते हैं “मिलते नहीं हो यार?”
मेरी कुर्सी तक आने में, तुमको भी तो हिचक होती है।
चाय, सुझा और जाम, क्या अभी भी तुमको याद है?
जहाँ ओहदे नहीं, बस दिलों से बात होती है।
जिन्हें देखा था, सपनों में साथ बढ़ते हुए,
वो आज भी हैं पास, पर दिलों की दूरी से तकलीफ होती है।

प्रहरी कैग

(राष्ट्रधर्म के रक्षक को समर्पित)

दीप और धर्म

जहाँ कहीं भी अंधकार छाया,
जहाँ नीति से पथ डगमगाया।
वहाँ उठा एक दीप प्रखर,
सच का नायक, धर्मसमर।

न लोभ का साथी, न भय से झुका,
जो भी रहा सत्य, उसी के सधा।
न्याय के मंदिर का यह द्वारपाल,
धन-धर्म का करता रखवाल।

कैग का कर्मपथ

न कंठ में वाणी, न ढोल नगाड़ा,
नहीं किसी सत्ता से नाता हमारा।
पर लेखनी से जो सत्य कहे,
वो शब्द बनें नीति के सच्चे सवेरे।
कैग का कर्म न साधारण है,
यह तो राष्ट्र की धड़कन है।
बही-खातों में जो भ्रांति छुपी,
उसे सघन दृष्टि से करे अर्पण शुद्धि।

गहन गणना का यज्ञ

यह यज्ञ है आँकड़ों का, न तप है कम,
हर रात्रि को निगलता, हर प्रहर में दम।
जाँच नहीं, यह राष्ट्र-धर्म का व्रत है,
हर रसीद, हर हस्ताक्षर की कसौटी एक श्रम है।
जहाँ व्यय हुआ, वहाँ प्रश्न उठा,
क्या था लाभ? कहाँ गया घटा?
कैग न देखे नाम, न चेहरा,
वो तो गिनती से गढ़े राष्ट्र का सेहरा।

प्रशांत कुमार श्रेष्ठ

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II), लखनऊ, उत्तर प्रदेश



सत्य की पुकार

सत्य ही लक्ष्य, यही आधार,
जन-जन की रक्षा, कैग की पुकार।
सत्ता के गलियारों में जो मौन सधे,
उस मौन को शब्दों में तेजस्वी करे।
हर व्यय, हर याचन, हर संकल्प,
हो परीक्षण से सिद्ध, हो शासन संप।
न हो अपव्यय, न हो अंधकार,
कैग की दृष्टि से हो जन का उद्धार।

ऑडिट रिपोर्ट का तेज

वो केवल दस्तावेज नहीं होता,
वो राष्ट्र का विवेक बन के रोता।
संसद के पटल पर जो गूँज उठे,
उसमें जनधन की पीड़ा सजीव दिखे।
प्रशासन झुके, योजनाएँ सुधरें,
दोष से हो प्रकाश की ऋचाएँ उभरें।
रिपोर्ट से जो परिवर्तन आए,
वो कल के भारत को उजियारा बनाए।

अडिग संकल्प

झुके न जहाँ साहस की लेखनी,
रुके न जहाँ विवेक की रेखनी।

सत्ता से भले ही मिले तिरस्कार,
पर सत्य के आगे न हो इंकार।
कैग का कार्य न केवल समीक्षा,
वह तो राष्ट्र की आत्मा की परीक्षा।
हर रिपोर्ट में जागता विवेक,
हर पृष्ठ बने जन-संवेदना की टेक।

यशगाथा

तो प्रण करो, हे कर्मयोगी वीर,
इस राष्ट्रधर्म से न हो कभी क्षीर।
जहाँ हो अनियम, वहाँ हो प्रकाश,
जहाँ हो भ्रम, वहाँ दो विश्वास।
कैग, तुम्हारी कलम अमर रहे,
हर काल में राष्ट्र को स्वर मिले।
हर व्यय में हो पारदर्शिता का रंग,
हर लेख में हो सत्य की तरंग।

समर्पण-पंक्तियाँ

जय हो उस लेखनी की,
जो अपराजेय बनी रहे,
जय हो उस प्रहरी की,
जो देशधर्म निभाए सहे।

दुनिया की भलाई की खातिर, सब तुमको गँवारा बापू था



सुखदेव प्रसाद बिस्मिल

दिनांक: 01 जनवरी, 1966

संकलनकर्ता: विजय श्रीवास्तव चरागे बिस्मिल
(पौत्र बिस्मिल इलाहाबादी), लेखापरीक्षक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II),
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

है कौन नहीं जिस पर रोशन, क्या क्या न हमारा बापू था,
दुनिया का उजाला बापू था, आकाश का तारा बापू था ।

हम जानते हैं, हम से पूछो क्या, हम को हमारा बापू था ।
जीवन का सहारा बापू था, तब मन धन सारा बापू था ।
दर्शन से न मेरी होती थी, पूरी न तमन्ना होती थी,
देखो तो कोई देखा ही करें, वह तेरा नजारा बापू था ।
दुनिया की बुराई भी सह ली, सीने पर गोली भी सह ली,
दुनिया की भलाई की खातिर, सब तुमको गँवारा बापू था ।
बहके तो यही आकर ठहरे, खोये तो यहीं आके मिले,
हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई के मिलने की धारा बापू था ।
आकाश हिला देने वाला, पाताल उठा देने वाला,
भूगोल जगा देने वाला था कौन, हमारा बापू था ।
जीवन की लीला एक तरफ, मरने का नाटक एक तरफ,
मालूम ये होता है जैसे सब खेल तुम्हारा बापू था ।
बिस्मिल ये जमाना कलयुग का, जो पाप करा ले वह चाहे
वरना गोली का निशाना क्या, बनने को हमारा बापू था ।

मेरी प्यारी हिन्दी



मोहित सेठ, लेखापरीक्षक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II), लखनऊ,
उत्तर प्रदेश

ये हिंदी की बिंदी है बड़ी निराली,
जिसे भारत ने अपने माथे पर है सजाली ।
रखना है इसे संभालकर, ये है हमारी धरोहर,
जब तक ये साथ होगा भारतीय साहित्य होगा प्रखर ॥
ये है बड़ी सरल, सुरीली है ये
दिनकर का प्यार, कामायनी जैसी साहित्य का संसार है ये,
भारत के जनमानस का प्रेमरूपी गोदान है ये,
पुष्प की अभिलाषा है, हरिवंश का मधुकलश है ये ॥
पर है हिंदी की एक छोटी-सी गिला
क्यों इसे वर्ष का सिर्फ एक दिन है मिला ?
क्यों हो गई है ये अपने ही देश में परायी ?
आज भी सम्पूर्ण भारत की राष्ट्रभाषा न बन पायी ॥
यशस्वी और ओजस्वी है हिंदी,
संस्कृत की लाडली है हिंदी
उर्दू की मौसी कहलाती है हिंदी
बड़ी प्यारी और सहज; हमारी मातृभाषा है हिंदी ॥
बना लो इसे अपने राष्ट्र का सम्मान,
निज भाषा में उन्नत हो पूरा हिंदुस्तान ।
आओ! हम सब मिलकर इसे जन-जन तक पहुँचाते हैं ।
राजभाषा हिन्दी को राष्ट्रभाषा में परिणत कराते हैं ॥

सपने

अनामिका गुप्ता

सुपुत्री श्री गोविंद लाल,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II), उत्तर प्रदेश
शाखा कार्यालय प्रयागराज



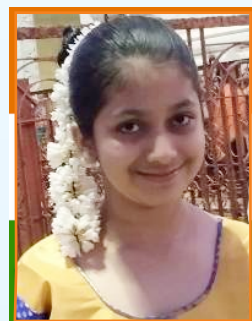
एक सुबह उठी, मुस्कुराते हुए
देखा था खुद को लोगों को समझाते हुए
कि होता है सपना लड़कियों का भी
होता है लक्ष्य उनका भी।
उन्हें पढ़ने दो, उन को जीने दो,
सपने पूरे करने दो उन्हें,
यूँ शादी के बंधन में, इतनी जल्दी मत बाँधो इन्हें
लोग समझ ही रहे थे उसकी इस बात को,
आखिर मानते भी क्यों नहीं
उनसे जिले की कलेक्टर जो कह रही थीं।
कि तब ही उसकी आँखें खुल गई-----वो खुश थी
ये सोचकर कि उसने सपने में वो देखा जो वो करना चाहती हैं,
खुद को सपने में कलेक्टर बना देख, उसको उसका लक्ष्य सामने
जो दिख रहा था
वो अपने आप में ही बात कर रही होती हैं कि तभी घर वाले आये
कमरे में,
माँ बोली बेटा ये ले तेरी शादी का जोड़ा, तैयार हो जा, आज शादी
है तेरी।
वो बिल्कुल हैरान परेशान सी हो गयी, समझ नहीं आया क्या करें
वो बोली माँ अभी कुछ ही दिन पहले मैं अठारह की ही हुई हूँ,
अभी तो मुझे पढ़ना है, देश के लिए कुछ करना है।
माँ बोली बेटा देश के लिए बाद में करना अभी ससुराल की
जिम्मेदारी निभा...।
बेटी बोली माँ मेरे सपने हैं कुछ....।
माँ ने जवाब दिया सपने कब अपने होते हैं बेटा,
जिनसे रिश्ता जुड़ रहा है, बस वहीं तेरे अपने हैं अब
लाख समझाया कोई ना माना शाम को खुद को उसने,
शादी के मंडप में पाया।

खुद को जिले का कलेक्टर बनने का सपना देखने वाली,
आज किसी की पत्नी और बहू बन चुकी थी।
वो समझ गई थी कि, आखिर सपने ही होते हैं वो
जो आँख खुलते ही टूट जाते हैं.....।
इतना आसान नहीं उन को पूरा कर पाना,
आसान है एक बार तो दुनिया से लड़ना,
पर जो आपकी दुनिया हो
आसान नहीं उन से लड़ पाना।

गुरु

समृद्धि कानोडिया

सुपुत्री श्री प्रवीन कानोडिया,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II), लखनऊ, उत्तर प्रदेश



कोरे कागज को अखबार बनाता है,
गुरु को जिंदगी का हर हिसाब आता है।

रंग-बिरंगे फूलों से वो
जीवन को एक सुंदर बाग बनाता है,
वही तो है जो तारों को भी रोशनी देकर
खुद सूरज बनकर जगमगाता है।

नटखट शैतान बच्चों की,
लाख शैतानियाँ सहता है,
फिर भी गुरु धैर्यवान रहता है।

ज्ञान की एक-एक बूँद से
सींचता है वो अपनी फसल,
तभी तो शिष्य कभी अर्जुन,
कभी राम बनकर परचम लहराता है।

जिस देश को अपनी भाषा और अपने साहित्य के गौरव का
अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।

देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

राजभाषा संबंधी प्रमुख प्रावधान

संविधान के लागू होने के साथ ही 26 जनवरी, 1950 से संविधान की धारा 343 के अनुसार हिंदी भारत संघ की राजभाषा बनी। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह उल्लिखित है कि भारत सरकार का यह कर्तव्य है कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए और उसका विकास करे ताकि हिंदी भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। तत्पश्चात् राष्ट्रपति जी ने सन् 1952 तथा 1955 और 27 अप्रैल, 1960 को राजभाषा हिंदी से सम्बंधित विस्तृत आदेश जारी किए। तदुपरांत संविधान में प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए राजभाषा अधिनियम, 1963 (यथासंशोधित, 1967) तथा राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 8 की शक्तियों का प्रयोग कर राजभाषा नियम, 1976 (यथासंशोधित, 1987) बना। राजभाषा अधिनियम एवं नियम से सम्बंधित कुछ महत्वपूर्ण नियमों की जानकारी निम्नलिखित है-

राजभाषा अधिनियम धारा, 1963 (यथासंशोधित, 1967) की धारा 3 (3) के अंतर्गत जारी किये जाने वाले कागजात

निम्नलिखित दस्तावेज आदि हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी किए जायें- संकल्प, साधारण आदेश, नियम, अधिसूचनायें, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन या प्रेस विज्ञप्ति, संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे गए प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदन और राजकीय कागज पत्र, संविदाओं और करारों का निष्पादन, अनुज्ञप्ति, अनुज्ञा पत्र और निविदा के लिए नोटिस और प्रारूप।

राजभाषा नियम, 1976 (यथासंशोधित, 1987, 2007, 2011) के प्रमुख नियम

नियम 5- हिन्दी में प्राप्त पत्रादि का उत्तर हिन्दी: हिंदी में पत्र आदि का उत्तर चाहे वे किसी भाषा क्षेत्र से प्राप्त हों और किसी भी राज्य सरकार, व्यक्ति या केंद्रीय सरकार के कार्यालय से हिंदी में दिया जाए।

नियम 6- हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग: अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाए एवं ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसी दस्तावेजों हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही में तैयार की जाती हैं, निष्पादित की जाती हैं और जारी की जाती हैं।

नियम 7- आवेदन, अभ्यावेदन आदि का उत्तर: कोई कर्मचारी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी या अंग्रेजी में कर सकता है।

यदि कोई कर्मचारी अपना आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी में करता है या उस पर हिन्दी में हस्ताक्षर करता है तो उसका उत्तर हिन्दी में दिया जाए।

नियम 7(3) सेवा संबंधी आदेश या सूचना: यदि कोई कर्मचारी यह चाहता है कि सेवा संबंधी विषयों (जिनके अन्तर्गत अनुशासनिक कार्रवाई भी है) से संबंधित कोई आदेश या सूचना, जिसको कर्मचारी पर तामील किया जाना अपेक्षित है, हिन्दी या अंग्रेजी में होना चाहिए, तो वह उसे किसी विलम्ब के बिना उसी भाषा में दिया जाए।

नियम 8- नियम बनाने की शक्ति

1. केन्द्रीय सरकार इस अधिनियम के प्रयोजनों को कार्यान्वित करने के लिए नियम, शासकीय राजपत्र में अधिसूचना द्वारा, बना सकेगी।
2. इस धारा के अधीन बनाया गया हर नियम, बनाए जाने के पश्चात्प्राथम्य, संसद के हर एक सदन के समक्ष, जब वह सत्र में हो, कुल तीस दिन की अवधि के लिए रखा जाएगा। वह अवधि एक सत्र में, अथवा दो या अधिक आनुक्रमिक सत्रों में पूरी हो सकेगी। यदि उस सत्र के या पूर्वोक्त आनुक्रमिक सत्रों के ठीक बाद के सत्र के अवसान के पूर्व दोनों सदन उस नियम में कोई परिवर्तन करने के लिए सहमत हो जाएं तो तत्पश्चात् वह ऐसे परिवर्तित रूप में ही प्रभावी होगा। यदि उक्त अवसान के पूर्व दोनों सदन सहमत हो जाएं कि वह नियम नहीं बनाया जाना चाहिए तो तत्पश्चात् यह निष्प्रभावी हो जाएगा। किन्तु नियम के ऐसे परिवर्तित या निष्प्रभावी होने से उसके अधीन पहले की गई किसी बात की विधिमान्यता पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा।

नियम 9- हिन्दी में प्रवीणता- यदि किसी कर्मचारी ने-

1. मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिन्दी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है; या
2. स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा की समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिन्दी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया हो; या
3. यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्रारूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है।

नियम 10- हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान-

1. क. यदि किसी कर्मचारी ने मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर परीक्षा हिन्दी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है; या
 - ख. केन्द्रीय सरकार की हिन्दी शिक्षण योजना के अन्तर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या यदि उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के सम्बन्ध में उस योजना के अन्तर्गत कोई निम्नतर परीक्षा विनिर्दिष्ट है, वह परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या
 - ग. केन्द्रीय सरकार द्वारा उस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या
 - घ. यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।
2. यदि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों में से अस्सी प्रतिशत ने हिन्दी का ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उस कार्यालय के कर्मचारियों के बारे में सामान्यतया यह समझा जाएगा कि उन्होंने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।
 3. केन्द्रीय सरकार या केन्द्रीय सरकार द्वारा इस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अधिकारी यह अवधारित कर सकता है कि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय के कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है या नहीं।
 4. केन्द्रीय सरकार के जिन कार्यालयों में कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार की राय है कि किसी अधिसूचित कार्यालय में काम करने वाले और हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों का प्रतिशत किसी तारीख में से उपनियम (2) में विनिर्दिष्ट प्रतिशत से कम हो गया है, तो वह राजपत्र में अधिसूचना द्वारा घोषित कर सकती है कि उक्त कार्यालय उस तारीख से अधिसूचित कार्यालय नहीं रह जाएगा।

नियम 10 (4) एवं 8 (4)-

केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों को जिनमें कार्य करने वाले

कर्मचारियों में से 80 प्रतिशत ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है और जो राजभाषा नियम 10 (4) के अधीन अधिसूचित किए जा चुके हैं, विनिर्दिष्ट कर सकती है कि उनमें ऐसे कर्मचारियों द्वारा जिन्हें हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है, राजभाषा नियम, 1976 के नियम 8(4) के अंतर्गत टिप्पण, प्रारूपण और ऐसे अन्य शासकीय प्रयोजनों के लिए, जो आदेश में विनिर्दिष्ट किए जाएं केवल हिन्दी का प्रयोग किया जाएगा।

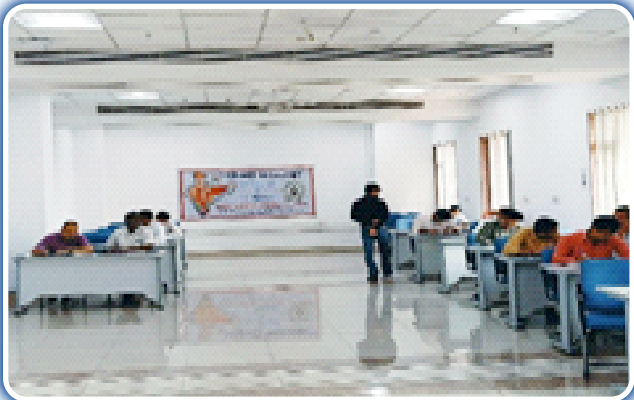
नियम 11- मैनुअल, संहिताएं, प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, लेखन सामग्री आदि-

1. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा।
2. केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्ट्रों के प्ररूप और शीर्षक हिन्दी और अंग्रेजी में होंगे।
3. केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मर्दे हिन्दी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी, मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार ऐसा करना आवश्यक समझती है तो वह, साधारण या विशेष आदेश द्वारा, केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय को इस नियम के सभी या किन्हीं उपबन्धों से छूट दे सकती है।

नियम 12- अनुपालन का उत्तरदायित्व-

1. केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह -
 - क. यह सुनिश्चित करे कि अधिनियम और इन नियमों के उपबन्धों और उपनियम (2) के अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित रूप से अनुपालन हो रहा है और
 - ख. इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच के लिए उपाय करे।
2. केन्द्रीय सरकार अधिनियम और इन नियमों के उपबन्धों के सम्यक अनुपालन के लिए अपने कर्मचारियों और कार्यालयों को समय-समय पर आवश्यक निदेश जारी कर सकती है।

हिन्दी पखवाड़े 2024 की झलकियाँ



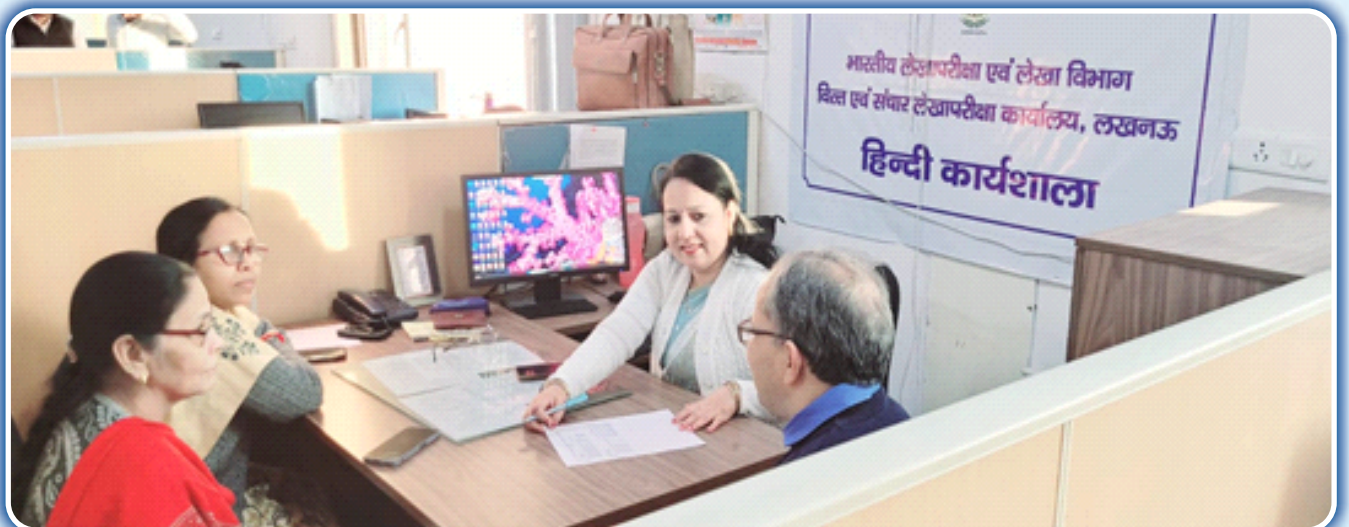
ऑडिट दिवस 2024 की झलकियाँ



गणतंत्र दिवस 2025 की झलकियाँ



हिन्दी कार्यशाला की झलकियाँ



स्वतंत्रता दिवस 2025 के आयोजन की झलकियाँ



माननीय प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा स्वतंत्रता दिवस 2025 के अवसर पर
सहायी कार्य करने वाले कार्मिकों को पुरस्कृत करने की झलकियाँ





हिन्दी प्रेम की भाषा है, राष्ट्रीय एकता की भाषा है और आजादी की भाषा है।

जमनालाल बजाज





SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-द्वितीय)
उत्तर प्रदेश, लखनऊ